हिन्दी-रचना-प्रबोध

परिवर्द्धित और सशोधित

युक्त-प्रदेशीय High School Examination

तथा

प्रयाग-यूनिवर्सिटी की Inter F O L और हिन्दी रत्न
काशी हिन्दू-विद्यालय की प्रवेशिका (Admission)
यू० पी० डिपार्टमेण्टल एडवांस हिन्दी परीक्षा और
वर्नाक्यूलर फाइनल के टीचर्स व पटना-यूनिवर्सिटी
की Matriculation और हिन्दी
साहित्य-सम्मेलन की प्रथमा
परीक्षा के लिये

पाठ्य पुस्तक



रत्नाश्रम, आगरा

...रण] सम्वत् १९८६ वि० [मू० सजिल्द १)

...शर्मा विशारद रत्नाश्रम फाइन आर्ट्स प्रिंटिंग वर्क्स, आगरा

विषय-सूची

पहला अध्याय

द्वितीय अध्याय

वाक्य-विचार

तृतीय अध्याय

वाक्य-रचना का अभ्यास

चतुर्थ अध्याय

रचना के लिये ज्ञातव्य बातें (१)

रचना के लिये ज्ञातव्य बात (२)

पञ्चम अध्याय

पत्र लेखन—

षष्ठम अध्याय

प्रबन्ध रचना का प्रारंभिक अभ्यास

सातवा अध्याय

प्रबन्ध रचना का अभ्यास

हिन्दी-रचना-प्रबोध

प्रथम अध्याय

हिन्दी-भाषा और उसका शब्द-भण्डार

भाषा

भाषा बन्धन है। समाज विशेष को एक सूत्र में बाँधने का साधन है। एक ही भाषा बोलने वाला समाज विशेष एक जाति है। अपनी ही जाति के व्यक्ति अपनी भाषा द्वारा अपना भाव आपस में एक दूसरे को समझाते हैं और दूसरों का समझते है। इस प्रकार अनेक मानव-समाजों की अनेक भाषाएँ हैं। भाषा-भेद से समाज-भेद है, जाति भेद है।

भाषाओं का आदि स्रोत

परन्तु जब इन भिन्न भिन्न भाषाओं का सूक्ष्म विश्लेषण करते हैं तो प्रत्येक भाषा के मुख्य मुख्य व्यवहारिक शब्दों में एक अजीब समता पाई जाती है। भाषा विज्ञानियों ने बड़े परिश्रम से खोजबीन करके निश्चित किया है कि संसार की सारी भाषाएँ तीन भागों में बाँटी जा सकती हैं —

आर्य्य-भाषाएँ—इस भाग में संस्कृत, प्राकृत और उससे निकली हुई हिन्दी, बँगला, मराठी, गुजराती आदि प्रचलित आर्य्य भाषाएँ तथा अङ्गरेजी फारसी, यूनानी, लैटिन आदि हैं।

शामी भाषाएँ—इब्रानी, हबशी और अरबी आदि है।

तूरानी-भाषाएँ—मुगली चीनी, जापानी, तुर्की और दक्षिण भारतीय भाषाएँ हैं।

आर्य-भाषाओं की शब्द-समता

संस्कृत	मीडी	फ़ारसी	यूनानी	लैटिन	अँगरेजी	हिन्दी
पितृ	पतर	पिदर	पाटेर	पेटर	फादर	पिता
दुहितृ	दुग्धर	दुख़्तर	थिगाटेर	०	डाटर	धी
मातृ	मतर	मादर	माटेर	मेटर	मदर	माता
भ्रातृ	भ्रतर	बिरादर	फ्राटेर	फ्रटेर	ब्रदर	भाई
नाम	नाम	नाम	ओनोमा	नामन	नेम	नाम
अस्मि	अह्मि	अस	ऐमी	एम	ऐम	हूँ
ददामि	दधामि	दिहम	डिडोमा	डो	०	देऊँ

इस प्रकार के हजारों शब्द हैं जो सिद्ध करते हैं कि इन भाषाओं के क्रम विकास के मूल में एक ऐसी भाषा अवश्य है जिसमें इन सब का सामान्य सम्बन्ध है। सम्भव है वैदिक संस्कृत इन सब का उद्गम हो, या उससे भी परे कोई ऐसी भाषा हो जिससे इन सब का जन्म हुआ हो। इस विषय में यह निश्चित अनुमान होता है कि प्रारम्भ में आर्य्य-लोग अपने आदिम स्थान से चारों ओर गये और साथ ही अपनी भाषाओं को ले गये। पश्चिम में ग्रीक, लैटिन, अँगरेजी आदि भाषाओं की नींव पडी। फारस में मीडी द्वारा फ़ारसी, और भारत में संस्कृत का प्रचार हुआ। योरोपीय विद्वानों का मत है कि आदिम-स्थान हिन्दूकुश के पार मध्य एशिया है, और भारतीय अनेक विद्वानों का विचार है कि आदिम-स्थान काश्मीर या उसका

उत्तरीय प्रदेश है, यहीं से आर्य्य लोग चारों ओर गये और अपनी सभ्यता तथा भाषा का प्रचार किया।

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति

हिन्दी भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विद्वानों की भिन्न भिन्न सम्मतियाँ हैं, किन्तु इसमें सब का एक ही मत है कि हिन्दी की मुख्य जननी प्राकृत भाषाएं है। भेद इस बात में है कि इन परम्परागत प्राकृतों की मुख्य जननी कौनसी भाषा है। कुछ लोगों का विचार है कि वैदिक भाषा या पुरानी संस्कृत धीरे धीरे प्राकृत के रूप में बदलने लगी, अर्थात् आर्य लोग जब अपने आदिम-स्थान से दक्षिण पूर्व भारत की ओर बढने लगे तो यहाँ अनार्य लोगों की भाषा का उसमें सम्मिश्रण हुआ। वही प्राकृत भाषा कहलाई। प्राकृत के भी कई भेद थे। उन्हीं में से एक का संस्कार करके उसे परिमार्जित किया। वही परिमार्जित भाषा संस्कृत हुई। किन्तु प्राकृत निरन्तर बदलती हुई आगे बढती गई, जिससे पाली आदि अन्य प्राकृतों का जन्म हुआ। इन बहुत सी प्राकृतों का भी अपभ्रंश हुआ। इन्हीं अपभ्रंशों से प्राचीन हिन्दी का जन्म हुआ।

अनेक विद्वानों का मत है कि वैदिक संस्कृत से प्रौढकालीन साहित्यिक संस्कृत का विकास हुआ। उसी साहित्यिक संस्कृत से प्राकृतों का क्रम विकास हुआ। कतिपय विद्वान् यह भी कहते हैं कि एक ओर वैदिक भाषा से साहित्यिक संस्कृत, दूसरी ओर आर्ष प्राकृत का जन्म हुआ और दोनों का प्रवाह फिर एक हो गया, जिससे अनेक प्राकृतों की जननी पाली नामक प्राकृत पैदा हुई, उससे मागधी, शौरसेनी, महाराष्ट्री आदि प्राकृतें बनीं। शौरसेनी और मागधी के बीच में अर्द्ध मागधी नामक प्राकृत का जन्म हुआ।

इन सब प्राकृतों से अपभ्रंश भाषाएँ बनीं। शौरसेनी मध्य-प्रदेश (ब्रजमण्डल) मागधी बिहार, अर्द्ध मागधी दोनों के बीच में बोली जाती थी। आवन्ती अवन्तिका (उज्जैन) की भाषा थी। इनसे जन्मी हुई अपभ्रंश गुजरात से लेकर बिहार तक व्यापक हो गई। अपभ्रंश के तीन भेद थे नागर, उपनागर और ब्राचड। सब में मुख्य शौरसेनी प्राकृत की नागर नामक अपभ्रंश भाषा (जो मध्य प्रदेश में बोली जाती थी) सारे उत्तरी भारत की साहित्यिक भाषा होगई। यही शौरसेनी अपभ्रंश हमारी हिन्दी का मूल स्रोत है। कुछ लोग इसे पुरानी हिन्दी भी कहते हैं, जिसकी झलक चन्दवरदायी के रासों में मिलती है।

अनेक लोगों का मत है कि प्राकृत स्वयं मूल भाषा है, उसी से अन्य प्राकृतों का जन्म हुआ; किन्तु यह मत अधिक युक्ति-युक्त नहीं। नीचे लिखी शब्द-तालिकाओं से पता चल जायगा कि हमारी भाषा के अधिकांश शब्द (मुख्य मुख्य व्यावहारिक शब्द) संस्कृत के हैं, जो प्राकृत बनते हुए हिन्दी में आये हैं —

(१)

संस्कृत	पुरानी प्राकृत	पाली	प्राकृत	हिन्दी
अग्नि	अग्गि	अग्गि	अग्गी	आग
बुद्धि	बुद्धि	बुद्धि	बुद्धी	बुद्धि
षोडस	सोलस	सोलस	सोलह	सोलह
विंशति	वीसा	वीसति, वीसम्	वीसा	वीस
दधि	दहि, दहिम्	दधि	दहि दहिम्	दही

(२)

संस्कृत	प्राकृत	हिन्दी
हसति	हसइ	हँसै हँसे
कम्पते	कपइ	कँपइ कँपै काँपे
युध्यते	जुज्झइ	जूझै जूझै

संस्कृत	प्राकृत	हिन्दी
रक्षित	रक्खइ	राखे, रक्खे
कर्म	कम्म	काम
कातर	काहल	काहिल
अन्तःपुर	अन्तेउर	अन्दर
अद्य	अज्ज	आज
भगिनी	बहिणी	बहिन
दुहिता	धिया	धी
वृक्ष	रुक्खो	रूख
प्रभूत	बहुत्त	बहुत
विद्युत्	विज्जु	बिजली
शय्या	सेजा	सेज
तैलम्	तेल्ल	तेल
कृष्ण	कन्ह	कान्हा
पितृगृह	पियघर	पीहर
शिथिल	सढिल	ढीला
एकादश	एहारह	ग्यारह
खदिर	खइर	खैर
स्तंभ	थम्म	थाम या खम्भ
हस्त	हत्थ	हाथ

संस्कृत	पाली	हिन्दी
गम्भीरम्	गहिरम्	गहिरा
अहम्	अम्हि	हम, मैं
त्वम्	तुम्ह	तुम, तू
वातुलत्	वाउलो	बावला
उपाध्याय	उपज्झाओ	ओझा
मृत्तिका	मट्टिआ	मट्टी
घृतम्	घियम्	घी

इन उदाहरणों से यह सिद्ध हो जाता है कि संस्कृत प्राकृत और हिन्दी शब्दों का कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है, साथ ही इस मत का खण्डन हो जाता है कि प्राकृत मूल भाषा है। प्राकृतों के शब्द-भण्डार का ही नहीं, व्याकरण का भी अनुशीलन करने से स्पष्ट हो जाता है कि इनको संस्कृत जननी है और प्राकृतों से हिन्दी का जन्म हुआ है। अत परम्परागत सम्बन्ध तो है ही, पर बहुत से ऐसे शब्द हैं जो सीधे संस्कृत से हिन्दी में आये हैं और आज तक उनका वही रूप प्रचलित है, जैसे —

तन, मन, धन, जन, शूर, वर्षा, समुद्र, बसन्त, साधु, सन्त, दिन, काम, रात्रि, राजा, कवि, आदि।

हिन्दी भाषा का विकास

८ वीं शताब्दी से लेकर १२ वी शताब्दी तक अपभ्रंशों का समय है। इसी समय में हिन्दी भाषा का अकुर जमा है। सन्धि काल की भाषा का कोई ग्रन्थ प्राप्त नहीं है। पहिले पहल इसकी झलक चन्द के पृथ्वीराज रासो में मिलती है। बहुत लोगों का अनुमान है, रासो उस अपभ्रंश की हिन्दी में है जो आगे चलकर राजपूताने की भाषा बनी है।" अब भी रासो के प्रयोग राजपूताने में प्रचलित है। राजपूताने की कविता की भाषा डिंगल है। कुछ लोग डिंगल-भाषा का ही इसे आदि ग्रन्थ मानते है। ऐसा मानने पर भी सन्धिकाल की हिन्दी का बहुत कुछ पता इस ग्रन्थ से मिलता है। आदि में भाषा बहुत कुछ परिष्कृत होकर साहित्य निर्माण के योग्य बनती है। विशेष कर पद्य की भाषा बनने म तो और भी समय लगता है। रासो के साथ ही बुन्देलखण्ड में जगनिक कवि ने आल्हा नामक ग्रन्थ लिखा, किन्तु असली ग्रन्थ का पता नहीं चलता। प्रान्तीय-कवियों ने पीछे से यह ग्रन्थ अपनी

अपनी भाषा में कर लिया। इसके पीछे पद्य का पूर्ण विकास हुआ। यद्यपि खुसरो ने खड़ी बोली में कुछ रचनाएँ कीं, जायसी ने अवधी में पद्मावत लिखा, तुलसीदास ने बैसवाड़ी में रामायण आदि ग्रन्थ रचे, तथापि वैष्णव कवियों के प्रभाव से व्रजभाषा का पूर्ण साम्राज्य हो गया। प्राय उत्तरी भारत में काव्य की यह प्रधान भाषा बन गई। समाज में नयी धारणा, नयी शिक्षा और नये विचारों से नया उत्साह हुआ और कविता भी बोलचाल की भाषा में होने लगी। परन्तु आज भी अवधी, बिहारी, पंजाबी, मराठी आदि भाषाओं में कुछ प्रान्तीय कवि रचना करते हैं और करते आये हैं, किन्तु व्रजभाषा का साम्राज्य एकदम उठ नहीं गया है। बिहार, अवध, व्रजमण्डल, राजपूताने आदि में अब भी अनेक कवियों की कविता का माध्यम व्रजभाषा है। धीरे धीरे खड़ी बोली के पद्यों का प्रचार बढ रहा है। जमाने की रफ्तार से आये हुए नये भावों का बोल चाल की भाषा में व्यक्त करने में अधिक सहूलियत है। यह तो रही पद्य की बात गद्य का १३ वीं शताब्दी से पहले कोई पता नहीं चलता। मारवाड़ की कुछ सनदों में वहाँ की भाषा के नमूने मिलते हैं। १५ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में बाबा गोरखनाथ जी की व्रजभाषा रचना मिलती है। १७ वीं शताब्दी में गोस्वामी विट्ठलनाथ, गंगभाट, गो० गोकुलनाथ, महात्मा नाभादास तथा जटमल आदि ने गद्य रचनाएँ की है। अधिकांश इन लोगों ने व्रजभाषा गद्य में ही लिखी। हाँ गंगभाट और जटमल ने व्रजभाषा गद्य में खड़ी बोली का पुट दिया। १८ वीं सदी में देव, सूरति मिश्र, दास और ललितकिशोरी आदि ने भी व्रजभाषा के गद्य ही में रचना की। इसके बाद १९ वीं शताब्दी के मध्य में खड़ी बोली का उदय हुआ।

यद्यपि लल्लूलाल जी से पहले कुछ गद्य लेखकों का पता चलता है तथापि सर्वसाधारण में प्रकाश पहुँचाने वाली उनकी कोई रचना सामने नहीं आई। लल्लूलाल को ही यह श्रेय मिला। उन्होंने १८६० में प्रेमसागर आगरे की बोली में लिखा। उन्हीं के समकालीन सदल मिश्र हुए। ब्रजभाषा से खड़ी बोली पृथक् हो रही है, लल्लूलाल की रचना में इसका चित्र स्पष्ट दिखाई देता है। उन्होंने राजनीति आदि पुस्तकें शुद्ध ब्रजभाषा गद्य में भी लिखी हैं। इसके बाद राजा शिवप्रसाद की खड़ी बोली में अरबी फारसी के विशेष शब्दों का प्रयोग हुआ। परन्तु राजा लक्ष्मणसिंह की विशुद्ध हिन्दी भाषा में एक भी अरबी, फारसी का शब्द नहीं है। राजा लक्ष्मणसिंह की शकुन्तला का गद्य शुद्ध आगरे की खड़ी बोली में है। इसके बाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी को परिष्कृत किया। संस्कृत के अनेक शब्द इनकी भाषा में मिल गये, जिससे भाषा की व्यञ्जकशक्ति बहुत बढ़ गई। आधुनिक हिन्दी की उन्नति का पूर्ण श्रेय हरिश्चन्द्र ही को है। बालकृष्णभट्ट, अम्बिकादत्त व्यास, प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुन्दगुप्त तथा महावीरप्रसाद द्विवेदी आदि अनेक महानुभावों की रचनाओं से हिन्दी गद्य का कलेवर पुष्ट हुआ। पश्चात् सैकड़ों गण्यमान्य लेखकों की लेखनी से भाषा की वृद्धि हुई और हो रही है। अनेक अनुवादक प्रान्तीय तथा विदेशी भाषा के उत्कृष्ट ग्रन्थों का अनुवाद करके उसमें नये नये मुहाविरे और प्रयोगों की वृद्धि कर रहे हैं। आये दिन हिन्दी को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाने का प्रयत्न भाषा की पूर्ण श्री-वृद्धि करेगा ऐसा विश्वास है।

हिन्दी की व्यापकता

यह तो निश्चय हो चुका है कि उर्दू हिन्दी ही की एक

शाखा है, और मराठी, गुजराती तथा बंगाली आदि हिन्दी की बहिनें हैं।

बंगाली उसी मागधी के अपभ्रंश की प्रतिच्छाया है, जिससे बिहारी हिन्दी की कुछ उप भाषायें निकली हैं। विद्यापति की रचनायें हिन्दी और बंगला का सम्बन्ध दिखाती हैं। पुरानी गुजराती तो पुरानी हिन्दी से बहुत मिलती जुलती है गुजराती की पुरानी कविता, ब्रजभाषा की कविता से टक्कर खाती है। गुजराती पर पारसी भाषा का जो प्रभाव पड़ा है, उससे उसके रूप में कुछ विशेष परिवर्त्तन हुआ है।

हिन्दी मराठी, गुजराती और बंगला का अधिकांश शब्द-भण्डार प्राकृतों और संस्कृत से भिन्न भिन्न प्रवाहों द्वारा आया है।

अपने ही क्षेत्र में हिन्दी भी भिन्न भिन्न रूपों में बटी हुई है। बिहार में मैथिल, भोजपुरी, मगही आदि मागधी से उत्पन्न हुई हैं। यह व्यापक हिन्दी का एक भेद ही है। यद्यपि इनकी उत्पत्ति के साथ उड़िया और बंगला का नाम लिया जाता है, क्योंकि यह भी मागधी के अपभ्रंश से बनी है। इधर पुराने मध्य प्रदेश (ब्रजमण्डल) और उसके आस पास में ब्रजभाषा और उससे मिलती जुलती बुंदेली, बघेली, कन्नोजी आदि भाषायें हैं जो धीरे धीरे सामान्य हिन्दी में बदल रही हैं। पंजाबी भाषा को कुछ लोग स्वतंत्र भाषा मानते हैं, परन्तु वह पश्चिमी हिन्दी से बहुत सम्बन्ध रखती है। हरियानी जो हिसार करनाल और रोहतक में बोली जाती है पंजाबी, मारवाड़ी और पश्चिमी हिन्दी का समिश्रण है। मारवाड़ी भाषा भी हिन्दी का एक उपभेद है। ये सब प्रान्तिक हिन्दी भाषाएँ—अपने अपने प्रान्त में बोली जाती हैं—सामान्य

हिन्दी का एक भेद है जो दिल्ली और मेरठ तथा उसके आस पास बोली जाती है। आगरे की भाषा भी शुद्ध हिन्दी है, जिसमें पहिले पहल लल्लूलाल ने प्रेमसागर लिखा था। आगरे की शुद्ध बोली का ठीक रूप राजा लक्ष्मणसिंह कृत अभिज्ञान शकुन्तला नाटक के गद्य में है। यही दिन प्रति दिन बढ़ती हुई शुद्ध और परिमार्जित हिन्दी है, जिसे खड़ी बोली भी कहते हैं। साहित्यिक और शिक्षा की भाषा तो समस्त उत्तरी भारत की हो गई है, पर मेरठ, दिल्ली, आगरा आदि की ही भाँति अनेक उत्तर भारतीय नगरों की बोलचाल की भाषा बन रही है।

साधारणतया इस सामान्य हिन्दी के तीन भेद हैं —

१—विशुद्ध हिन्दी—जिसमें अधिकतर संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रयोग होता है।

२—उर्दू—जिसमें संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्दों का स्थान अरबी फारसी के शब्दों ने ले लिया है। असल में यह हिन्दी का ही एक भेद है, जिसे फारसी अक्षरों में लिखते हैं।

३—हिन्दोस्तानी—जिसमें बोलचाल के साधारण शब्दों का अधिक प्रयोग होता है, यह हिन्दी उर्दू के बीच का रूप है।

हिन्दी का शब्द-भंडार

प्राचीन काल से ही हमारी भाषा का कोई विशेष नाम न होकर उसे केवल भाषा ही कहते हैं। वैदिक और साहित्यिक संस्कृत में भी भाषा ही का प्रयोग है। हिन्दी का भी पुराना नाम भाषा ही है। तुलसीदास जी ने अपने काव्य में भाषा ही शब्द लिखा है :—

"भाषा बद्ध करब मैं सोई"

"का भाषा का संस्कृत प्रेम चाहिये साँच"

"भाषा जे हरि चरित बखाने"

एक पुराना श्लोक है —

संस्कृत प्राकृत चैव सूरसैन च मागधम् ।
पारसीकमपभ्रंशम् भाषाया लक्षणानि षट् ॥

अर्थात् हिन्दी भाषा वह है जिसमें संस्कृत, प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, अपभ्रंश और फ़ारसी शब्द मिले हों।

कविवर भिखारीदास जी ने कहा है —

'ब्रजभाषा भाषा रुचिर कहैं सुमति सब कोय ।
मिले संस्कृत पारस्यो पै अति सुगम जु होय ॥"

अर्थात् हमारी हिन्दी का जो शब्द-समुदाय है उसमें संस्कृत आदि देशीय भाषाओं के साथ फारसी, अरबी आदि विदेशी भाषाओं के शब्द भी मिले हुए हैं।

कविवर भिखारीदास जी ने संस्कृत पारसी दो नाम गिनाये हैं। दासजी का अर्थ लक्षणापूर्ण है। उन्होंने संस्कृत से संस्कृतादि प्राकृत भाषाएँ ली हैं। और पारसी से पारसी, अरबी आदि भाषाएँ ली हैं। किसी कवि ने कहा है —

'तुलसी गंग दोऊ भये सुकविन के सरदार ।
जिनकी काव्यन में मिली भाषा विविध प्रकार ॥"

आज कल इस विविध की संख्या और भी बढ़ गई है। इसमें अंगरेजी, पोर्तगीज आदि के शब्द भी मिल गये हैं। इस प्रकार —

१—संस्कृत के शब्द
२—प्राकृत के शब्द

३—अरबी के शब्द

४— फारसी के शब्द

५—अँगरेजी आदि यूरोपियन भाषाओं के शब्द

६—प्रान्तीय भाषाओं के शब्द

७—देशज शब्द (जो न संस्कृत से उत्पन्न हुए न किसी दूसरी भाषाओं से) जिसमें अनुकरण वाचक शब्द भी सम्मिलित हैं।

संस्कृतादि से उसी रूप में आने वाले शब्द तत्सम कहाते हैं, जैसे—हृदय, अग्नि, आकाश।

संस्कृत से विकृत होते हुए प्राकृत के शब्द तद्भव कहाते हैं, जैसे—काम, (कार्य), हाथ, (हस्त), घर, (गृह)।

अरबी-फारसी के शब्द भी तत्सम और तद्भव दोनों रूप में आते हैं, जैसे :—

तत्सम—गाफिल, मजदूर, बाजार, फिहरिस्त, नकल, दारोगा।

तद्भव—मजदूर, बजार, फैरिस्त, नकल, दरोगा आदि।

अँगरेजी आदि के भी दोनों प्रकार के शब्द काम में आते हैं।

तत्सम—फिटन, रेल, होल्डर, टेबुल, चेयर।

तद्भव—कलस्टर, लालटेन, अजन, लकलाट।

प्रान्तीय भाषाओं के शब्द —

मराठी—लागू, चालू बाड़ा आदि।

बङ्गला—उपन्यास, अनुसधान, अध्यवसाय, अनूदित, गल्प, अनुशीलन आदि।

अनुकरण वाचक—जो किसी पक्षी की स्वाभाविक क्रिया प्रकृति की किसी स्वाभाविक हरकत अथवा किसी पदार्थ की ध्वनि का अनुकरण हो जैसे—फरफर, पटापट, चटपट, फॉंफॉं आदि ।

अभ्यास

१—भाषा और समाज में क्या सम्बन्ध है ?
२—कैसे सिद्ध होता है कि प्रारम्भ में भाषाओं के बहुत थोड़े भेद थे ?
३—आर्य भाषाएँ कौन कौन हैं ? कौन कहाँ बोली जाती है ?
४—हिन्दी की उत्पत्ति और विकास का प्रकार लिखो ?
५—हिन्दी भाषा में किन २ भाषाओं के शब्द मिले हैं ?
६—१० तत्सम के तत्सम ,और १० तद्भव शब्द लिखो ?
७—कुछ अरबी फारसी तथा अँगरेजी के तद्भव शब्दों के नाम गिनाओ ?
८—देशज शब्द क्या कहाते हैं ? कुछ देशज शब्दों की नामावली दिखाओ ?

यौगिक शब्द

हिन्दी भाषा में मुख्यतः शब्द तीन प्रकार से बनाये जाते हैं, शब्दों के पूर्व उपसर्ग के योग से शब्दों के पीछे प्रत्यय लगाकर और समास की रीति से। इनके सिवाय एक ही शब्द को दुहराने, दो समानार्थक वा विपरीतार्थक शब्दों के प्रयोग में तथा किसी पदार्थ या प्राणी की ध्वनि या बोली के अनुकरण में भी नये शब्द बनाये जाते हैं जिन्हें क्रम से पुनरुक्त अथवा अनुकरण वाचक शब्द कहते हैं।

उपसर्ग के योग में —

कुछ अव्यय धातु के साथ मिल कर खास खास अर्थ प्रकाशित करते हैं इस प्रकार के अव्ययों को 'उपसर्ग'

कहते हैं। उपसर्ग धातु के साथ मिलकर या तो किसी धातु के अर्थ को उलटा कर देते है, अथवा उसमें विशेषता पैदा करदेते है, जैसे आदान और आगमन में 'आ' उपसर्ग 'दा' और 'गम्' धातु के विपरीत अर्थ प्रकाशित करता है। परिदर्शन और परिभ्रमण से उपसर्ग द्वारा दर्शन और भ्रमण का अर्थ ही द्योतित होता है। 'प्रदान' में 'प्र' उपसर्ग से किसी प्रकार का हेर फेर नही होता।

पद	उपसर्ग	धातु	प्रत्यय	अर्थ
आदान	आ	दा	अन	लेना
प्रदान	प्र	दा	अन	देना
निदान	नि	दा	अन	हेतु
उपादान	उप	दा	अन	कारण

उपसर्ग	मूल	पद	अर्थ
आ	कार	आकार	सूरत
प्र	कार	प्रकार	भाँति
वि	कार	विकार	बुराई
उप	कार	उपकार	भलाई
प्रति	कार	प्रतिकार	रोक,बदला
सम्	कार	संस्कार	शोधन

'कृ' धातु से "अ" प्रत्यय के योग से कार पद बना है।

इसी भाँति —

'भू' धातु से—सम्भव, विभव पराभव, अनुभव, उद्भव प्रभव, प्रभाव।

'हृ' धातु से—आहार, प्रहार, संहार, विहार, उपहार, व्यवहार।

'पद' धातु से—सम्पदा, आपदा, विपदा सम्पत्ति, निष्पत्ति, उत्पत्ति, आपत्ति।

'स्था' धातु से—स्थान, सस्थान, अवस्थान अनुष्ठान, सस्था, अवस्था, व्यवस्था।

'दिश्' धातु से—आदेश, प्रदेश, विदेश, उपदेश।

'कृ' धातु से—अधिकार, उपकार, प्रतिकार, विकार, आकार, सस्कार दुष्कर।

'चर धातु से—उपचार, विचार, आचार।

'क्रम' धातु से—अतिक्रम, विक्रम, आक्रमण, उपक्रम, पराक्रम।

'ज्ञ' धातु से—आज्ञा, सज्ञा, प्रज्ञा, उपज्ञा।

कुछ अव्यय और विशेषण भी उपसर्ग का काम देते हे।

अ—अभाव, अज्ञान, अनीति, अनेक।
अधस्—अध पतन, अधोभाग।
पुन —पुनर्जन्म, पुनर्विवाह, पुनरुक्ति।
स—सजीवन, सफल, सहित, सगोत्र।
चिर—चिरकाल, चिरजीवि।
सत—सज्जन, सत्कर्म, सद्गुरु आदि।

हिन्दी उपसर्ग

अ—अजान, अचेत, अलग, अवेर।
अध—अधकच्चा, अधपका, अधेड।
औ—औगुण, औघड।
नि—निकम्मा, निठल्ल, निडर।
सु—सुडौल, सुघर, सुजान।

उर्दू उपसर्ग

खु—खुशदिल, खुशबू।
गै—गैरमुमकिन, गैरहाजिर।
ना—नाराज, नापसन्द नालायक।
बद—बदनाम, बदमाश।
बे—बेचारा, बेईमान बेतरह।
सर—सरकार, सरदार सरताज।
हर—हररोज, हरसाल, हरघड़ी।

प्रत्यय के योग में —

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं, कृदन्त और तद्धित।

कृदन्त—क्रिया या धातु के अन्त में प्रत्यय लगा कर जो शब्द बनते हैं।

संस्कृत कृदन्त से बने विशेष्य
'अक' प्रत्यय के योग में.—

कृ धातु से कारक, नी से नायक, पै से पाचक, पच से पाचन, गै से गायन, दा से दायक, जन से जनक आदि कर्तृवाचक शब्द बनते हैं।

'अन' (अनट्) प्रत्यय के योग में —

नी से नयन, लोच से लोचन, चर से चरण, कृ से करण, साध से साधन, स्था से स्थान, शी से शयन, भू से भवन, पक् से पाक त्यग् से त्याग, आदि पद बनते हैं।

भाववाचक धातुओं के आगे 'अन' प्रत्यय के योग में.—

गम् से गमन, भुज से भोजन, ज्ञा से ज्ञान, मा से मान, दा से दान, शी से शयन, पत् से पतन, कृ से करण, तप से तपन, जल से जलन आदि बनते हैं।

धातु के आगे 'क्ति' प्रत्यय के योग में —

भाववाचक शब्द—शुध् से शुद्धि, गम् से गति, मन् से मति, शम् से शान्ति, पुष् से पुष्टि, दृश् से दृष्टि, ग्लै से ग्लानि, ख्या से ख्याति मा से मिति, स्था से स्थिति, नी से नीति, प्री से प्रीति भी से भीति आदि शब्द बनते हैं।

संस्कृत कृदन्त से बने विशेषण।

अपहरण (हृ) से अपहृत, उपकार (कृ) से उपकृत, संतोष (तुष्) संतुष्ट, भय (भी) से भीत।

धातु	प्रत्यय	विशेषण	अर्थ
कृ	तव्य	कर्त्तव्य	करने योग्य।
दा	तव्य	दातव्य	देने योग्य।
गम्	तव्य	गन्तव्य	जाने योग्य।
पूज	नीय	पूजनीय	पूजने योग्य।
जि	त (क्त)	जित	जीता हुआ।
मृ	त (क्त)	मृत	मरा हुआ।
पू	त (क्त)	पूत	शुद्ध हुआ।
पत्	इत (क्त)	पतित	गिरा हुआ।
वि + श्वस	इत (क्त)	विश्वसित	विश्वास किया हुआ।
मूर्छा	इत (क्त)	मूर्छित	मूर्छा प्राप्त।
रुज्	(क्त)	रुग्ण	रोग ग्रसित।
गम्	णिन	गामी	चलने वाला।
सह	इष्णु	सहिष्णु	सहने वाला।

हिन्दी कृदन्त से बने विशेष्य

भाव वाचक शब्द :—

मारना से मार, दौडना से दौड, सोचना विचारना से सोच विचार, उठना से उठान, उतरना से उतार, चढ़ना स चढाव, हँसना से हँसी बनना से बनाव, निकलना से निकास, पीसना से पिसान, रटना से रट, चिल्लाना से चिल्लाहट, थकना से थकावट, मिलना से मिलावट, बढ़ना से बाढ़, चढ़ना से चढाई, लडना से लडई, लिखना से लिखाई।

कर्म वाच्य —

ओढ़ना से ओढनी, सूँघना से सुँघनी।

करण वाच्य —

कतरना से कतरनी, छानने से छनली, ढकना से ढकन, बुहारना से बुहारी, सुमिरना से सुमिरनी, झूलना से झूला, ठेलना से ठेला, घेरना से घेरा आदि।

कर्तृ वाच्य में

जडना से जडिया, धुनना से धुनिया।

हिन्दी कृदन्त से बने विशेषण

टिकना से टिकाऊ बिकना से बिकाऊ, सुहाना से सुहावना, लुभाना से लुभावना, उडना स उडाकू हँसना से हँसने वाला, ढालना से ढलवाँ, जडना से जडाऊ, चलना से चालू, पीना से पीने योग्य, झगडना से झगडालू, समझना से समझदार, मिलना से मिलनसार होना से होनहार, लडना से लडाकू, गाना से गवैया, खेलना से खिलाडी, माँगना से मँगैनू, तैरना से तैराक, अडना से अडियल, सडना से सडियल।

संस्कृत तद्धित मे बने विशेष्य

मूल अर्थ में —

बन्धु से बांधव, चोर से चौर, चण्डाल मे चाण्डाल कुतूहल से कौतूहल, मरुत से मारुत, सेना से सैन्य, त्रिलोक से त्रैलोक्य, समान से सामान्य।

सन्तान के अर्थ में —

दशरथ से दाशरथि, सुमित्रा स सौमित्र, वसुदेव स वासुदेव, अदिति से आदित्य, पृथा मे पार्थ, मनु मे मानव, गंगा से गांगेय दिति से दैत्य।

दूसरे अर्थों में —

तर्क से तार्किक, मर्म से मार्मिक, न्याय से नैयायिक, व्याकरण से वैयाकरण।

शिव से शैव, विष्णु से वैष्णव, शक्ति से शाक्त, गणपति से गाणपत्य।

हिन्दी तद्धित मे बने विशेष्य

लडका से लडकाई, लडकपन, बाप से बपौती बूढा स बुढ़ापा, गाय से गैया, खाट से खटिया, मक्खन से मक्खनियाँ, सराफ से सराफा, बजाज से बजाजा, भला स भलाई, बुरा से बुराई, ऊँचा मे ऊँचाई, लम्बा से लम्बाई, चूरी मे चुरिहारा, सोना से सुनार, मीठा से मिठास, कण्ठ से कण्ठी, खट्टा से खटास, कडुवा मे कडुआहट, तेल से तेली, साँप से सँपेरा, काँसा से कसेरा, पहुँचे से पहुँची, काठ से कठौता, सेवा से सेवक।

हिन्दी तद्धित से बने विशेषण

भूख से भूखा, प्यास से प्यासा, घर से घरेलू, अरब मे अरबी, बनारस मे बनारसी, भाँग मे भँगेडी, बन से बनैला,

गेरू से गेरुआ मामा से ममेरा, धूम से धुमैला, दूध से दुधैला, दया से दयावन्न, धन से धनवन्न, मति से मतिमान, ठण्ट से ठण्डा।

पुनरुक्त पद

एक ही अर्थ वाले पद :—

आमोद-प्रमोद, हरा-भरा, हृष्ट पुष्ट, देख-रेख, श्रद्धाभक्ति, चहलपहल, दानदक्षिणा, दौड़धूप, बोलचाल, घरद्वार, अनुनय विनय, जीवजन्तु, हाटबाजार, रीतिनीति, बन्धुबांधव, चोर डाकू, आहारविहार, सेवासुश्रूषा।

विपरीत अर्थ वाले पद —

प्राय विपरीत अर्थ वाले दो पद साथ साथ आते हैं —

घट बढ़, नीच-ऊँच, आगा पीछा, लैन दैन, सुख दुख, पाप पुण्य, नया पुराना, स्वर्ग नर्क, उत्तर-दक्षिण, पूर्व पश्चिम, गुण-दोष, लाभ हानि, स्थावर-जगम, छोटे-बड़े, जन्म मृत्यु, घटती-बढ़ती, जमा-खर्च, आना-जाना, आय व्यय, आग-पानी।

आविर्भाव तिरोभाव, धनी-दरिद्र, उत्कृष्ट अपकृष्ट, जागृत-सुप्त, उत्थान पतन, घात प्रतिघात, सुलभ-दुर्लभ, स्वर्ग-नरक, चल अचल, निन्दा-स्तुति, जलचर-थलचर, पुण्य-पाप, सुख दुख, पण्डित-मूर्ख, उदय-अस्त, निद्रा-जागृति, शुभाशुभ क्रोध-क्षमा, सयोग-वियोग, लाभ-हानि, हर्ष-विषाद, वादी प्रतिवादी, साधु-असाधु, बाहर-भीतर, धनी-निर्धन, उदय-अस्त जस अपजस, सार-असार, आकाश पाताल, भूचर-खेचर, जय-पराजय, सन्धि-विग्रह सपद विपद्, आय व्यय, ह्रस्व दीर्घ, जीवन मरण।

समास द्वारा बने हुए पद

संस्कृत समस्तपद ।

(१) द्वन्द्व समास—माता और पिता, माता पिता ।
कन्द और मूल और फल, कन्द मूल-फल ।
मन और कर्म और वचन, मन कर्म वचन ।
अहन और निशा, अहर्निश । अहन और रात्रि, अहोरात्रि ।

(२) तत्पुरुष—(कर्म कारक में) शरण को आगत, शरणागत ।
करण—शोक से आकुल, शोकाकुल ।
मोह से अंध, मोहांध ।
(अपादान में)—शाप से मुक्त शापमुक्त ।
आदि से अन्त, आद्यन्त ।
(सम्बन्ध में)—गंगा का जल, गंगाजल ।
गुरु का उपदेश, गुरूपदेश ।
(अधिकरण में)—रथ में आरूढ, रथारूढ ।
सेवा में निरत, सेवानिरत ।

कर्मधारय—परम है जो ईश्वर, परमेश्वर ।
परम है जो सुन्दर, परमसुन्दर ।
दुष्टा है जो मति, दुष्टमति ।
अल्प (अल्पा) है जो बुद्धि, अल्पबुद्धि ।
साध्वी है जो कामना, साधुकामना ।
कम्पित है जो लता कम्पितलता ।

बहुव्रीहि—अल्प है बुद्धि जिसकी, अल्पबुद्धि ।
स्वच्छ है तोय जिसका, स्वच्छतोया । जल
नष्ट है मति जिसकी, नष्टमति ।

हत होगई आशा जिसकी, हताश।
नत हुई शाखा जिसकी, नतशाख।
नहीं है भय जिसे, निर्भय।
कमल से नयन हैं जिसके, कमलनयन।

क्रिया विशेषण के भाव में समस्त-पद

अव्ययी भाव—कूल के उप (समीप में) उपकूल (समीपता के अर्थ में)
गृह गृह में, प्रति गृह, प्रतिदिन, अनुकूल।
धर्म के अभाव में अधर्म, इसी प्रकार अपाप, असुर, निर्विघ्न, दुर्भिक्ष।
विधि को यथा (अतिक्रम न करके) यथाविधि, इसी प्रकार यथायोग, यथासाध्य।
अक्षि के प्रति (सामने) प्रत्यक्ष।

द्विगु—(संख्या-पूर्वक कर्मधारय)
त्रि हैं जो भुवन, त्रिभुवन।
चतु: हैं जो पद, चतुष्पदी।
चार हैं जो युग, चतुर्युग।

हिन्दी समास

आम का रस	अमरस	(तत्पुरुष)
फूली हुई बरी	फुलौरी	(कर्मधारय)
कान फटे हैं जिसके	कनफटा	(बहुव्रीहि)
माता और पिता	मातपिता	(द्वन्द्व)
डर के अभाव में	निडर	(अव्ययी भाव)
धडक के अभाव में	निधडक	,,

जानने के अभाव में	अनजान	(अव्ययीभाव)
पेट भरने के भाव में	भरपेट	"
ठीक बीच के भाव में	बीचोंबीच	"
नीली है जो गाय	नीलगाय	(कर्मधारय)
दही की हाँडी	दहेंडी	(तत्पुरुष)
दई (दैव) ने मारा	दईमारा	(तत्पुरुष)
बन का मानुष	बनमानुष	(तत्पुरुष)
राजाओं के पूत	राजपूत	(तत्पुरुष)
मीठा है बोल जिसका	मिठबोला	(बहुब्रीहि)

अनुकरण वाचक

खट् खट् होने से	खटाखट्	खडाऊँ पहन कर खटाखट करते हुए चले।
पड पड होने से	पडपडाहट	थोडी ही देर में बादल हो आया पडपडाहट मच गई।
सन सन होने से	सन्सनाहट	कुनेन खाने से कानों में सनसनाहट मच गई।
चहचहाने से	चहचहाहट	चिडियों का चहचहाना कैसा मनोहर है।
कुहू कुहू		कोयल कुहू कुहू करती है।
कॉव कॉव		कोआ की कॉव कॉव किसे भाती है।
भूँ भूँ		भूँ भूँ करते हुए भौंरे उड रहे थे।
फुर फुर		चिडिया फुर फुर करती हुई उड गई।
धडधड करना	धड धडाना	एकदम तोपें धडधडाने लगीं।

अभ्यास

१—हिन्दी में शब्द कितने प्रकार से बनते हैं।

२—बताइये नीचे लिखे शब्द किस प्रकार के हैं और किस प्रकार बने हैं —

शैशव, भ्रान्त, पैतृक, नैतिक, क्रोधित, घुमैला, पार्थिव, बनारसी दिहल्वी, मौसेरा, मार्मिक, धनी, विहार, उतार, आचार, अज्ञान, अचेत, निडर, औघट उपकार, भोजन, माधन, पतन, मानव, दैत्य, हलवाँ, लुभावना रथारूढ, सन्धिविग्रह, पुण्यपाप, साधुअसाधु, शोकाकुल, चतुष्पदी, त्रिभुवन, फनफटा, हलकट्टे, अनजान आदि।

३—हर प्रकार के पाँच पाँच शब्द बनाओ—

संस्कृत कृदन्त से बने हुए, हिन्दी कृदन्त से बने हुए, संस्कृत तद्धित से बने हुए, हिन्दी तद्धित से बने हुए, उपसर्ग से बने हुए, दो शब्दों के योग से बने हुए तथा अनुकरण से बने हुए।

हिन्दी में तत्सम प्रयोग

यों तो सहस्रों रूप हिन्दी में तद्भव रूप में प्रयुक्त होते हैं जो हिन्दी की खास सम्पत्ति हैं, गृह के स्थान पर घर ही अधिक मौजूँ है। "हिये माथे" की फूट गई की जगह "हृदय और मस्तिष्क" की फूट गई, लिखना कैसा जजाल मालूम पड़ता है। किन्तु जो शब्द तत्सम रूप में प्रचलित हैं उनको उसी रूप में लिखना चाहिये।

तत्सम शब्दों के प्राय समास और सन्धिगत प्रयोगों में भूल रहती है। शब्दयोजना के समय इन बातों का ध्यान रखना चाहिये। जहाँ तक हो, शब्दों का प्रयोग सरल रीति पर होना चाहिये। तद्धितान्त शब्दों में जब तक ठीक निश्चय न हो उसे सरल रीति पर लिखना चाहिये। शक्ति के उपासक शाक्त कहलाते हैं—जब तक लेखक को ठीक ठीक निश्चय न होजाय तब तक

'शाक्त' के बजाय 'शाक्ते' के उपासक' ही लिखें तो हानि नहीं परन्तु 'शाक्त्य' इत्यादि लिखना ठीक नहीं। वैधव्य की जगह विधवा या वैधव न लिखकर विज्ञापन लिखना बुरा न रहेगा। पारिश्रमिक ठीक न हो सके तो परिश्रम का फल ही लिखना काफी होगा। सुजन का भाव सौजन्य है। कोई ता प्रत्यय का असह्य बोझ भी सुजन की पीठ पर लाद कर अपनी योग्यता का परिचय देते हैं। सौजन्यता की जगह सुजनता अधिक ठीक रहेगा। इसके सिवाय, श,स,ष, के प्रयोगों तथा व और ब के प्रयोगों में बड़ी भूल रहती है। नीचे की तालिका में साधारण भूलों का दिग्दर्शन कराते हैं।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
शूद्रानी	शूद्रा	निर्दोषी	निर्दोष
निर्धनी	निर्धन	राजागण	राजगण
अहोरात्रि	अहोरात्र	दुरावस्था	दुरवस्था
निरर्थ	निरर्थक	अधीनस्थ	अधीन
महाराजा	महाराज	एकत्रित	एकत्र
वर्षारात्रि	वर्षारात्र	सन्मान	सम्मान
विश्वमित्र	विश्वामित्र	सलज्जित	सलज्ज व लज्जित
उपरोक्त	उपर्य्युक्त	बाढ	वाढ
दरिद्रता	दारिद्र्य	बाण	बाण
सावधानपूर्वक	सावधान	बानर	वानर
पार्वतीय	पर्वतीय	बामदेव	वामदेव
असहनीय	असह्य	बायु	वायु
ज्ञानमान	ज्ञानवान	बासर	वासर
कृतघ्नी	कृतघ्न	बिघ्न	विघ्न

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
घनिष्ट	घनिष्ठ	विघ्न	विघ्न
दुश्तर	दुस्तर	विद्या	विद्या
		विराट	विराट
ख्रीष्ट	ख्रीस्ट	विप	विप
उच्छ्वास	उच्छ्वास	विशेष	विशेष
अत्योक्ति	अत्युक्ति	फाल्गुण	फाल्गुन
पैत्रिक	पैतृक	शस्कार	सस्कार
प्रथक्	पृथक्	सम्वाद्	सवाद
विद्यमान्	विद्यमान	सस्य	शस्य
		सास्त्र	शास्त्र
भुजगी	भुजङ्ग	सल्य	शल्य
व्याकुलित	व्याकुल	सर	शर
ब्रह्म	ब्रह्म	सनिश्चर	शनिश्चर
ब्राह्मण	ब्राह्मण	सकुन	शकुन
बहुधा	बहुधा	सकट	शकट
बन्धु	बधु	ब्रहत	बृहत
बालक	बालक	बलि	बलि
बर्षा	वर्षा	बसन्त	वसन्त
बसन	वसन	बस्त्र	वस्त्र
बहि	बहि	बाक्दान	वाक्दान
अभिसेक	अभिषेक	निसिद्ध	निषिद्ध
विसम	विषम	सुसुप्ति	सुषुप्ति
वनोवास	वनवास	पितृनुमति	पित्रनुमति
प्रत्योपकार	प्रत्युपकार	किम्वा	किंवा
सघार	सहार	सम्वत्	सवत्

नोट—जहाँ पर ठीक तत्सम शब्दों का व्यवहार हो, वहाँ 'ब', 'व' और 'श', 'ष', 'स' के प्रयोगों का ध्यान रखना चाहिये। पुराने पद्यों में तो अधिकांश 'व' की जगह 'ब' और 'श' की जगह 'स' का प्रयोग है। उच्चारण की सुविधा के विचार से ही उनका प्रयोग बढा है। "दसमुख मैं न बसीठी आयो" शीटी युक्त 'श' के बजाय दन्त्य 'स' का उच्चारण अति सहज है।

साधारण प्रयोग

अकार, इकार और यकार

एक ही उच्चारण के शब्द प्राय कई प्रकार से लिखते हैं, जैसे —लिये लिए, आई आयी, गये गए, सोए सोये, खाये गये, खाए गये, खाये गए, खाए गए, आओ आवो, गाओ गावो, भाये भाए, किये किए आदि।

ऐसे अनेक प्रयोग जिसे मनुष्य कई कई प्रकार से लिखते हैं। हिन्दी इतिहास के रचयिता प्रसिद्ध साहित्य-सेवी श्री मिश्रबंधुओं की सम्मति तो यह है कि अभी हिन्दी का विकासकाल है इसमें जो जिस प्रकार से लिखे, लिखने दीजिये, ठीक है।

कुछ लोगों की राय है कि जब स्वर से ही काम निकल जाय तब व्यञ्जन की आवश्यकता ही नहीं है।

अनेक लोगों का मत है कि जब गया होता है तो गये जरूर होना चाहिये। खाया खाये, पाया पाये, पिया पिये परन्तु खायी, पियी, गयी, में पियी नहीं होता। मेरी समझ में

हुआ	हुए	हुई
गया	गये	गई
आया	आये	आई

सोया	सोये	सोई
पिया	पिये	पी

आदि का प्रयोग एक ही ढंग से इस प्रकार हो तो ठीक है।

अरबी फारसी के शब्द

जब से हिन्दी-भाषा का विकास शुरू हुआ, अरबी फारसी के शब्द भी उसमें आते गये। 'भाषाया लक्षणानि षट्' तथा 'मिले संस्कृत पारस्यो' उसी समय का लक्षण है। परन्तु उन भाषाओं के शब्दों के अधिकांश प्रयोग अपभ्रंश हैं। बोलने की सुविधा के अनुसार प्रारम्भ में चन्द आदि कवियों ने उसी रूप में उनका प्रयोग किया जिस रूप में साधारण लोगों की बोली में आगये थे। फारसी का एक प्रयोग है जाय (ए) जरूर अर्थात् जरुरी जा आवश्यक जगह, आवश्यकता पूरी करने की जगह, पाखाना। जाय की 'य' विभक्ति (इजाफत) लुप्त हो गई। जरूर के ज का खराब होने पर 'ज' रहा, अर्थात् 'जाजरूर' एक कवि ने इसका प्रयोग इस प्रकार किया है— "अपनी जरूर जाजरूर जाइयतु है।" प्रारंभ में ठीक जिस प्रकार सर्व साधारण में प्रयोग चल पडे वैसे ही लोग बोलने लिखने लगे। कवियों ने उन प्रयोगों को और माँज दिया। एक बानगी और देखिये —

"देखि देखि कागद तबीयत समादी भई,
सादी कहा भई बरबादी भई घर की।"

इस पद्य में कागद (कागज, तबीयत (तबीअत) समादी (सो+मादो) सो (पाद पूर्ति) मादी (बीमार) सादी (शादी)

भूषण की रचना भी देखिये —

"मारिकर पातशाही खाकशाही कीन्हीं जिन,
जेर कीन्हों जोर सों लै हद्द सब मारे की।"

इस प्रकार एक ओर लोक भाषा शब्दों का माँजमूँज कर उन्हें अपने अनुकूल बनाती गई, दूसरी ओर फारसी अरबी के बोलने वाले शासकों की छत्रछाया में अरबी फारसी की शिक्षा का क्रम जारी हुआ। फारसी को अदालतों में आश्रय मिला। शासकों से सम्बन्धित शिक्षित समुदाय की भाषा फारसी हुई। तत्सम रूप में अरबी फारसी के शब्द बोले और लिखे जाने लगे। इधर अपभ्रंश लोक भाषा को तालीमयाफ्ता (शिक्षित) गँवारू या गँवारी जुबान कहने और शीन काफ की दुरुस्ती को सभ्यता का चिह्न समझने लगे। यहाँ तक हिन्दी पद योजना का ढाँचा 'फरदे कौम' 'अय्यामेगर्दिश' 'दास्तानेहज़ारबुलबुल' 'शाहेजहाँ' 'कलामे-आजाद,' 'अजदफ्तर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड आगरा' आदि में बदल गया। हजारों अरबी फारसी के तत्सम शब्द हिन्दी में भर गये। शायस्ता कहलाने वाले लोग ठीक अरब की तरह उच्चारण करने में सफल हुए या न हुए, किन्तु उसे ऊँचा आदर्श अवश्य ही समझने लगे। इस प्रकार ठीक गँवारू और शायस्ता लोगों के बीच में एक और भाषा हुई, जिसे बाजारू बोली समझिये। आज भी कमख्वाब की जगह कीमखाब, ख्वाहमख्वाह की जगह खामखा आदि बाजार में अपभ्रंश रूप बोले जाते हैं—आदमी, आदत (आदत) अरजी (अरजी) आराजी (आराजी), अलबत्ता, ईजा (ईज़ा), इश्तहार (इश्तहार), कसूर (कुसूर), उजर (उज्र), वायदा (वाअदा) वारिस, वालिद, कदरदान (कद्रदाँ, कद्रदाँ), कैद (कैद), कलम (कलम), कानून (कानून), कागज (कागिज), किता (कितअ), खबर (खबर), खातिर (खातिर), जुम्मामस्जिद (जामअमसजिद), खारिज (खारिज), गाफिल (गाफिल), जुलम (जुल्म), तसदीक (तसदीक), तमस्सुक, तमाम, तरद्दुद।

नरफ, तहसील, तारीफ (तअरीफ), तालीम (तअ़्लीम) दफा (दफअ़), दावा (दअ़वा), दुनिया, नकल (नक़ल), नजर (नज़र), नजीर (नज़ीर), नमूना, नाबालिग, (नाबालिग़), नामजूर (नामज़ूर), नायब, नाराज (नाराज़), फतै (फतह) फायदा (फ़ायदा), फुरसत (फ़ुरसत), फौजदार (फ़ौजदार), बकसीस (बख़्शिश), बाकी (बाक़ी), बेनामा (बअ़नामा), बेईमानी, मस्गूल (मशग़ूल), माफ (मुआ़फ) मामूली (मअ़मूली), माल गुजारी (मालगुज़ारी), म्यादी (मिआ़दी), साम (शाम), बयान, बेगम (बेग़म), बेचारा, बेजा (बेजा), बराबर, मगज (मग़्ज़), मुहल्ला, बुनियाद, मुनाफा (मुनाफ़ा), रंग, रसद रफा (रफ़अ़), राजीनामा (राज़ीनामा), रोज (रोज़) रोजगार (रोज़गार), रोजनामचा (रोज़नामचा), शैतान, शादी मजा (मज़ा), हाजिर (हाज़िर), हिस्सा, मुलतवी, मुसाफिर (मुसाफ़िर), मुहर्रिर, मौजा (मौज़अ़), मौरूसी राय, लायक (लायक़), स्यात (शायद), सरीक (शरीक), सामिल (शामिल), सरनामा, सुलहनामा, हकदार, हलफ (हलफ़), हासिल, अफसोस (अफ़सोस), आबरू, आमदनी, यार, इमारत (अ़मारत) इलाका (इलाक़ा), इजाफा (इज़ाफ़ा), कबूल (क़ुबूल), काबू (क़ाबू), कायम (क़ायम), कारखाना (कारख़ाना), कारीगर, किस्मत (क़िस्मत), कुश्ती, किताब, खरीद (ख़रीद), खामखा (ख़्वाहमख़्वाह), खूब (ख़ूब), खुराक (ख़ूराक), गुम्बज (गुम्बज़), गैरहाजिरी (ग़ैरहाज़िरी), गुस्सा (ग़ुस्सा), चस्म (चश्म), चाकू (चाक़ू) चीज (चीज़), चिराग (चिराग़), चहरा, जबरदस्त (ज़बरदस्त), जमाबन्दी (जमअ़बन्दी), जागीर, जाहिर (ज़ाहिर), जेरबार (ज़ेरबार), तकिया, तखत (तख़्त), तलाश, ताज्जुब (तअ़ज्जुब), ताजा (ताज़ा), तिजारत, दरकार, दस्तूर, दुश्मन, दिमाग (दिमाग़), दिल, पैदा, परवाना, पोशाक, बन्दोबस्त।

इन प्रयोगों में अधिकाश तद्भव है, तत्सम् उनके साथ कोष्टक में दिये हुए हैं। कचहरी के मुशी, वकील, मकतबों के आस पास का वायु मण्डल, अरबी फारसी की शिक्षा पाये हुए नागरिक, मुसलमानी शासन से जिनका अधिक सम्बन्ध रह चुका है ऐसे खास घराने, लखनऊ, आगरा, दहली आदि शहरों के विशेष निवासी तत्सम् शब्द अधिक बोलते हैं। नागरी प्रचारिणी सभा काशी ने तो अधिकाश फारसी और अरबी के शब्दों के नीचे से बिन्दी भी उडादी है। जरूरत, फरियाद, फतह, फर्ज, फरमाइश, फरमान आदि बिना बिंदी के लिखे पढ़े जाने लगे हैं। सच बात तो यह है कि अरबी फारसी के साहित्यक और उनसे सम्पर्क रखने वाले लोग भले ही तत्सम् प्रयोगों के आदी हों परन्तु साधारण हिन्दी भाषा भाषी जनता प्रकृति नियमानुसार इनके लिये बाध्य नहीं है।

अङ्गरेजी आदि भाषाओं के शब्द

यही हाल यूरोपियन भाषा के प्रयोगों का है। पहिले पहल जब पुर्तगाल और फ्रांस वालों से काम पडा तो उनकी भाषा के अपभ्रश शब्द हिन्दी में आने लगे। अँगरेजी एँजिन का रूप हिंदी में अञ्जन, समन का सम्मन, लोंगक्लाथ का लकलाठ, लैनटर्न का लालटेन,फ्लैनिल का फलालेन, टिकिट का टिक्ट, माइल का मील, बौटल का बातल, टरपेन्टाइल का तारपीन, थियेटर का थेटर, वैस्कोट का वासकट, बैंक का बक, बोक्स का बक्स, डौक्टर का डाक्टर, गोडाउन का गोदाम आदि तद्भव और नोटिस, रेल, स्कूल, बटन, बेंच, कलक्टर, इच, हारमोनियम, स्टेशन, टाइम, इन्सपेक्टर, फार्म, इन्जीनियर,

नरफ, तहसील, तारीफ(तअरीफ), तालीम (तअ़्लीम) दफा (दफअ़), दावा (दअ़वा), दुनिया, नकल (नकल), नजर (नज़र), नजीर (नज़ीर), नमूना, नाबालिग, (नाबालिग), नामजूर (नामज़ूर), नायब, नाराज (नाराज़), फतै (फतह) फायदा (फायदा), फुरसत (फुरसत), फौजदार (फौज़दार), बकसीस (बख्शिश), बाकी (बाकी), बेनामा (बअ़नामा), बेईमानी, मस्गूल (मशगूल), माफ (मुआफ) मामूली (मअ़मूली), माल गुजारी (मालगुज़ारी), म्यादी (मिआदी), साम (शाम), बयान, बेगम (बेगम), बेचारा, बेजा (बेजा), बराबर, मगज (मग्ज़), मुहल्ला, बुनियाद, मुनाफा (मुनाफ़ा), रंग, रसद रफा (रफअ़), राजीनामा (राज़ीनामा) रोज (रोज़) रोजगार (रोज़गार), रोजनामचा (रोज़नामचा), शैतान, शादी मजा (मज़ा), हाजिर (हाज़िर), हिस्सा, मुलतवी, मुसाफिर (मुसाफिर), मुहर्रिर, मौजा (मौज़अ़), मौरूसी, राय, लायक (लायक), स्यात (शायद), सरीक (शरीक), साभिल (शामिल), सरनामा, सुलहनामा, हकदार, हलफ (हलफ), हासिल, अफसोस (अफ़सोस), आबरू, आमदनी, यार, इमारत (अ़मारत) इलाका (इलाका), इजाफा (इज़ाफ़ा), कबूल (कुबूल), काबू (काबू), कायम (कायम), कारखाना (कारखाना), कारीगर, किस्मत (किस्मत), कुश्ती, किताब, खरीद (खरीद), खामखा (ख्वाहमख्वाह), खूब (खूब), खुराक (खूराक), गुम्बज (गुम्बज़), गैरहाजिरी (गैरहाज़िरी), गुस्सा (गुस्सा), चस्म (चश्म), चाकू (चाकू) चीज (चीज़), चिराग (चिराग), चहरा, जबरदस्त (जबरदस्त), जमाबन्दी (जुमअ़बन्दी), जागीर, जाहिर (ज़ाहिर), जेरबार (ज़ेरबार), तकिया, तखत (तख़्त), तलाश, ताज्जुब (तअ़ज्जुब), ताजा (ताज़ा), तिजारत, दरकार, दस्तूर, दुश्मन, दिमाग (दिमाग), दिल, पैदा, परवाना, पोशाक, बन्दोबस्त।

इन प्रयोगों में अधिकांश तद्भव हैं, तत्सम् उनके साथ कोष्ठक में दिये हुए हैं। कचहरी के मुंशी, वकील, मकतबों के आस पास का वायु मण्डल, अरबी फारसी की शिक्षा पाये हुए नागरिक, मुसलमानी शासन से जिनका अधिक सम्बन्ध रह चुका है ऐसे खास घराने, लखनऊ, आगरा, दहली आदि शहरों के विशेष निवासी तत्सम् शब्द अधिक बोलते हैं। नागरी प्रचारिणी सभा काशी ने तो अधिकांश फारसी और अरबी के शब्दों के नीचे से बिन्दी भी उड़ादी है। जरूरत, फरियाद, फतह, फर्ज, फरमाइश, फरमान आदि बिना बिंदी के लिखे पढ़े जाने लगे हैं। सच बात तो यह है कि अरबी फारसी के साहित्यक और उनसे सम्पर्क रखने वाले लोग भले ही तत्सम् प्रयोगों के आदी हों परन्तु साधारण हिन्दी भाषा भाषी जनता प्रकृति नियमानुसार इसके लिये बाध्य नहीं है।

अङ्गरेजी आदि भाषाओं के शब्द

यही हाल यूरोपियन भाषा के प्रयोगों का है। पहिले पहल जब पुर्तगाल और फ्रांस वालों से काम पड़ा तो उनकी भाषा के अपभ्रंश शब्द हिन्दी में आने लगे। अँगरेजी एँजिन का रूप हिंदी में अञ्जन, समन का सम्मन, लौंगक्लाथ का लट्ठलाठ, लैनटर्न का लालटेन, फ्लैनिल का फलालैन, टिकिट का टिकट, माइल का मील, बौटल का बातल, टरपेन्टाइल का तारपीन, थियेटर का थेटर, वैस्कोट का वासकट, बैंक का बंक, बोक्स का बक्स, डोक्टर का डाक्टर, गोडाउन का गोदाम आदि तद्भव और नोटिस, रेल, स्कुल, बटन, बेंच, कलक्टर, इञ्च, हारमोनियम, स्टेशन, टाइम, इन्सपेक्टर, फार्म, इञ्जीनियर,

स्लेट, मास्टर, पेंसिल, टिन, पिन, बूट, गट, चेन, ग्लास, स्लीपर, आदि आदि शब्द तत्सम् रूप में वाले जाते है।

पादरी, गिरजा, इस्पात, कमरा, आलमारी, नीलाम, आदि शब्द पोर्तगीज भाषा के हिन्दी में काम आते है।

आज कल अङ्गरेजी के शिक्षित समुदाय के द्वारा हजारा शब्द हिन्दी में प्रवेश कर रहे हैं। कौलेज या स्कूल के वायु-मण्डल की भाषा के वाक्य तो बिना अँगरेजी शब्दों की सहायता के पूरे ही नहीं हो सकते। ठीक उर्दू की भाँति एक बाबू-हिंदी भी बन रही है। परन्तु उसका वृत्त अभी अधिक नहीं है। अच्छी रचना के लिये आवश्यक है। कि विदेशी भाषा के वही शब्द काम में लिये जाँय जो अपनी भाषा में तत्सम् या तद्भव रूप में प्रचलित हो गये है। या जिनकी सहायता बिना हम अपना भाव ही व्यक्त न कर सकते हों।

शब्दों में अर्थ शक्ति

शब्दों में तीन प्रकार की शक्ति है, उन्हीं शक्तियो के द्वारा पद या वाक्य आदि का अर्थ जाना जाता है। प्रथम अभिधा दूसरी लक्षणा, तीसरी व्यञ्जना है। अभिधा, जिस शक्ति से शब्दों का मुख्य (सीधा साधा) अर्थ जाना जाता है, उसको अभिधा कहते है। अभिधा द्वारा जिस अर्थ का ज्ञान हो उसे वाच्यार्थ कहते है।

पर्य्याय या प्रतिशब्द तथा शब्द-व्युत्पत्ति वाच्यार्थ जानने के प्रधान साधन है।

पर्य्याय या प्रतिशब्द

एक शब्द के परिवर्त्तन में अन्य शब्द का प्रयोग करना 'प्रतिशब्द' कहलाता है। प्रतिशब्द' द्वारा किसी शब्द का अर्थ करना बड़ा सुगम है, किन्तु जिस शब्द का पर्य्याय लिखना हो उससे सरल शब्द लिखना चाहिये जैसे —

अश्व के लिये घोड़ा और गज के लिये हाथी।

धातु के साथ प्रत्यय के योग में, अथवा रूढ़ि रूप धातु के अर्थ में तथा समासों में आये हुए शब्दों से जो अर्थ होता है, उसे व्युत्पत्त्यर्थ कहते हैं। यौगिक और योगरूढ पदों के व्युत्पत्त्यर्थ का बहुत शीघ्र बोध होता है, जैसे :—

मेघ के समान नाद है जिसका सो मेघनाद, लम्बी है हनू (ठोडी) जिसकी सो हनूमान, शर का आसन है जिस पर, सो शरासन, नहीं रोग है जिसे, सो निरोग,तरंग उठती है जिसमें, सो तरंगिनी (नदी), शिव है इष्टदेव जिसके सो शैव।

लक्षणा

जहाँ शब्दों का सीधा सादा अर्थ न लगाकर प्रयोजन की रूढ़ि के कारण कोई निकट सम्बन्ध रखने वाला दूसरा अर्थ लिया जाय वहाँ 'लक्षणा' होती है। लक्षणा के द्वारा जो अर्थ जाना जाय वह 'लक्ष्यार्थ' कहलाता है, जैसे :—

गंगावासी पद में 'गंगा' पद का वाच्यार्थ जलप्रवाह है, उसमें वास करना असम्भव है, इसलिये गंगा-तीर-वासी अर्थ होगा। जिस लक्षणा द्वारा वाच्यार्थ का विपरीत अर्थ समझा जाय उसे 'विपरीत लक्षणा' कहेंगे जैसे—किसी दुबले काय व्यक्ति को देख कर कहा जाय कि 'कितना मोटा आदमी है!'

व्यञ्जना

वाच्यार्थ वा लक्ष्यार्थ को छोड़ कर जिसके द्वारा एक और अर्थ जाना जाय, उसे 'व्यञ्जना' कहते हैं। व्यञ्जना द्वारा जो अर्थ घटित होता है वह 'व्यंगार्थ' कहलाता है।

गेंद खेलने में किसी खिलाड़ी ने कहा 'अब तो अँधेरा हो गया' इसका अर्थ यह है कि खेल बन्द कर देना चाहिये।

सुनने वालों की पृथक्ता के कारण एक वाक्य के कई व्यंगार्थ हो सकते हैं।

कभी एक ही शब्द के अनेक वाच्यार्थ होते हैं—

पत्र—पत्ता, चिट्ठी।
पृष्ठ—पीठ सफा।
पय—पानी दूध, अमृत।
तात—माता, पिता भाई, मित्र, कोई भी आत्मीय।
गुण—रस्सी, हुनर, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण, ज्ञान, विनय, सत्त्व, लाभ (गुण नहीं किया) ज्या, महत्त्व।
रस—कड़ुआ, खट्टा आदि छै रस, करुणा आदि ९ रस, पारा, स्वर्ण आदि भस्म।
छन्द—इच्छा, पद्य।
बेला—कटोरा, एक बाजा, समय, फूल विशेष।
कर—हाथ, किरण, सूँड़।
अक्षर—ब्रह्म, तपस्या, मोक्ष, नित्य, ककारादि वर्ण।
अङ्क—चिह्न, गोद, रेखा, सख्यासूचक चिह्न, नाटक का परिच्छेद।
अचल—गति हीन, दृढ़, स्थिर, अविचलित, क्रियाहीन, पर्व्वत, अचला (पृथिवी)।

अच्युत—कृष्ण, विष्णु, स्थिर, अविनाशी।

अज—ईश्वर, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, राजा दशरथ के पिता, बकरी, मेढ़ा।

अनन्त—विष्णु, सर्पों का राजा, ब्रह्म, आकाश, अविनाशी, अंतहीन।

अन्तर—अवकाश, मध्य, छिद्र, अवसर, अवधि, अन्तर्द्धान, व्यवधान, तारतम्य।

अमर—देवता, पारा, वटवृक्ष।

अमृत—जल, पारा, दूध, अन्न, स्वर्ग अमृता (गिलोय)।

अरुण—सूर्य्य, सूर्य्य का सारथी रक्तवर्ण।

अर्क—आक का पौधा, सूर्य्य, ताम्र, इन्द्र, विष्णु, जेष्ठ भ्राता।

आत्मा—स्वरूप, ब्रह्म, परमात्मा, सूर्य्य, अग्नि।

उदय—उदयाचल पहाड़, उत्पत्ति, उद्गम, उत्थान, फलसिद्ध।

धर्म्म—पुण्य, स्वभाव, रीति, शास्त्र के अनुसार आचार-विचार।

अर्थ—अभिप्राय, प्रयोजन, धन।

हरि—विष्णु वानर, सर्प, किरण, सिंह।

एक से वाच्यार्थों का सूक्ष्म भेद

बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनका मोटी रीति से एकसा अर्थ प्रतीत होता है, परन्तु उनके अर्थों में वास्तव में अन्तर होता है, जैसे —अज्ञ और मूर्ख—

अज्ञ—जड बुद्धि।

मूर्ख—जिसे कुछ ज्ञान न हो।

दया और कृपा—

दया—पर दुःख दूर करने की स्वाभाविक इच्छा।

कृपा—छोटों के प्रति दया प्रकाशन।

अलौकिक और अस्वाभाविक—

अलौकिक—लोक और समाज में पहिले न देखा गया हो।

अस्वाभाविक—जो सृष्टि-नियम के विरुद्ध हो।

अलौकिक अस्वाभाविक हो सकता है किन्तु अस्वाभाविक अलौकिक नहीं हो सकता।

भ्रम और प्रमाद—

भ्रम—असावधानी से जहाँ भ्रान्ति हो।

प्रमाद—मूर्खता और मत्तता से जहाँ भ्रान्ति हो।

अज्ञान और अनभिज्ञ—

अज्ञान—जिसमें स्वाभाविक बुद्धि ही न हो।

अनभिज्ञ—जिसे समझने का अवसर ही न प्राप्त हुआ हो।

द्वेष और ईर्षा—

द्वेष—किसी कारण से एक मनुष्य दूसरे से घृणा करने लगे।

ईर्षा—निष्कारण दूसरे की बढती पर जलन। धनी से निर्धन और ज्ञानी से मूर्ख ईर्षा करता है।

श्रम, आयास, परिश्रम—

शरीर के अङ्गों (हाथ पाँव आदि) से काम करने को श्रम कहते हैं। मन की शक्ति लगाने में आयास, श्रम की विशेषता परिश्रम है। श्रम से शान्ति और परिश्रम से क्लांति होती है।

उत्साह, उद्योग, उद्यम, प्रयास, चेष्टा—

कार्य करने की उमंग होना उत्साह है। काम में लग पडने का नाम उद्योग है। उद्योग की स्थिरता उद्यम है। सफलता के समीप उद्यम का नाम प्रयास है। किसी कार्य का शाद्दिरी प्रयत्न चेष्टा है।

युक्ति, तर्क, वाद, वितण्डा, गल्प—
कार्य का हेतु दिखलाना युक्ति है। युक्ति की कसौटी तर्क है। किसी निर्णय पर पहुँचाने के लिये युक्ति-प्रत्युक्ति वाद है। स्वपक्ष स्थापना और परपक्ष निराकरण-कथाविशेष वितण्डा और गल्प है।

प्रेम, श्रद्धा, भक्ति, स्नेह, प्रणय—
साधारणत हृदय के आकर्षण का भाव प्रेम है। बड़ों में जो प्रेम हो वह श्रद्धा है। देवता में जो प्रेम हो वह भक्ति है। छोटों में जो प्रेम हो वह स्नेह है। स्त्री में जो प्रेम हो उसका नाम प्रणय है।

ज्ञान, बुद्धि, धी, मति—
किसी विषय का भली प्रकार जानना ज्ञान है। मन की ठीक वृत्ति का नाम बुद्धि है। विचारने की शक्ति धी है। इच्छा करने की शक्ति मति है।

मन, चित्त, मानस, हृदय, अन्त करण—
स्मरण रखने की शक्ति (ज्ञानेन्द्रिय) का नाम मन है। जानने वाली (चेतन) ज्ञानेन्द्रिय को चित्त कहते हैं। इच्छा-मय ज्ञानेन्द्रिय का नाम मानस है। अनुभव करने वाली ज्ञानेन्द्रिय का नाम हृदय है। बाह्य इन्द्रियों से सम्बन्ध न रहने पर अन्तःकरण है।

दुःख, शोक, क्षोभ, खेद, विषाद—
मन में दुःख होता है। चित्त की व्याकुलता शोक है। इष्ट लाभ न होने पर क्षोभ होता है। निराशा में खेद होता है। दुःख की विशेषता में कर्त्तव्य ज्ञान नष्ट होना विषाद है।

अभ्यास।

१—तत्सम और तद्भव शब्द किसे कहते हैं ?

२—नीचे लिखे शब्दों में बताइये कौन तद्भव हैं और कौन तत्सम ? तद्भव शब्दों के तत्सम, तत्सम के तद्भव रूप बताओ ?

हृदय, कोमल, करुणा, सिंघ, हाथी, पानी, सूआ, पितृ, गृहिणी, धरनि, विरह, दुति, जोगी, पीठ, घी, धी, पट्टी, प्रान्त, शान्ति, पीहर, वपहार, धान, गाय, भैंस, स्वभाव, मर्जाद।

३—दश तद्भव और दश तत्सम शब्द बतलाओ ?

४—अरबी, फारसी और अङ्गरेजी के दश दश ऐसे शब्द लिखो जो तद्भव रूप में हिन्दी में बोले और लिखे जाते हैं ?

५—अरबी, फारसी और अङ्गरेज़ी के शब्दों का प्रयोग तत्सम रूप में होना चाहिये या तद्भव में, युक्ति सहित लिखो ?

६—इन भाषाओं के कुछ ऐसे शब्दों के नाम बताओ जो तत्सम रूप में प्रयुक्त हैं ?

७—शब्दों में कै प्रकार की अर्थ शक्ति है ? कुछ ऐसे शब्द लिखो जिनका अर्थ लक्षणा से जाना जाय ?

८—व्यङ्गार्थ और वाच्यार्थ में क्या भेद है ? वाच्यार्थ जानने के कौन कौन प्रधान साधन हैं ?

शब्दों का वर्गीकरण

व्युत्पत्ति की दृष्टि से शब्दों के तीन भेद हैं—'रूढ़ यौगिक और 'योगरूढ़'। 'रूढ़' वह शब्द जो दूसरे शब्दों के योग से न बने हों, जैसे—नाक, हाथ, गात, रोटी, हाथी आदि

यौगिक, वह शब्द हैं जो दो शब्दों के योग से अथवा किसी शब्द में प्रत्यय लगा कर बनते हैं, जैसे—गुणी, त्यागी राजकोष, विश्वामित्र आदि।

योगरूढ़, वह शब्द है जो बने तो यौगिक शब्दों की भाँति हों परन्तु वह रूढ़ शब्दों ही की भाँति किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होते हों, जैसे —पंक+ज (पंक से है जन्म जिसका) व्युत्पत्ति के अनुसार पंक (कीच) से पैदा होने वाली सब वस्तुओं को पंकज कह सकते हैं, परन्तु केवल 'कमल' के अर्थ ही में उसका प्रयोग होता है।

वाक्यों में प्रयोग के अनुसार शब्दों के आठ भेद हैं —

वस्तुओं या प्राणियों के नाम बताने वाले शब्द संज्ञा।
संज्ञाओं का कुछ होना या उनका करना बताने वाले शब्द, क्रिया।
संज्ञाओं की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण।
क्रियाओं की विशेषता बताने वाले शब्द क्रिया विशेषण।
संज्ञाओं के बदले में आने वाले शब्द सर्वनाम।
क्रिया से नामार्थक शब्दों का सम्बन्ध सूचित करने वाले शब्द सम्बन्ध सूचक।
दो शब्दों या वाक्यों को मिलाने वाले शब्द समुच्चय बोधक।
मनोविकार सूचित करने वाले शब्द विस्मयादि बोधक।

उदाहरण।

१—अरे देव! तेरी लीला अपार है।
अरे-विस्मयादि बोधक अव्यय, इससे मनोविकार प्रगट होता है।
देव-संज्ञा (विशेष्य) एक नाम सूचित होता है।
तेरी-सर्वनाम, देव संज्ञा के बदले में आया है।
लीला-संज्ञा, देव के कर्त्तव्य का नाम है।
अपार-लीला का विशेषण है।
है-क्रिया, यह देव की लीला का होना बताती है।

२—राम और लक्ष्मण एक सुन्दर पहाड़ी पर चढ़ कर दक्षिण की ओर बड़ी गम्भीर दृष्टि से देखने लगे।

'राम' लक्ष्मण' संज्ञाओं का जोड़ने वाला 'और' पद 'समुच्चयबोधक' है।

'एक' और 'सुन्दर' दोनो पद पहाड़ी के विशेषण है।
'पर' पहाड़ी संज्ञा का कारक प्रत्यय है।
'चढ़कर' क्रिया है, राम लक्ष्मण का चढ़ना बताती है।
'दक्षिण' संज्ञा है क्योंकि एक दिशा का नाम है।
'की' प्रत्यय है।
'चारों' ओर का विशेषण है।
'ओर' सम्बन्ध वाचक पद है, क्योंकि वाक्य के दक्षिण पद से क्रिया का सम्बन्ध दिखाता है।
'बड़ा' और 'गभीर' दृष्टि के विशेषण हैं।
'बड़ी गभीर दृष्टि से', क्रिया विशेषण है क्योंकि देखा क्रिया की विशेषता बताता है।

'देखा' क्रिया है, क्योंकि राम लक्ष्मण ने उसे किया।

इनमें संज्ञा, क्रिया, सर्वनाम और विशेषण का वाक्य में रूपान्तर होता है इसलिये इन्हें विकार कहते हैं और 'क्रिया विशेषण' सम्बन्ध-वाचक' 'समुच्चय बोधक' और 'विस्मयादि बोधक' के रूप सदैव एक से रहते हैं, इसलिये इन्हें अविकारी अथवा अव्यय कहते हैं।

संज्ञा का लिङ्ग, वचन और कारक के कारण रूपान्तर होता है। सर्वनाम में वचन और कारक से विकार होता है।

क्रिया में काल वचन और लिङ्ग के कारण विकार होता है।

विशेषण जब अकेला संज्ञा की भाँति आता है तो संज्ञा की तरह विकृत होता है।

जब विशेषण संज्ञा अर्थात् अपने विशेष्य के साथ आता है तब केवल लिंग और कहीं कहीं वचन का उसमें विकार होता है।

कारक

संज्ञाओं की उस अवस्था को कारक कहते हैं जिससे वाक्य में संज्ञाओं का क्रिया या दूसरी संज्ञाओं से सम्बन्ध जाना जाता है।

संज्ञाओं की अवस्था अर्थात् कारकों के आठ भेद हैं—

(१) कर्त्ता—संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के व्यापार का होना या करना पाया जाय, उस रूप का 'कर्त्ता' कहते हैं जैसे —हरि खेलता है।

(२) कर्म—संज्ञा के जिस रूप पर क्रिया का फल रहे, जैसे —हरि को बुलाओ।

(३) करण—जिसके द्वारा कर्त्ता क्रिया को सिद्ध करे, जैसे —हरि से भिजवाया।

(४) सम्प्रदान—जिसके लिये क्रिया की जाय अथवा जिसको कुछ दिया जाय, जैसे —हरि के लिये लाया।

(५) अपादान—क्रिया के विभाग की अवधि को अपादान कहते हैं, जैसे —हरि से लाया।

(६) सम्बन्ध—वाक्य में किसी संज्ञा का किसी संज्ञा से ठीक ठीक सम्बन्ध प्रतीत हो, जैसे —हरि का घोड़ा है।

(७) अधिकरण—क्रिया के आधार को अधिकरण कहते हैं, जैसे —हरि में गुण हैं।

(८) सम्बोधन—संज्ञा के जिस रूप में किसी के द्वारा चेताने या पुकारने का भाव हो, जैसे —हे हरि!

कारकों अर्थात् संज्ञाओं के रूपान्तरों का प्रयोग 'कारक' और 'विभक्ति' वाले शीर्षक में देखिये।

अभ्यास

१—नीचे लिखे वाक्यों के शब्दों का वर्गीकरण करो —

मैं धर्म के लिये प्राण दे सकता हूँ ।

घोडा से बढकर कोई सवारी नहीं ।

'हानि लाभ जीवन मरन जस अपजस विधि हाथ' ।

'पामर प्रान न जायँ अभागे' ।

२—कौन कौन पद विकारी हैं और कौन से अविकारी और क्यों ?

३—कारक के भेद बताओ और ऐसे कौन से कारक हैं जिनका क्रिया से सम्बन्ध नहीं होता ?

४—क्या इन कारकों में कोई ऐसा भी है जिसका वाक्य में किसी दूसरे पद से सम्बन्ध नहीं होता ? (सम्बोधन)



द्वितीय अध्याय

वाक्य-विचार

वाक्य

जिस पद-समूह के योग से कोई पूरा भाव प्रकाशित हो जाय, उसे 'वाक्य' कहते हैं। वाक्य के पदों में परस्पर अपेक्षा होती है। किसी भाव को प्रकाशित करने के लिये व्यवहृत पद समूह में परस्पर सम्बन्ध होना चाहिये, नहीं तो वाक्य का अर्थ समझ में नहीं आवेगा। वाक्य के अन्तर्गत पदों के सम्बन्ध को 'आकांक्षा' 'योग्यता' और 'क्रम' कहते हैं।

आकांक्षा—मतलब समझने के लिये एक पद को सुन कर दूसरे पद को सुनने की इच्छा होती है, उसे 'आकांक्षा' कहते हैं, जैसे —'पेड़ से' इसके पीछे यह सुनने की इच्छा होती है 'पत्ते गिरते हैं'। 'वे सब चले गये' इसके पीछे यह कहना पड़ेगा—'जो रात को यहाँ ठहरे थे'।

योग्यता—वाक्य के पदों का अन्वय करने के समय अर्थ सम्बन्धी बाधा न हो, जैसे —'रेत पर तैरने लगा। यहाँ योग्यता के अनुसार पद विन्यास नहीं है, रेत पर कोई नहीं तैरता, पानी पर तैरते हैं।

क्रम—योग्यता और आकांक्षा-युक्त पदों के ठीक रीति से स्थापन करने को 'क्रम' कहते हैं, जैसे —'पानी' इसके पीछे ही "बरसता है" लिखना पड़ेगा।

'पिता की' बड़ा धर्म है 'आज्ञा मानना'।
इसमें क्रम नहीं है, अतः वाक्य नहीं है।

वाक्य यह है 'पिता की आज्ञा मानना बड़ा धर्म है'। अतः दूसरे रूप में वाक्य की परिभाषा इस प्रकार हुई—"किसी आकांक्षा, योग्यता, क्रम सहित पद-समूह को 'वाक्य' कहते हैं।"

अभ्यास

(१) वाक्य किसे कहते हैं ?

(२) वाक्यों में किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिये ?

(३) नीचे लिखे वाक्यों में क्या दोष है ? उन्हें दूर करके शुद्ध वाक्य बनाओ।

(क) बढ़ई बसूले से कपड़ा सीता है। (ख) मैं आता हूँ रोटी खाकर आगरे को। (ग) आम से गिरता है पेड़। (घ) नदी में आग बहती है।

(४) नीचे लिखे वाक्यों में आकांक्षा मिलाकर वाक्य बनाओ—

नदी पार करने के लिये	।	क़लम
कागज मैला	।	छतरी की तान
रेल की पटरी	। मेरी पुस्तक	। घोड़े की टाँग
दूकान	। प्रचण्ड वायु	। निर्मल आकाश

वाक्यांश

जिन सब पदों से मन का पूरा भाव प्रकाशित न हो क केवल भाव का कुछ भाग प्रकाशित हो, उसे 'वाक्यांश' कह हैं, जैसे '—'महाराज बड़ौदा ने कहा 'कल रात को महात्म गांधी'।

कहीं कहीं एक पद भी वाक्यांश हो जाता है, जैसे —'रा गये' में दोनों पद वाक्यांश हैं। 'वह कार्य करना है, जो कल कहा था।' इसमें दोनों वाक्य वाक्यांश हैं।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यांशों में शेष पद मिलाकर पूरे वाक्य बनाओ —

—पुस्तक रक्खी रक्खी ।	५—चाहन ।
—मैं ठोकर खाकर ।	६—सूर्य के प्रचण्ड ताप से ।
—मनोहर वाटिका में जाते ही ।	७—मोहन ऐसा सुन्दर ।
—कोयल की मधुर ध्वनि सुनते ही ।	८—हरिहर ने ।

वाक्य खंड ।

वायु वेग से बह रही है। पुष्प खिल रहे हैं। भारतवर्ष सुहावना प्रदेश है। मोहन परोपकारी बालक है।

इन वाक्यों में 'पुष्प' 'वायु' 'भारतवर्ष' और 'मोहन' के नाम हैं। हर एक वाक्य में किसी नाम के सम्बन्ध में कुछ न कुछ कहा गया है।

वाक्य में जिस पदार्थ अथवा प्राणी के सम्बन्ध में कुछ चर्चा की जाती है उसे उद्देश्य कहते हैं। किसी पदार्थ या प्राणी के बारे में जो कुछ वर्णन होता है उसे विधेय कहते हैं। ऊपर के वाक्यों की उद्देश्य विधेय तालिका नीचे दी जाती है —

उद्देश्य	विधेय
पुष्प	खिल रहे हैं
वायु	वेग से बहती है
भारतवर्ष	सुहावना प्रदेश है
मोहन	परोपकारी बालक है

उद्देश्य और विधेय मिलकर पूरा वाक्य होता है।

अभ्यास

नीचे के वाक्यों में से उद्देश्य और विधेय पृथक् पृथक् करो —

यमुना मंद मंद बह रही है। वर्षा होने की सम्भावना है।

सत्य ही सब से बड़ा धर्म है। अन्याय नहीं करना चाहिये।
भारत कृषि प्रधान देश है। विज्ञान की शिक्षा का प्रबन्ध नहीं है।
नीचे लिखे उद्देश्यों के साथ विधेय मिलाओ —

हिमालय	।	परमात्मा
दया	।	प्रेम
उपकार	।	स्वास्थ्य

नीचे के विधेयों के साथ उद्देश्य जोड़ो :—

" शक्ति बढ़ती है।
गाया जाता है।
सदा हितैषी है।

वाक्य भेद

(१) सरल वाक्य

सरल वाक्य में एक उद्देश्य या कर्त्ता और एक विधेय समापिका क्रिया अवश्य होती है। प्रायः उद्देश्य और ... अन्य नाना प्रकार के पदों के मिलने से बढ़ जाते हैं, इसलि... एक वाक्य में दो से अधिक पद होते हैं। वाक्य में उद्देश्य औ... विधेय के अतिरिक्त जितने पद हों उनमें से कुछ तो उद्देश्य ... सहकारी होंगे और कुछ विधेय के। सहकारी पद सहि... मुख्य उद्देश्य, उद्देश्य के अन्तर्गत और सहकारी पद सहि... मुख्यविधेय, विधेय अंश के अन्तर्गत समझे जाते हैं। य... क्रिया सकर्मक होगी तो उसका कर्म भी विधेयवाच्य होगा... जैसे :—'घोड़ा घास खाता है'—इसमें घास सहित खाता पद विधेय होगा। उद्देश्य और विधेय जिस प्रकार सहका... पदों के मिलने से बढ़ जाते हैं उसी प्रकार कर्मादि भी अ... पदों से बढ़ते हैं, जैसे —"मुझे एक पका फल मिला" इस... 'फल' कर्म 'एक' और 'पका' दो विशेषणों द्वारा बढ़ा हु... है। विशेष्य, (संज्ञा) सर्वनाम और विशेष्य रूप से आया ...

वाक्यांश, विशेषण और क्रियार्थक संज्ञा, यह उद्देश्य और कर्म रूप में आते हैं, जैसे :—

विशेष—राम प्रदर्शिनी देखता है।

सर्वनाम—वह मुझे प्यार करता है।

विशेष्य रूप में आया विशेषण—शिक्षित, अशिक्षितों को घृणा से देखते हैं।

क्रियावाचक संज्ञा—खाना कहने से भोजन करना समझा जाता है।

वाक्यांश—बिना पूछे ले जाना चोरी करना कहाता है।

जिन पदों के नीचे रेखा है वह उद्देश्य और जिनके ऊपर रेखा है वह कर्म है।

विशेषण, विशेषण भाव वाले विशेष्यादि पद और वाक्यांश के मिलने से उद्देश्य व कर्म बढ़ता है, यथा —

विशेषण द्वारा—सुन्दर बालक उत्तम पुस्तक पढ़ता है।

सम्बन्ध पद द्वारा—राम का मित्र हमारी बात सुनता था।

विशेष्य द्वारा—राजा रामचन्द्र पुरोहित वशिष्ठ से कहने लगे।

वाक्यांश द्वारा—मंत्री ने विद्रोह का सम्वाद पाकर उसमें लिप्त सब को पकड़वा लिया।

नीचे की रेखा वाले पदों से विशेष्य और ऊपर की रेखा वाले पदों से कर्म बढ़ाया गया है।

उक्त प्रकार के दो या बहुत से पदों की सहायता से भी उद्देश्य और कर्म बढ़ाया जा सकता है, यथा —

बीस वर्ष की आयु वाला राम का पुत्र मोहन, अत्यन्त लाभदायक दो सौ पन्ने की पुस्तक लिख रहा है।

विधेय

एक ही क्रियापद पूरा अर्थ प्रकाशित करे उसे 'सरल विधेय' कहते हैं।

यथा—मैं पुस्तक लिखता हूँ। इस वाक्य में 'लिखता हैं' एक ही क्रिया, पद के द्वारा वक्ता का सम्पूर्ण आशय प्रकाशित हो जाता है इसलिये यह सरल विधेय है।

विधेय यदि अपूर्ण अर्थप्रकाशक क्रिया हो और उसके साथ पूर्ण अर्थ प्रकाशक सहकारी पद हो तो उस विधेय को 'जटिल विधेय' कहते हैं, जैसे —आकाश परिष्कृत हुआ, सूर्य उदय हुआ, यहाँ परिष्कृत और उदय पद न होने से केवल हुआ से पूरा अर्थ प्रकाशित नहीं होता, इसलिये 'उदय' 'परिष्कृत' पद 'हुआ' सहित जटिल विधेय है।

क्रिया विशेषण या क्रिया विशेषण भाव वाले पद या वाक्यांश द्वारा विधेय परिवर्द्धित होता है, यथा —राम शीघ्र आया है, उसने बहुत समय बिता दिया। तुम स्पष्ट करके कहो। यत्नपूर्वक कार्य करो।

कारण, अपादान और अधिकरण पद भी विधेय को परिवर्द्धित करते हैं, यथा —मैं आँखों से देखता हूँ। हृदय से चाहता हूँ। लाठी से मारता हूँ। आकाश से पानी गिरता है। पक्षी आकाश में उड़ता है। वह कल रात को आया था। सूर्योदय से अन्धकार दूर हुआ।

असमापिका क्रिया द्वारा भी विधेय परिवर्द्धित होता है, यथा —दौड़ते दौड़ते कहने लगा, मैं सुन्दर दृश्य देखते देखते अवाक् रह गया।

अर्थ के विचार से विधेय वर्द्धक के छः भेद होते हैं, जैसे –
कालवाचक—कल आऊँगा, उसका उत्तर आने तक ठहरूँगा।
रीतिवाचक—धीरे धीरे ज्ञान होता है, शान्ति से सोचो।
परिमाणवाचक—थोड़ा सोचना भी चाहिये।
कारण वाचक—तुम्हारे दर्शन से प्राण बच गये।
कार्यवाचक—मेरे लिये ऐसा क्यों करते हो।
स्थान वाचक—मेरे पास वह आया, यहाँ से चला गया।

(२) जटिल वाक्य

जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय मुख्य हो और उसकी सहायक एक या कई क्रियाएँ हों उस को जटिल वाक्य कहते हैं, यथा —'मैं जानता हूँ उसने बड़ा अन्याय किया।' 'किस प्रकार ऐसा हुआ यह मैं नहीं समझ सकता।'

जटिल वाक्य का जो अंश प्रधान उद्देश्य और प्रधान विधेय है, उसको प्रधान अंश, और अन्य भाग को आनुषङ्गिक कहते हैं। पहले उदाहरण में 'मैं जानता हूँ' प्रधान अंश और 'उसने बड़ा अन्याय किया' यह इस अंश का आनुषङ्गिक है। आनुषङ्गिक अंश दो प्रकार का होता है—एक विशेष्य-भाव प्राप्त दूसरा विशेषण भाव प्राप्त।

जो आनुषङ्गिक वाक्य विशेष्य भाव वाला हो उसे 'विशेष्य भावापन्न वाक्य' कहते हैं, जैसे :—उसने जो साहस का किया था मुझे सब मालूम है, अर्थात् उसका साहस मुझे मालूम है। 'मैं देख कर आया हूँ' उसकी कैसी दशा है अर्थात् मैं उसकी दशा देखकर आया हूँ 'मैं इच्छा करता कि, सब सुखी हों' अर्थात् मैं सब के सुख की इच्छा करता हूँ।

जटिल वाक्य में "विशेष्य भावापन्न आनुषङ्गिक उद्देश्य और कर्म दोनों हो सकते हैं। पहले उदाहरण में आनुषङ्गिक अंश उद्देश्य और दूसरे व तीसरे में कर्म रूप से आया हुआ है।"

जो आनुषङ्गिक वाक्य किसी विशेष्य व सर्वनाम की क्रिया का गुण प्रकाश करे उसे 'विशेषण-भावापन्न-वाक्य' कहते हैं 'जो मनुष्य केवल स्वार्थ देखता है सो प्रकृत-सुखी नहीं होता' अर्थात् स्वार्थी मनुष्य सच्चा सुखी नहीं होता। 'उन्होंने जो बात कही थी मुझे भली प्रकार याद है', अर्थात्, उनकी कही हुई बात मुझे भली प्रकार याद है।

आनुषङ्गिक-विशेषण-भावापन्न वाक्य, उद्देश्य और कर्म और विधेय विशेषण भी हो सकता है, यथा —'आज जो वृष्टि हुई है, उससे विशेष उपकार होगा', अर्थात्, आजकी वृष्टि से विशेष उपकार होगा। 'उन्होंने जो रुपया भेजा था मुझे मिल गया' अर्थात् उनका भेजा हुआ रुपया मुझे मिल गया। इस औषध को जब तुम खाओगे तभी लाभ

पहुँचायगी, अर्थात् यह औषधि खाते ही लाभ पहुँचायगी। प्रथम उदाहरण वाक्य में, आनुषङ्गिक वाक्य उद्देश्य का, दूसरे में कर्म का, तीसरे में विधेय का विशेषण है। इसलिये प्रथम दो 'विशेषण' और अन्तिम आनुषङ्गिक वाक्य क्रिया विशेषण भाव वाला है।

(३) यौगिक वाक्य

जिसमें अनेक व कुछ सरल और कुछ जटिल वाक्यों का मेल हो उसे 'यौगिक वाक्य' कहते हैं, जैसे —राम तो आये हैं पर हरि नहीं आवेंगे। राम जायँगे अथवा हरि जायँगे। यहाँ भिन्न भिन्न सरल वाक्य 'और' 'अथवा' 'किन्तु' योजकों द्वारा मिल कर यौगिक वाक्य होते हैं।

अभ्यास

१—नीचे लिखे वाक्यों के कारण सहित प्रकार बताओ।

मुझे तुम से यह कहना था कि कभी पत्र तो भेज दिया करो। शीतल मन्द-सुगन्ध वायु बहती है। पीली गाय को देखकर मेरा चित्त प्रसन्न हुआ। मुझे हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की बैठक में सम्मिलित होना है। जीवन पथ-प्रदीप जैसा अच्छा छपा है, रचना प्रबोध भी वैसा ही छपा है। भाषा के द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर प्रगट करता है और दूसरों के समझता है। वही भाग्यवान है जिसे सब प्यार करते हैं। स्वास्थ्य को खोकर विद्या प्राप्त करने से क्या होता है। धर्म ही मनुष्य का सच्चा मित्र है। जो क्रिया-शील हैं वही सब कुछ कर सकते हैं।

२—सरल-वाक्य और जटिल-वाक्य में क्या अन्तर है दोनों प्रकार के पाँच पाँच वाक्य लिखो।

३—उद्देश्य और विधेय किन किन पदों द्वारा बढ़ सकते हैं नाच लिखे वाक्य के उद्देश्य को उचित प्रकार से बढ़ाओ।

"मोहन ने पारितोषिक पाया"

"मोहन" कर्त्ता को विशेषण द्वारा, विशेष्य द्वारा, सम्बन्धकारक द्वारा और सर्वनाम द्वारा बढ़ाओ।

"पारितोषिक पाया" विधेय को, करण, अधिकरण सम्बन्ध अपादान, द्वारा बढ़ाओ।

वाक्य विश्लेषण

सरल वाक्यों का विश्लेषण इस प्रकार होगा :—

१—पहले उद्देश्य-पद निर्देश करना पड़ेगा।

२—जिन जिन पदों के द्वारा उद्देश्य बढ़ाया है उनका निर्देश करना पड़ेगा।

३—विधेय पद का निर्देश। यदि विधेय पद पूर्ण अर्थ प्रकाशक नहीं है तो पूर्ण-अर्थ प्रकाशक अंश भी उसी के साथ निर्देश करना पड़ेगा।

४—यदि विधेय सकर्मक क्रिया है तो उसका कर्म निर्देश करना पड़ेगा।

५—कर्म पद जिन पदों के द्वारा बढ़ाया गया है उनका निर्देश करना पड़ेगा।

६—विधेय पद जिन सब पदों के द्वारा बढ़ाया गया है उन सबका निर्देश करना पड़ेगा।

विश्लेषण चित्र

(१) बन्दर की टाँगें मजबूत होती हैं।

(२) कल से पानी बरस रहा है।

(३) धीरजवान मनुष्य कठिनाइया से नहीं घबड़ाता।
(४) चरित्र ही मनुष्य का सब से बढ़ कर गहना है।
(५) हिन्दी-भाषा का इतिहास अभी तक नहीं मिला।
(६) राम ने सुन्दर पुस्तक दान की।

वाक्य	उद्देश्य अंश		विधेय अंश				
	मुख्य उद्देश्य	उद्देश्य विस्तार	विधेय	विधेय पूरक	कर्म	कर्म विशेषण	विधेय विस्तार
१	दाँतें	बन्दर की	होती हैं	मजबूत			
२	पानी		रहा है	बरस			बल से
३	मनुष्य	धीरजवान	घबड़ाता है	नहीं			कठिनाइयों से
४	चरित्र ही		है	गहना			मनुष्य का सब से बढ़ कर
५	इतिहास	हिन्दी भाषा का	मिला	नहीं			अभी तक
६	राम ने		की	दान	पुस्तक	सुन्दर	

जटिल वाक्य

पहले जटिल वाक्य में कौन अंश प्रधान है और कौन आनुषङ्गिक है, यह ढूँढ़ना पड़ेगा। फिर आनुषङ्गिक वाक्य को 'पद विशेष' समझ कर, समग्र वाक्य का विश्लेषण करना पड़ेगा। फिर आनुषङ्गिक वाक्य का पृथक् रूप से विश्लेषण करना पड़ेगा; यथा —

वाक्य—"आज वह न आवेंगे, मैंने पहिले ही कहा था"।

इस जटिल वाक्य में 'मैंने पहिले ही कहा था' यह प्रधान अंश और 'वह आज नहीं आवेंगे' आनुषङ्गिक अंश है।"

(१)	उद्देश्य—	मैंने
	उद्देश्य विस्तार	
	विधेय	कहा था
	कर्म रूप वाक्य	आज हरि नहीं आवेंगे।
	विधेय विस्तार	पहिले ही (काल वाचक)

(२) 'आज हरि नहीं आवेंगे' इस वाक्य में—

उद्देश्य—हरि

विधेय—नहीं आवेंगे

विधेय विस्तार—आज

यौगिक वाक्य

जिन सब वाक्यों से मिलकर 'योगिक वाक्य' बना है, उनका अलग २ विश्लेषण कर के पीछे जिन योजकों द्वारा वह मिले हैं उनको दिखाना चाहिये। और यदि यौगिक वाक्य सरल वाक्यों से बना हो तो सरल वाक्य की रीति के अनुसार और यदि जटिल वाक्यों से बना हो तो जटिल वाक्य की रीत्यानुसार विश्लेषण करना चाहिये।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों का विश्लेषण करो —

(१) राजा महानन्द एक दिन हँसते २ जनाने में आरहे थे।

(२) "शकटार शूद्र और राक्षस ब्राह्मण था जो दोनों अत्यन्त बुद्धिमान् और महा प्रतिभा सपन्न थे।"

(३) अन्त में कारागार की पीड़ा से एक एक करके उसके परिवार के सब लोग मर गये।

"किसी कर्त्तव्य के न करने अथवा किसी अनुचित कार्य्य के करने के पश्चात् जो हृदय में वेदना होती है उसे पश्चाताप कहते हैं।"

"जो सदा अपराध करते रहते हैं उनको भी किसी समय हार्दिक-वेदना, अपने अपने अनुचित कार्यों पर होती है।"

पश्चाताप केवल बाहरी नहीं, किन्तु हार्दिक होना चाहिये।"

"यह पहले ही कहा जा चुका है कि सर्वांश में कहावतों का हर पहलू ठीक नहीं होता।"

कारक और उनकी विभक्तियाँ

पद-स्थापन प्रणाली समझाने से पहले कारक और उनकी विभक्तियों के व्यवहार का पूरा ज्ञान हो जाना चाहिये। संस्कृत व्याकरण में विभक्तियों और कारकों को पृथक २ माना है किंतु हिन्दी के वैयाकरणों ने प्राय कारक और उनकी विभक्तियों को एक ही रूप दिया है। संस्कृत में एक ही विभक्ति में कई कारकों का प्रयोग होता है। हिन्दी में भी यह बात है परन्तु बहुत कम। संस्कृत में ७ विभक्तियाँ और छ कारक माने जाते हैं, सम्बन्ध को कारक नहीं मानते, क्योंकि क्रिया से उसका कोई सीधा सम्बन्ध नही है और सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति मानते हैं। किन्तु हिन्दी में आठ कारक है और उनकी ८ विभक्तियाँ हैं। हिन्दी में विभक्तियाँ स्वतन्त्र नहीं हैं।

कर्त्ता के अधिकाश प्रयोगों में कोई विभक्ति नहीं होती। हिन्दी आकारान्त पुल्लिंग शब्दों को छोड़ शेष पुल्लिंग शब्दों का मूल रूप ही उस कारक के दोनों वचनों में आता है। पर स्त्री-लिंग शब्दों और आकारान्त पुल्लिंग शब्दों के बहुवचन में रूपान्तर होता है। हिन्दी में कर्त्ता कारक की जो 'ने' विभक्ति आती है वह कर्तृवाच्य के अप्रधान कर्त्ता के साथ आती है।

कर्म और सम्प्रदान की विभक्ति 'को' है परन्तु बहुधा कर्म में 'को' लोप हो जाता है। कहीं २ सर्वनामों में 'ए' 'ए' रूपान्तर हो जाता है।

करण और अपादान की विभक्ति 'से' है अर्थ के बल से इनके रूप का निश्चय किया जाता है।

सम्बन्ध की विभक्ति 'का', 'के', 'की' सर्वनामों में 'ना', 'ने' 'नी' व 'रा' 'रे', 'री' हो जाती हैं।

सम्बोधन के चिह्न 'हे', 'अरे' आदि हैं जो सम्बोधन पद के पूर्व आते हैं। कभी २ सम्बोधन का चिह्न लुप्त रहता है।

उदाहरणों के लिए वाक्यों में संज्ञा और सर्वनाम का प्रयोग नीचे दिया जाता है।

कर्त्ता (प्रथम कारक) में

'विद्यार्थी' पढ़ता है।	'अश्विनी', 'भरणी' आदि नक्षत्र हैं
बात' कही जाती है।	हरि 'पागल होगया है।
'गीत' गाया गया।	मैं तुम्हें 'विद्वान्' समझता था।
'घर' बन गया।	'कहना' 'सुनना' होगई।
'घड़ा भर' दूध है।	हमारा 'जीवन' वृथा है।
'आध सेर' 'घी' है।	यह 'संसार' मिथ्या है।
'ज्ञान' सब से उत्तम धन है।	दशरथ नाम का 'राजा' था।
'मोदर' 'घोड़ा'	तुमको 'भाई' समझता हूँ,

कर्मकारक

। को समझाया।	'उसे' (उसको) बुलाओ।
। पढ़ी।	'दो पहर को' छुट्टी हो जावेगी।

'तुम्हें' (तुमको) क्या हुआ। 'तुमको ज्ञान प्राप्त होगा।
'खेलने को' चला गया। 'गाय को' दाना खिलाया।
हरि 'आगरे (को) गया। 'लड़कों को' पुस्तक नहीं मिली।
'कितनों को' ठगा है। 'स्नान' 'संध्या' 'पूजा' करो।
'साथियों को' भगा दिया। 'गोकुल को' पुकारो।
'गुरु का' दयालु होना चाहिये। 'मुझे' जाना होगा।
'कहनी' कहे तो 'करनी' करे। 'तुमको' रुन्य है।
'मोहन को' बुलाया।

करण कारक में

'पैरों से' चलते हैं। 'रुई से' वस्त्र बनते हैं।
'खड्ग से' प्राण लिये। 'प्रयत्न से' फल मिलता है।
'विद्या से' धन मिलता है। 'चाल से' पहचान लिये।
उसने 'क्रोध से' देखा। 'कानों' सुनी 'आँखों' देखी बात है
सारी 'शक्ति से' सहायता की।
किस 'भाव से' बेचते हो। 'धन से प्रयोजन है।
'चाव से' पढ़ा। 'रोने गाने से' क्या हुआ ?
भगवाँ 'पहनने से' साधु समझा। 'शरीर से' स्वस्थ हैं।
पाँच सो 'रुपयों से' क्या होगा।

सम्प्रदान में

राजा ने दरिद्रियों को' भोजन दिया। 'राम को' यह योग्य नहीं था। 'मैं स्नान को' जाता हूँ।

'आपको' यह उचित है। 'पण्डित जी को' नमस्कार।
'युद्ध को' चल दिया।

शिष्यों को' गुरु जी की आज्ञा माननी चाहिये।	भेट को' लाया हूँ। 'उनको' क्या भेजना चाहिये।

अपादान

राम 'घोडे से' गिर पड़ा।	बुढापे में मनुष्य 'चलने फिरने से' रहित हो जाता है।
गिरीश आज 'दिल्ली से' आया है।	मूर्ख 'विद्या से' अनभिज्ञ होते हैं।
उससे' यह ढंग ही जुदा है।	माता 'पिता से' अधिक पूज्य है।
यह पुस्तक 'उससे' भिन्न है।	हिमालय 'भारतसे' उत्तर ओर है।
उन्हें 'राम से परिचय है।	'मथुरा से' वृन्दावन पाँच मील हे
श्रीमान् 'गिरधर शर्मा से' मेरा साक्षात् हुआ।	'तन-मन धन से' सेवा करो।
"धन से' विद्या उत्तम है।	जाडे के दिनों में 'दश बजे से' चार बजे तक स्कूल खुला करते हैं।
'दिल्ली से' आगरा दूर हे।	वह 'सिंह से' डर गया।
हैदराबाद 'मध्यप्रान्त से' परे है।	राम 'घर से' भाग गया।
यह व्यक्ति 'बुद्धि से' हीन है।	

सम्बन्ध कारक

'महात्मा का' का उपदेश है।	'भाई की' प्रतीक्षा की।
'पण्डित का' पाण्डित्य नहीं रहा।	'सिर के' बाल सफेद होगये।
'बालू की' भीत है।	'काठ की' नाव है।
'सुवर्ण के' आभूषण बने हैं।	'बिहारी की' सतसई पढो।
'राजा के' समान मन्त्री दयालु नहीं।	'राजा की' पुत्री चली गई।
'आम के' सदृश फल नहीं।	तीन 'हाथका डण्डा' लाओ।
'राजा की' आज्ञा के अनुसार।	'जमुनाका' पाट बढ़ गयाहै।
	'दश कोस का' फर्क है।

'बीस वर्ष का' पुत्र होगया ।	बीस वर्ष की' गाय ।
'दोवर्ष की' बात है ।	एक 'आने का' चाकू लाओ ।
यह 'कहने के' योग्य है ।	उसको 'रुपके का' डर है ।
'खेत का खेत' नाश हो गया ।	सुदामा 'जन्म के' दरिद्री थे ।
'घर के' समीप ।	
सब के' सब चले आये ।	मैं 'उनके' साथ घर जाता हूं ।
'रोटी का' खाना ।	'मेरा' काम 'उसका' नाम ।
'गाँव की' सड़क ।	'तुम्हारा' रुपया ईश्वरका' ध्यान

नोट—समास में सम्बन्ध की विभक्ति लोप होजाती है ।

अधिकरण

"जल में' मछली रहती है ।	'चैत्र में' गुलाबी जाड़े पड़ते हैं ।
'नदी के तीर पर' वृक्ष है ।	रस्सी में' गाँठ लगी है ।
वह 'कम्बल पर' सोता है ।	रात्रे मेरे 'कहने में' नहीं ।
उसकी 'ज्ञान में' प्रवृत्ति है ।	दश 'रुपये में' गाय बेची ।
वह अपनी 'ध्वनि में' मस्त है ।	चिड़िया 'हाथ' न आई ।
ईश्वर 'सब में' व्याप्त है ।	दिन भर प्रयत्न किया परन्तु
'धातुओं में' स्वर्ण श्रेष्ठ है ।	टका 'हाथ' न आया ।
ऐसा करो 'जिसमें' यह हो ।	हमारे निकट 'पुस्तक' रक्खी है ।
दुशाला 'देखने में' सुन्दर है ।	वह पुस्तक 'देखने में' लगा है ।

अभ्यास

१—नीचे लिखे वाक्यों में बड़े अक्षरों के पद किन कारकों में प्रयुक्त हैं ।

हाथ से रुपया दिया था । बुद्धि से काम नहीं किया । मुझसे नहीं होता । तुम्हें प्रणाम है । मेरे पास से गिर गया । सुधार

क्या अर्थ है। तुम्हारी बात नहीं समझा। दूध है न दही। दूध बना जाता है। रात होने को है। न्यायालय क्या है? आदर्श ऐसे एक बात में तो आदर्श ही है। मोहन की अपेक्षा सोहन चतुर है। घर ऊँचा है। उसका नामकरण संस्कार होगा। कारन कवन नाथ मोहि मारा।

२—नीचे लिखे हुए पदों को वाक्यों में प्रयुक्त करो—

हरि	प्रभाव,	गान,	कर्म और अधिकरण में
शान्ति,	दया,	प्रेम,	अपादान और करण में
धृष्टता,	विद्वता,	धैर्य्य,	कर्त्ता और सम्प्रदान में

३—कुछ ऐसे वाक्य लिखो जिसमें अधिक से अधिक कई कारकों का प्रयोग हो सके।

वाक्य रचना

भाषा की रीति के अनुसार वाक्य के पद-समूह जोड़ने का नाम 'वाक्य रचना' है।

वाक्य गद्य और पद्य भेद से दो प्रकार के होते हैं—

छन्दोबद्ध वाक्य को पद्य कहते हैं।

जिसमें कारक और क्रिया आदि का नियमपूर्वक स्थापन हो, उसे गद्य कहते हैं।

इस पुस्तक में गद्य-वाक्य-रचना पर ही विचार किया जायगा। वाक्य-रचना के साधारण और स्थूल नियम —

कर्त्ता और समापिका क्रिया वाक्य के प्रधान अंग हैं, इस लिये वाक्य रचना में पहले कर्त्ता और पीछे समापिका क्रिया लाते हैं, जैसे —फूल खिला है, धूप पड़ती है।

यदि क्रिया सकर्मक हो तो, कर्म पद क्रिया के पूर्व आता है, द्विकर्मक होने से पहले गौण-कर्म और पीछे मुख्य-कर्म रहता है, जैसे —वह पुस्तक पढ़ता है, वह श्यामा को खेल दिखाता है,

पूर्वकालिक-क्रिया समापिका-क्रिया के पहले आवेगी, जब कि दोनों का कर्त्ता एक होगा। और जिस क्रिया के जो कर्म, करण आदि पद होंगे वह उस से प्रथम आवेंगे जैसे —उसने हाथ से हार बनाकर गले में पहना दिया।

प्राय विशेषण पद अपने विशेष्य से प्रथम रहता है। यदि दो वा अधिक विशेषण पद एक साथ आवें, तो उनके बीच में संयोजक अव्यय नहीं रहता, जैसे —

कर्मवीर गोखले की मृत्यु से भारत की बहुत बड़ी हानि हुई।

सर्वनाम पदों के विशेषण-प्राय पीछे आते हैं, जैसे —
वह बुद्धिमान कहने लगा—'अभी ठहरो।'

जिस स्थान पर दो वा अधिक विशेष्य पद उद्देश्य-विधेय भाव से जुड़े हों, उस स्थान पर विधेय पद पीछे और उद्देश्य पद पहले लिखा जायगा, जैसे —धर्म ही सच्चा मित्र है। विद्या अमूल्य रत्न है, भारतवर्ष हमारी जन्मभूमि है।
विशेषणी भूत सर्वनाम अपने विशेष्य से पूर्व रहता है, जैसे —

जो मनुष्य अपना कर्त्तव्य पालन करता है, वह पूजनीय है। जो स्वार्थवश दूसरों को दुःख पहुँचाते हैं, वे मनुष्य घृणित हैं।

सम्बोधन पद, वाक्य के प्रारम्भ में रहता है और उसके चिह्न 'हे' 'अरे' 'हा' अव्यय, ठीक सम्बोधन पद के पूर्व रहते हैं। कभी २ ये चिह्न लुप्त भी रहते हैं, जैसे —सीते, तुम यहाँ

हो, अरे अभागियो ! तुम अब तक सोये पडे हो, वसन्त का कुछ खबर ही नहीं ।

सम्बोधन पद के ठीक पीछे मध्यम पुरुष—सर्वनाम रहता है । सम्बोधन-पद जिस वचन का हो, उससे पीछे आने वाला सर्वनाम भी उसी वचन का होगा । आदर व गौरव-स्थल पर सम्बोधन से परे 'आप', समानता, बन्धुता और स्नेहादि स्थल पर "तुम" और अनादर आदि के स्थल पर 'तू' यह सर्वनाम आता है । कहीं 'तू' को भी बराबर वाले और छोटे लोगों के लिये बोलते हैं, कहीं २ भक्त लोग ईश्वर के लिये भी 'तू' कहते हैं, जैसे :—

हे ईश्वर ! आप हमारी रक्षा करो, हे नीच ! तू क्या करता है ? चन्द्र, तुम कहाँ जाओगे ? हे परमेश्वर तू कहाँ है !

विलापादि के समय 'हा' 'हे' अव्यय बोले जाते हैं, जैसे — "हा ईश्वर ! तेरी क्या मर्जी है ? हे सती साध्वी जानकी ! तुमने ससार के सामने पतिव्रत धर्म का कितना बडा आदर्श खडा किया है ।"

सम्बन्ध-पद से परे उसके सम्बन्धी-पद का प्रयोग होता है, जैसे —"यह राम की पुस्तक है ।" यदि सम्बन्धी पद का कोई विशेषण हो तो वह सम्बन्धी पद से पूर्व ही रहता है, जसे —"उसका निर्मल हृदय छार छार होगया ।"

जहाँ सम्बन्धी पद का उद्देश्य-विधेय रूप से अन्वय हो, वहाँ विधेय-पद वाक्य में पहले ही आता है, जैसे — 'दूसरों को हानि पहुचाना ही दुष्टों का काम है ।" "देश की भलाई करना ही सज्जनों का धर्म है" ।

प्रश्नोत्तर के सिलसिले में कभी २ सम्बन्धी पद पीछे आता है, जैसे —यह पवित्र काम किसका है ?

करण पद कर्तृ पद के पीछे और कर्म से प्रथम आता है, और उसका विशेषण उससे पूर्व रहता है, जैसे —उन्होंने बड़े परिश्रम से इस कार्य का साधन किया, उसने दृढ़ और पवित्र प्रेम द्वारा अपने हृदय को विकसित किया।

जिस सम्पूर्ण अर्थ में अपादान कारक होता है उसी सम्पूर्ण अर्थ-बाधक पद से पूर्व अपादान पद रहता है, जैसे — "वह तुम्हारे इस काम से असन्तुष्ट है, वह कल दो पहर घर से चल पड़ा हुआ वह अपने पापों से भयभीत होकर त्राहि त्राहि करने लगा।"

विशेषण सहित कर्म, और अधिकरण पद अपादान से पीछे आते है, किन्तु करण और क्रिया-विशेषण अपादान से पहिले ही आते है, जैसे —

"उसने हमारे कंधे से दुशाला उतार लिया।"

मैंने मातृभूमि के वक्षस्थल से रज उठा कर सिर पर धारण की। उन्होंने अपने पवित्र उपदेश द्वारा भक्तों के हृदय से अन्धकार दूर किया। वह यत्नपूर्वक अपने मार्ग से विघ्नों को दूर करता गया।

प्राय अधिकरण पद अपने आधेय के पूर्व स्थापित होता है, जसे —"स्वार्थ त्याग ही में अमरत्व है, उसने हमारी छाती पर ही यह अनर्थ किया।"

प्राय कालवाचकअधिकरण वाक्य में पहले ही आता है, जैसे :—' रात में बडी ओस पडती है निशीथ में निस्तब्धता का साम्राज्य स्थापित होता है ।"

जहाँ पर कालवाचक और स्थानवाचक दोनों एक साथ में अधिकरण हों, वहाँ पहिले कालवाचक पीछे स्थानवाचक पद आते है, जैसे :—"ईश्वर प्रति समय प्रति स्थान में है।"

एक शब्द के दो बार साथसाथ आने को वीप्सा कहते है। वीप्सा द्वारा सम्पूर्णता, बहुत्व, प्रकार, एक कालीनता, निरन्तरता, केवलता, आदि अर्थ प्रकाशित होते है, जैसे:—

घर घर में यह चर्चा फैल गई, हमारे जगल में बड़े बड़े वृक्ष है।

वह धीरे धीरे जारहा था, गीता पढते पढते उसके प्राण पखेरू उड गये। कानोंकान यह खबर चारों ओर फैल गई।

बहुत से आपेक्षक-अव्यय वाक्यों में साथ २ आते है, जैसे — जब तक, तब तक, यद्यपि तथापि, जो और तो, आदि आदि।

प्रश्न-वाचक सर्वनाम उस पद से प्रथम आता है, जिस के विषय में प्रश्न हो, जैसे —यह कौन पुस्तक है ?

यदि पूरा वाक्य ही प्रश्न हो तो वह वाक्य में पहले ही आता है,जैसे —क्या आप वह पुस्तक पढेंगे जो कल लाये थे?

कभी कभी वाक्य में प्रश्न वाचक सर्वनाम नहीं होता केवल प्रश्न-वाचक चिह्न ही अन्त में रहता है, जैसे —वह गया ?

पद-परिचय

वाक्य के पदों का पारस्परिक सम्बन्ध तथा व्याकरण सम्बन्धी विशेषताओं का जहाँ कथन किया जाय उसे पद परिचय, पद-व्याख्या या पदान्वय कहते हैं।

अनेक वैयाकरण वाक्य में पाँच प्रकार के पद मानते हैं, विशेष्य (संज्ञा), विशेषण, सर्वनाम, क्रिया और अव्यय।

विशेष्य के परिचय में—प्रकार, भेद-जाति-वाचक आदि, लिङ्ग, वचन, पुरुष, कारक, विभक्ति, किस क्रिया के साथ अन्वय है। क्रिया वाचक विशेष्य में लिङ्ग, वचन, पुरुष नहीं लिखा जाता।

सर्वनाम—किस विशेष्य का है, उसी विशेष्य के अनुसार लिङ्ग वचन होता है पुरुष और कारक में भेद हो सकता है।

विशेषण—प्रकार भेद, और किसका विशेषण है।

क्रिया—पूर्व-कालिक या समापिका, सकर्मक, अकर्मक, द्विकर्मक, कर्तृवाच्य या भाववाच्य, काल, पुरुष, वचन, कर्त्ता, यदि सकर्मक हो तो कर्म।

एक ही शब्द का भिन्न भिन्न पदों में प्रयोग

कभी २ विशेषण पद स्वतन्त्ररूप से विशेष्य की भाँति आते हैं और उनमें विशेष्य के लिङ्ग वचन होते हैं, जैसे —पंडितों को बुलाया है।

कुछ गुणवाचक विशेष्य कभी विशेष्य और कभी विशेषण हो जाते हैं। सुवर्ण-मंदिर में 'सुवर्ण' विशेषण है और मंदिर विशेष्य।

कुछ संख्या वाचक शब्द जब केवल १०, १२, १५ संख्या हों तो, संख्या वाचक विशेष्य और अन्य पद के संख्या-बोधक हों तो, संख्यावाचक विशेषण होते हैं, जैसे —२ घोड़े, ४ गाय।

कभी जाति-वाचक शब्द विशेष्य और कभी विशेषण होता है, विद्या पढ़ना ब्राह्मण का धर्म है' —यहाँ ब्राह्मण विशेष्य है। और "ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर"—यहाँ ब्राह्मण विशेषण है।

सर्वनाम भी विशेष्य-रूप में आता है—यह वही रणक्षेत्र है, यहाँ "यह" सर्वनाम विशेष्य-रूप में आता है। सर्वनाम कभी कभी विशेषणरूप में भी आता है, जैसे —"यह मनुष्य देशभक्त है।"

कभी कभी क्रिया-पद भी विशेष्य-रूप में आता है, जैसे — "खा" धातु के आगे 'ना' प्रत्यय लगाने से 'खाना' पद बनता है। यहाँ 'खाता' विशेष्य है।

परिचय करते समय गद्य का एक एक पद लेते हैं और पद्य का गद्य-क्रम (अन्वय) कर लेते हैं, फिर यथाक्रम परिचय करते जाते हैं।

उदाहरण

कुवलय-कुल में से, तो अभी तू कढ़ा है,
बहु विकसित प्यारे पुष्प में भी रमा है।
अलि, अब मत जा तू कुंज में मालती की,
सुन मुझ अकुलाती ऊबती की व्यथाएँ॥

[हे] अलि, तू कुवलय कुल में से तो अभी निकला है [और वह विकसित प्यारे पुष्पों में भी रमा है [इसलिये] अब तू मालती की कुञ्ज में मत जा [और] मुझ अकुलाती ऊधती की व्यथाएँ सुन।

अलि—जाति वाचक,संज्ञापद पुल्लिङ्ग एक वचन, मध्यम-पुरुष, सम्बोधन कारक।

तू—सर्वनाम पुरुषवाची, मध्यमपुरुष पुल्लिङ्ग, एक वचन कर्त्ता, मिश्रित वाक्य की दो क्रियाएँ "निकला है" और "रमा है" का।

कुवलय—जाति वा० संज्ञापद एक वचन, पुल्लिङ्ग अन्य पुरुष, कुल का सम्बन्ध-वाचक विशेषण।

कुल में से—जाति-वाचक संज्ञापद, एक वचन, पुल्लिङ्ग, अपादान कारक।

अभी—कालवाचक-क्रिया विशेषण "निकला है क्रिया का।

निकला है—क्रियापद, अकर्मक, कर्तृ प्रधान, आसन्न भूत-काल, पुल्लिङ्ग, एक वचन, निकला से बना है, इसका कर्त्ता 'तू'।

और—समुच्चायिक अव्यय पद 'तू कुवलय कुल में से अभी निकला है और [तू अभी] वह विकसित प्यारे पुष्पों में भी रमा है"। इन दो सरल वाक्यों का योजक है।

वह—विशेषण (विकसित विशेषण का।)

विकसित—विशेषण (पुष्प विशेष्य का।)

पुष्प में—जाति वाचक विशेष्य (संज्ञा) पद, एक वचन, पुल्लिङ्ग, अन्य पुरुष, अधिकरण (व्यासाधिकरण) 'रमा है' क्रिया का आधार।

भी—निश्चय बोधक अव्यय।

रमा है—क्रिया-पद अकर्मक, कर्तृ प्रधान, आसन्नभूतकाल, पुल्लिङ्ग, एक वचन रमना धातु की, इसका कर्त्ता 'तू' इसका आधार 'पुण्य'।

तू—उपर्युक्त सम्पूर्ण तू का परिचय, (मत) जा और सुन क्रियाओं का कर्त्ता।

अब—क्रिया-विशेषण, कालवाचक (मत) जा क्रिया का।

मालती का—जाति वाचक सज्ञापद, एक वचन, स्त्रीलिङ्ग अन्य पुरुष सम्बन्ध पद, कुञ्ज से सम्बन्ध, (सम्बन्ध-बोधक विशेषण) कुञ्ज है विशेष्य का।

कुञ्ज में—जाति वाचक सज्ञापद, एक वचन, स्त्रीलिङ्ग, अन्य पुरुष, अधिकरण कारक, (मत) जा क्रिया का आधार।

मत—भाव-वाचक क्रिया-विशेषण, (जा क्रिया का)

जा—क्रिया पद, अकर्मक कर्तृ वाच्य, विधि एक, व०, पुल्लिङ्ग, कर्त्ता 'तू'।

सम्बन्ध पद

मुझ—सर्वनाम, उत्तम पुरुष, एक वचन, स्त्रीलिङ्ग, क्योंकि राधिका का कथन है।

अकुलाती—(अकुलाती हुई) क्रिया द्योतक सज्ञा। अकुलाना, ऊबना क्रियाओं की द्योतक।

ऊबती—क्रियाद्योतक-संज्ञा।

व्यथाएँ—जातिवाचक सज्ञापद❀ बहुवचन स्त्रीलिङ्ग, अन्य पुरुष कर्म कारक की अवस्था, 'सुन' क्रिया का कर्म।

सुन—क्रिया पद, सकर्मक कर्तृ वाच्य, विधिक्रिया, इसका कर्म 'व्यथाएँ' कर्त्ता 'तू'।

❀भाव-वाचक-सज्ञाएँ बहुवचन में जाति-वाचक हो जाती हैं।

अभ्यास

१— नीचे लिखे हुए शब्दों को यथा-स्थान रख कर वाक्य बनाओ —

(क) 'मैंने' 'सदा के' 'मेरे' 'लिये' 'बहिन' 'धारण' 'ब्रह्मचर्य व्रत' 'है' 'किया'।

(ख) 'देवव्रत' 'सन्यासी को' 'आज' 'भूल जाओ' 'देखि'।

(ग) 'क्या' 'परन्तु' 'महाव्रत' 'मर' 'त्याग का' 'धर्म में' 'पहिली' 'परीक्षा के ही' 'चूर' 'हो जायगा'।

(घ) 'पुस्तक' 'मनोहर' 'मोहन' 'लिख कर' 'पहुंचा देना' 'प्रेस में'।

(ङ) 'सुख है' 'शान्ति ही में' 'मत भूलो' 'इसे' 'भाई' 'कि'।

(च) 'उठ गया है' 'सौभाग्य' 'इस संसार से' 'एक दम'।

(छ) 'हरघड़ी' 'हर जगह' 'उपाय करने वाले को' 'याद रक्खो' 'अपने'।

२—नीचे लिखे आपेक्षक पदों का वाक्यों में प्रयोग करो —

'जो' 'सो' 'यद्यपि' 'तथापि' 'यदि' 'तो' 'जहां' 'वहाँ' 'जो' 'वही'

३—नीचे लिखे वाक्यों में प्रश्न, आधेय, सम्बन्ध और सम्बोधन जोड़ो —

मक्खन रक्खा है उसे   घर द आओ

विशेषण जोड़ो —

वह पुरुष बोला है   मनुष्य   तू कैसा   काम कर रहा है।

नीचे लिखे वाक्यों का पद परिचय करो —

१—जैसी अधिक शान्ति से आराम की निद्रा आती है वैसी ही अधिक शक्ति मालूम पड़ती है।

२—"कब खाना, क्या खाना किस प्रकार से खाना"—अब हम इन पर विचार करेंगे।

रिक्त-पदों का पूरा करना

पद स्थापन प्रणाली के नियम और अर्थ की अपेक्षा ध्यान में रख कर रिक्त पदों को पूरा करना चाहिये। रिक्त-पद-पूर्ति के लिये कोई मुख्य नियम नहीं है। साधारणत: विशेष्य से पूर्व विशेषण और क्रिया से पूर्व क्रियाविशेषण व अधिकरण और आपेक्षक पदों में सहयोगी पद यथास्थान पर आते हैं —

(धनुर्धारी) अर्जुन के जिस गाडीव (धनुष) से (अनेक) राक्षसों का प्राणान्त हुआ, (वह) बेकाम हुआ।

अभ्यास

रीते स्थानों को पूरा करो —

१—तप से ( ) शुद्ध होता है।

२—सत्य से जीवन ( ) होता है।

३—व्यायाम से स्वास्थ्य ( ) है।

४—शिक्षा वह है जिससे ( ) हो।

५—लोक-परलोक बनाने वाले ( ) की वृद्धि हो।

६—हमारे देशी भाषा के अध्यापकों में ( ) पत्र पढ़ने में रुचि बहुत कम ( ) जाती है।

७—हमारे देश ( ) जनता ( ) अभी सवाद-पत्रों का उतना ( ) नहीं है जितना ( ) चाहिये।

८—भूख ( ) या अधिक गर्मी लगने से उससे बचने की इच्छा हमारे ( ) हो जाती है।

विराम-चिह्न

पद, वाक्यांश या वाक्य बोलते समय बीच बीच में कुछ देर के लिये ठहरना पड़ता है, इस ठहराव को विराम कहते हैं। जब हम पद, वाक्यांश व वाक्य लिखते हैं तो विराम की जगहों पर कुछ चिह्न लगाते हैं उन्हें विराम चिह्न कहते हैं। विराम-चिह्नों के बिना लगाये हमारे कहे हुए वाक्यों के अर्थ समझने में सुविधा नहीं होती। वाक्य रचना के अभ्यास के साथ ही विराम-चिह्नों के लगाने का अभ्यास करना चाहिये। आज कल साधारणतः हिन्दी में नीचे लिखे हुए विराम चिह्नों का प्रयोग करते हैं :—

अल्प विराम या कौमा	(,)
अर्द्ध विराम या सेमीकोलन	(;)
पूर्ण विराम या पाई	(।)
प्रश्न-सूचक	(?)
विस्मयादि बोधक	(!)
उद्धरण	' "
कोलन और डैश	:—
सम्बोधन	(!)
विभाजन	( )

अल्प विराम

वाक्य पढ़ते समय जिस स्थान पर थोड़ी देर ठहरना पड़े, वहाँ अल्प विराम लगाते हैं, जैसे :—

१—चतुर कारीगर मोती, पुखराज, नीलम हीरा मूँगा आदि की जाँच करते हैं।

१—इसके लिये प्राण जायँ तो हर्ज नहीं, क्योंकि आत्मा अमर है।

३—वह जानता है, मैं पास हो जाऊँगा।

४—मैं कलमदान को देखूँगा, जो घर रक्खा है।

अर्द्ध विराम

अल्प-विराम से जहाँ कुछ अधिक ठहरते हैं और जहाँ पर दो वाक्यों के अर्थों में पास पास का सम्बन्ध होता है उनको पृथक् करने के लिये अर्द्ध-विराम लगाते हैं; जैसे '—

"हम अपने शरीर को किस तरह रक्खें, हम अपने मन को किस तरह रक्खें, हम अपने कारोबार का किस तरह प्रबन्ध करें, हम अपने बाल बच्चों का किस तरह पालन करें ये सब बातें जानना जरूरी है।'

पूर्ण विराम

जहाँ पर एक वाक्य पूरा हो जाता है वहाँ पूर्ण विराम (।) लगाते हैं, जैसे —

एक और दिल्लगी सुनिये। आपके एक मित्र हैं मास्टर उमाप्रसाद। वे संयुक्त प्रदेश के लखनऊ नगर में मास्टर थे। आगरे को अपनी तबदीली चाहते थे।

एक पूर्ण वाक्य के बीच में अल्प विराम, अर्द्ध विराम आदि चिह्न भी यथाअवसर आया करते हैं —

इसी तरह इस दुनियाँ की जुदी जुदी ऋतुओं का जुदा जुदा असर तो होना ही है और जुदे जुदे आदमियों का जुदा जुदा स्वभाव तो रहेगा ही, ये सब हमारे लिये अभी के अभी बदलने के नहीं।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों में जहाँ जहाँ कौमा आना आवश्यक है लगाओ—

"सुदामाजी के पैर बिवाइयों से फट रहे हैं उनके पैरों में दो चार दस बीस काँटे नहीं बल्कि काँटों के जाल के जाल गड़े हुए हैं।"

"जहाँ शब्दों का सीधासादा अर्थ न लगाकर प्रयोजन या रूढ़ि के कारण कोई निकट-सम्बन्धी अर्थ लगाते हैं वहाँ लक्षणा होती है।"

"प्रत्यय चार प्रकार के होते हैं विभक्ति-प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय, क्रिया-प्रत्यय और कृत-प्रत्यय।"

नीचे लिखे हुए अंश में जहाँ जहाँ अल्प-विराम, अर्द्ध विराम, पूर्ण-विराम आदि चिह्नों की जरूरत हो लगाओ —

तत्सम या संस्कृत शब्द ( ) संस्कृत की प्रथमा विभक्ति के एक वचन के ही रूप होते हैं ( ) जैसे ( ) राजा ( ) माता ( ) तद्भव शब्द संस्कृत शब्द से उत्पन्न होते हैं ( ) जैसे ( ) मैं ( ) भगत ( ) देशी शब्द प्रदेश विशेष के हैं ( ) जैसे डोंगी ( ) डाभ ( ) विदेशी शब्द अन्य भाषाओं के हैं ( ) जैसे ( ) खरगोश ( ) शेर ( ) ट्रेन ( ) गिरजा।

प्रश्न-बोधक चिह्न —

जहाँ पर किसी से कोई प्रश्न किया जाता है वहाँ यह (?) चिह्न प्रश्न सूचक वाक्य के पीछे लगाते हैं —तुम क्या कर रहे हो?

विस्मय सूचक चिह्न —

हर्ष, आश्चर्य, भय आदि मनोविकारों के प्रकाशित करते समय पद या वाक्य के अन्त में यह (!) चिह्न लगाते हैं, जैसे :— धन्य धन्य! वाह वाह! मूर्ख तुम क्या करते हो!

उद्धरण चिह्न —

दूसरे के वाक्य को उद्धरण करते समय यह " " चिह्न लगाते हैं, इसे उद्धरण चिह्न कहते हैं, जैसे :—

कहावत है —"साँच न लागे आँच"।
आप लिखते हैं — "मैं फिकर न किया करूँ"।

आदेशक —

किसी विषय के समझाने के लिये उदाहरण देते हैं या व्याख्या करते हैं तो यह (:—) चिह्न काम में लाते हैं इसे कोलनडैस कहते हैं। कहीं कहीं खाली डैस (—) ही काम में लाते हैं —

तुलसी के दो भेद हैं :—रामा और श्यामा।
वाक्य तीन प्रकार के होते हैं :—सरल, यौगिक और जटिल।

सम्बोधन —

किसी को चेताकर या बुलाकर जब कोई बात कही जाती है तो साधारणतः कौमा लगाते हैं। जब चेतना और बुलाना विशेष मनोविकार के साथ हो तो विस्मय का चिह्न लगाते हैं —

मोहन, तुम स्कूल क्यों न गये? हे हरि, गंगा-स्नान के लिये कब जाओगे? अरे मूर्ख! सावधान! दुष्ट! तुझे अपने कुकर्मों का शीघ्र ही फल मिलेगा।

दो या दो से अधिक पदों के योग से जब एक पद बनता है तो बीच में (-) लगाते हैं, इसे विभाजन चिह्न कहते हैं, जैसे —

"रघुवंश-मणि भगवान् रामचन्द्र जब सुर-सरि के पवित्र तट पर पहुँचे तो अनेक ऋषि-मुनि इस आनन्द-समाचार को पाकर वहाँ उपस्थित हुए।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों में 'प्रश्न', 'उद्धरण', 'आदेशक', 'विस्मय' और 'विभाजन-चिह्न' यथा स्थान पर लगाओ —

"जैसा प्रसाद गुण ( ) कालिदास के काव्यों में भरा पड़ा है वैसा ही ओज गुण ( ) पूर्ण व्यंग्यात्मक नई नई उक्ति ( ) युक्ति भवभूत की कविता में अधिकतर उत्तर ( ) रामचरित में है।"

"हे पतित पावनी माता सुरधनी ( ) भागीरथ जिस पुण्य-बल से तुमको ( ) स्वर्ग की मंदाकिनी को ( ) मर्त्यलोक में खींच लाये थे ( ) इस भेद ( ) हृदय में उसी भक्ति का उल्लास ( ) है मा ( ) एक बार उत्पन्न कर दो।"

भगवति वसुन्धरे ( ) दो टूक हो जाओ ( ) ब्राह्मण ( ) जड तुल्य खड़ा हुआ और क्या देख रहा है ( ) संसार तेरी हँसी करता है ( ) दूसरे वालों के द्वारों पर भिक्षा माँगते हुए तुझे लज्जा नहीं आती ( ) यदि शक्ति हो तो उठ ( ) कपिल के तेज की अग्नि वर्षा करके नीच का घमण्ड चूर करदे ( ) और यदि यह नहीं हो सकता तो क्षुद्र और घृणित ( ) और पद-दलित ( ) और महत्व के कंगाल ( ) अब उजेले में मुँह न दिखलाना ( ) रसातल को चला जा।

वाक्यों के आकार भेद

१ विधि वाचक—जिससे किसी बात का विधान पाया जाय, जैसे '—'आगरा एक शहर है।' 'पत्थर एक धातु है।' 'वह शान्त पुरुष है।'

२ निषेध वाचक—जिसमें किसी विषय का अभाव प्रकट हो, जैसे —यदि तुलसीदास जी रामायण न लिखते तो आजकल धर्म नाम को भी नहीं रहता। 'धर्म बिना सखा कोई नहीं।

३ आज्ञार्थक—जिसमें आज्ञा, निवेदन, उपदेश, अनुमति आदि हों, जैसे :—'गुरु की आज्ञा मानना शिष्य का परम कर्त्तव्य है।' 'प्रात: सायँ घूमना चाहिये।' 'मेरा निवेदन है कि इसको आप दण्ड दें।'

४. प्रश्नार्थक—जिसमें किसी प्रकार का प्रश्न किया गया हो, जैसे —'ऐसा आपने क्यों किया ?' 'क्या आप इसको लिख सकते हैं ?' 'मैं इस अवस्था में क्या करूँ ?'

५ विस्मयादि बोधक—जिसमें आश्चर्य, कौतुक आदि भाव सूचित हों, जैसे —'मोटर कितनी बढ़िया है।' 'अहा' 'मोर कैसा नाचता है!'

६ इच्छाबोधक—जिसमें इच्छा व आशीर्वाद का बोध हो, जैसे —'ईश्वर इस दुखी भारत की भी सुने।' 'भगवान् आपको चिरस्थायी बनावें।'

७ सन्देहसूचक—जिसमें सन्देह पाया जाय, जैसे :—'कदाचित् आज पिताजी मथुरा से आजावें।' 'दीवार गिर न जाय।'

८ सकेतार्थक—जिसमें सकेत या शर्त पाई जाय, जैसे '—'यदि आज मेरे पास विद्या होती तो मैं इस प्रकार भटकता न फिरता।' 'यदि पानी बर्षा तो धान पैदा होंगे।'

'परिश्रम से सुख मिलता है।' (विधि वाचक)
'क्या परिश्रम से सुख मिलता है ?' (प्रश्न वाचक)
'मुमकिन है कि परिश्रम से भी सुख नहीं मिले।' (सदेह वाचक)
(क्या कहा–)'परिश्रम से सुख नहीं मिले!' (विस्मय बोधक)

मैं परिश्रम करूँगा, सुख मिलेगा। (इच्छा बोधक)
जो परिश्रम नहीं करता, उसे सुख नहीं मिलता। (निषेधवाचक)
परिश्रम करो सुख मिलेगा। (आज्ञा बोधक)
यदि परिश्रम करोगे तो सुख मिलेगा। (संकेत वाचक)

अभ्यास।

नीचे के वाक्यों को यथा शक्ति अनेक प्रकार के वाक्यों में बदलो।

१—ज्ञान से बुद्धि निर्मल होती है।

२—सभ्यता से अपना समय मेल जोल और आनन्द में व्यतीत होता है।



तृतीय अध्याय

वाक्य-रचना का अभ्यास

[१]

वाक्यों का विस्तार और संकोचन

कर्त्ता, कर्म और क्रिया पदों से बने हुए छोटे छोटे वाक्यों को, सम्बोधन विशेषण, निर्द्धारण (निश्चय) हेतु, सम्बन्ध, अधिकरण, अपादान, करण, असमापिका क्रिया आदि द्वारा बढ़ा सकते हैं।

कर्त्ता कर्म क्रिया—राम ने लंका को विजय किया।

करण—राम ने 'वीरता से' लंका को विजय किया।

सम्प्रदान—राम ने 'सीता के लिये' वीरता से लंका को विजय किया।

पूर्वकालिक क्रिया—राम ने सीता के लिये वीरता से 'चढ़ाई' करके लंका को विजय किया।

अपादान—राम ने सीता के लिये वीरता से चढ़ाई करके 'समुद्र से पार' लंका को विजय किया।

अधिकरण—राम ने सीता के लिये वीरता से चढ़ाई करके समुद्र से पार लंका को 'युद्ध में' विजय किया।

सम्बन्ध—राम ने सीता के लिये वीरता से चढ़ाई करके 'दैत्यों की' लंका को युद्ध में विजय किया।

सम्बोधन—'हे पार्वती', राम ने सीता के लिये वीरता से चढ़ाई करके समुद्र से पार दैत्यों की लंका को युद्ध में विजय किया।

कर्त्ता विशेषण—'सूर्यवशावतश' 'भगवान्' राम ने ।
कर्म विशेषण—'सुदृढ़' लका को ।
करण विशेषण—'अपूर्व' वीरता से ।
सम्प्रदान विशेषण—'सती साध्वी' सीता के लिये ।
अपादान विशेषण—'अगम्य' समुद्र से पार ।
अधिकरण विशेषण—'भीषण' युद्ध में ।
सम्बन्ध विशेषण—'दुर्जेय' दैत्यों की लंका ।
क्रिया विशेषण—'दृढता पूर्वक' विजय किया ।
अन्त में वाक्य हुआ ।

हे पार्वती,

सूर्यवशावतश भगवान् राम 'ने' सती-साध्वीसीता के लिये अपूर्व वीरता से चढाई कर के अगम्य-समुद्र से पार दुर्जेय दैत्यों की सुदृढ लका को भीषण युद्ध में दृढता पूर्वक विजय किया ।

अर्थ की अपेक्षा रखते हुये वाक्य में आये हुए पद और वाक्यांश को बढा कर वाक्य विस्तार करते हैं ।

ज्ञानी मनुष्य ही सच्चा सुखी है ।

जिसने ज्ञान प्राप्त किया है वही मनुष्य सच्चा सुखी है ।

नीति धर्म पालक मनुष्य ही चारों फल प्राप्त करता है ।

जिसने नीति और धर्म का पालन किया है वही मनुष्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष नामक चारों फल प्राप्त करता है ।

वाक्य के उद्देश्य तथा विधेय अशों को विशेषण और गुणवाचक पदों के योग से बढा सकते हैं ।

महाराणा प्रताप ने प्रण पालन किया ।

'परम प्रतापान्वित भारत-केशरी मेवाडाधिपति' महाराणा प्रताप ने 'पवित्र वीरोचित, प्रण का 'सम्यक प्रकार से' पालन किया ।

सकोचन

किसी विस्तीर्ण वाक्य के अर्थ की रक्षा करते हुए उसके भीतर दो एक समापिका क्रियाओं को असमापिका बनाकर और विशेष्य अर्थ-बोधक वाक्यांशों को विशेष्य-अर्थ बोधक पद, तथा विशेषण अर्थ-बोधक वाक्यांश को विशेषण-पद बना कर वाक्य का आकार सकुचित किया जाता है, जैसे —

१—जिसने ज्ञान और भक्ति को प्राप्त किया है, जिसने कर्त्तव्य-कर्म का चिन्तन किया है, जिसने सयम सहित विराग धारण किया है, वही जीवन सफल कर सकता है।

कर्त्तव्य कर्म का चिंतक ज्ञानी और भक्त विरक्त ही जीवन सफल कर सकता है।

२—दर्शन को समझने वाले, विज्ञान को जानने वाले, सच्चे विष्णु के उपासक, ऐसा नहीं हो सकता कि किये हुए को न मानें।

दार्शनिक, विज्ञानी और सच्चे वैष्णव कृतघ्न नहीं हो सकते।

३—जिन्हें नीति का ज्ञान है, जिनके हृदय में साहस है, अयोध्या के राज्य पर जिनका अधिकार है, जानु तक की जिनकी लम्बी बाहु है, ऐसे राम, इन्द्र के जीतनेवाले दैत्य पर क्यों न विजय प्राप्त करें ?

'नीतज्ञ साहसी' और आजानुबाहु अयोध्याधिपति राम, दैत्य इन्द्रजीत पर क्यों न विजय प्राप्त करें ?

४—मैंने स्वामी जी को देखा और आनन्द में डूब गया। कहने लगा कि, धन्य है यह माता, जिसने ऐसा पुत्र पैदा किया।

' मैं स्वामीजी को देखते ही आनन्द से मग्न होकर कहने लगा "स्वामी के सदृश पुत्र पैदा करनेवाली माता को धन्य है।"

५—मैं बाजार गया, इधर उधर घूमा और धोती लाया।

इधर उधर घूम कर बाजार से धोती लाया।

६—जहाँ वाक्य या वाक्य-समूह में उद्देश्य अनेक प्रकार के हों और विधेय एक प्रकार का हो, तो उद्देश्यों का संयोजक-अव्ययों द्वारा मिला देते हैं और क्रिया का एक ही बार उल्लेख करते हैं, जैसे —

"पं० श्रीकृष्णदत्त जी का व्याख्यान होगा, चतुर्वेदी विश्वेश्वरदयालु बोलेंगे और स्वामी डालचन्द की वक्तृता होगी" जिसके बदले में—"पं० श्रीकृष्णदत्त चतुर्वेदी विश्वेश्वरदयालु और स्वामी डालचन्द के व्याख्यान होंगे"—कर सकते हैं।

कभी २ अर्थ की ओर दृष्टि रख कर वाक्य का संकोचन किया जाता है, जैसे :—"जिस प्रकार पं० रामप्रसाद सरल स्वभाव हैं उसी प्रकार डा० लालसिंह भी सरल स्वभाव हैं। इसका संकोच इस प्रकार होगा —

पं० रामप्रसाद की भाँति ही डा० लालसिंह भी सरल स्वभाव हैं।

अलंकृत वाक्यों में से अलंकार निकाल कर साधारण वाक्य रचना में उसका संकोचन हो जाता है।

वाक्य-रचना का अभ्यास

(२)

वाक्य-परिवर्तन

वाक्य-रचना के अभ्यास के लिए एक प्रकार के वाक्य को दूसरे प्रकार के वाक्य में बदल लेना चाहिए।

सरल-वाक्य से जटिल-वाक्य बनाना

विधेय पूरक और विशेषण-बोधक वाक्यांश को वाक्य बना कर, अथवा विधेय बढ़ाने वाले पद को वाक्य बनाकर, अथवा उद्देश्य-वर्द्धक विशेषण-पद को वाक्य बनाकर, 'जो,वह,' 'यदि,

तो' आदि नित्य-सम्बन्धी अव्ययों द्वारा जोड देते हैं, वहाँ नित्य सम्बन्धी पद लुप्त रहते हैं।

सरल-वाक्य—भारतवासियों के सम्राट् आज हमारे बीच में नहीं हैं।

जटिल—'जो' भारत-सम्राट् थे, 'वह' आज हमारे बीच में नहीं है।

सरल—उसके दुराचारों को तुमने कैसे जान लिया।

जटिल—उसके जो'दुराचार थे,'उन्हें'तुमने कैसे जान लिया।

सरल—सज्जन मनुष्य कटु वचन नहीं कहते।

जटिल—'जो' सज्जन मनुष्य है, वे' कटु वचन नहीं कहते।

सरल—उसकी नीति को मैं जानता हूँ।

जटिल—उसकी 'जो' नीति है, 'उसे' मैं जानता हूँ।

जटिल-वाक्य को सरल-वाक्य बनाना

किसी जटिल वाक्य के अन्तर्गत सहायक वाक्य को पद या वाक्यांश के रूप में लाकर सम्बन्ध-बोधक दोनों पदों को हटा देना चाहिये, सरल-वाक्य बन जायगा, इसमें अर्थ और काल का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

जटिल वाक्य—'जब तक' मैं अपना कार्य्य साधन न कर लूँगा, 'तब तक' विवाह न करूँगा।

सरल वाक्य—अपना कार्य्य साधन न करने तक विवाह न करूँगा।

जटिल—तुमने मुझसे 'जिस प्रकार' कहा था, 'उसी के अनुसार' कार्य्य कर रहा हूँ।

सरल—तुम्हारे कथनानुसार कार्य्य कर रहा हूँ।

जटिल—तुमने 'ऐसी' बात कही,'जो' सर्वथा असम्भव है

सरल—तुमने सर्वथा असम्भव बात कही।

इन दोनों प्रकार के परिवर्त्तनों में वाक्य-सकोचन के नियमों का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

सरल-वाक्यों को यौगिक-वाक्य बनाना

सरल-वाक्य के किसी वाक्यांश को स्वतन्त्र वाक्य बनाकर 'एव' 'अथवा' 'किन्तु' 'इसलिए' आदि अव्ययों के प्रयोग से यौगिक वाक्य बना लेना चाहिए। कहीं कहीं पूर्वकालिक क्रिया को समापिका क्रिया कर लेने से यौगिक-वाक्य बन जाता है।

सरल—स्नानादि से निवृत्त हो कर, गीता रहस्य का अध्ययन किया।

यौगिक—स्नानादि से निवृत्त हुआ और गीता-रहस्य का अध्ययन किया।

सरल वाक्य के "स्नानादि से निवृत्त होकर" इस वाक्यांश यौगिक-वाक्य का "स्नानादि से निवृत्त हुआ" यह स्वतन्त्र वाक्य बना लिया।

सरल—पढने में शिथिलता करने से दु ख होता है।

योगिक—पढने में शिथिलता मत करो, इससे दु ख होता है।

सरल—दुर्बलतावश उपस्थित नहीं हो सका।

यौगिक—वह दुर्बल था इसलिए उपस्थित नहीं हो सका।

यौगिक-वाक्य को सरल-वाक्य में बदलना

यौगिक वाक्य के एक स्वतन्त्र-वाक्य का वाक्यांश में बदल कर कहीं कहीं समापिका क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया करने से योगिक-वाक्य का सरल वाक्य हो जाता है। यौगिक वाक्यों से अव्यय पद सरल-वाक्य हो जाने पर लुप्त हो जाते है।

योगिक-वाक्य—हरि आया और चला गया।

सरल-वाक्य—हरि आकर चला गया।

यौगिक वाक्य—आम पका लिये और खा लिए।

सरल वाक्य—आम पका कर खा लिए।

यौगिक-वाक्य—अपने दोष को मुक्त-कण्ठ से स्वीकार करो, नहीं तो निस्तार नहीं होगा।

सरल—अपने दोषों को मुक्तकण्ठ से स्वीकार किये बिना निस्तार नहीं होगा।

यौगिक—भगवान् रामचन्द्रजी को लोकापवाद का भय था इसलिए उन्होंने सती साध्वी सीता का परित्याग कर दिया।

सरल—भगवान् रामचन्द्रजी ने लोकापवाद के भय से सती-साध्वी सीता का परित्याग कर दिया।

जटिल-वाक्य से यौगिक-वाक्य

जटिल-वाक्य के अप्रधान वाक्य को स्वतन्त्र वाक्य बनाना पडता है और उसके नित्य-सम्बन्धी दोनों पदों को छोडकर, 'नहीं', 'तो', 'किन्तु', 'अथवा' और आदि संयोजक और विभाजक अव्यय पद लाने पडते हैं।

जटिल-वाक्य—उसने जो कहा था वह नहीं किया।

यौगिक वाक्य—उसने कह तो दिया परन्तु किया नहीं।

जटिल वाक्य—यद्यपि वह विद्वान् है तथापि समझता नहीं।

यौगिक-वाक्य—वह विद्वान् है परन्तु समझदार नहीं।

यौगिक-वाक्य से जटिल-वाक्य

यौगिक-वाक्य के दो स्वतन्त्र वाक्यों में से पहले वाक्य के प्रारम्भ में 'यदि' आदि अव्यय और संयोजकादि अव्यय के स्थान में नित्य-सम्बन्धी पदों के प्रयोग करने से जटिल वाक्य बन जाता है।

यौगिक-वाक्य—निष्काम-कर्म करो, तुम्हारा मन पवित्रता से भर जायगा।

जटिल-वाक्य—यदि निष्काम कर्म करोगे तो तुम्हारा मन पवित्रता से भर जायगा।

यौगिक वाक्य—वह विद्वान् नहीं है, परन्तु बुद्धिमान है।

जटिल-वाक्य—यद्यपि वह विद्वान नहीं है, तथापि बुद्धिमान है।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों में बतलाओ किस प्रकार के वाक्य हैं और क्यों? अर्थ की रक्षा करते हुए यथासम्भव इन्हें दूसरे प्रकार के वाक्यों में परिवर्तित करो —

१—'आपको यह समझ लेना चाहिये कि आपके ऊपर केवल, आपके और आपके परिवार के कामों का ही भार नहीं है, परन्तु उस जननी-जन्म-भूमि के प्रति भी आपके बहुत से कर्त्तव्य हैं।"

२—"आपके पढ़ लिख जाने पर मातृ-भूमि आप से बहुत कुछ आशा रखती है।"

३—"वह दिन भी निकट है, जब आप उच्च शिक्षा पाकर नागरिकों का भार और जवाबदेही अपने ऊपर लेंगे।"

४—"कर्त्तव्य-धर्म का पालन करना ही मनुष्य का धर्म है।"

५—"आजकल प्रायः सब नवयुवकों में जो बुरी आदतें पाई जाती हैं उनसे शरीर के सम्पूर्ण अवयवों का बल ही नष्ट नहीं होता बल्कि उनसे मानसिक बल का भी ह्रास होता है।"

६—"मित्र और साथी अच्छे होने चाहिये।" यदि अच्छे साथी न मिलें तो बुरों का साथ न करना चाहिये। युवक को शुद्ध वाणी बोलनी चाहिये। यदि उसके सामने कोई दूषित बात कहे तो उससे घृणा करनी चाहिये।

वाक्य-रचना का अभ्यास

(३)

वाच्य और वाच्यान्तर

वाच्य के अनुसार वाक्य के तीन भेद हैं, कर्त्तृ, कर्म और भाव।

जिस वाक्य में कर्त्ता अपनी अवस्था (प्रथमा) में हो, और कर्म अपनी अवस्था (द्वितीया) में, क्रिया पद स्वतन्त्र न हो, उसे कर्त्तृवाच्य कहते हैं, जैसे :—

'बालक रामायण पढता है' 'लडका गीत गाता है।'

जिस वाक्य में कर्त्ता करण की अवस्था (तृतीया) में, कर्म (कर्त्ता की अवस्था) प्रथमा में प्रयुक्त हो और क्रिया कर्म के अनुसार हो, उसे कर्म-वाच्य कहते है, जैसे :—लडके से गीत गाया जाता है 'कपड़ा सींया जाना है।'

जिस वाक्य में कर्म नहीं होता, कर्त्ता तृतीया में होता है, क्रिया स्वय प्रधान होती है, उसे भाव-वाच्य कहते हैं, जैसे — श्याम से पढा नहीं जाता।

कर्म-कर्त्तृवाच्य—जिस वाक्य मे कर्म-पद ही कर्त्ता की भाँति हो अर्थात् बिना कर्त्ता के स्वय सिद्ध हो उसको कर्म कर्त्तृवाच्य कहेंगे, जैसे —

दीवार बन रही है।' 'वडी ठीक हो रही हैं।'

सकर्म क्रिया के प्रयोग में कर्त्तृवाच्य से कर्मवाच्य और कर्मवाच्य से कर्त्तृवाच्य और अकर्मक क्रिया में कर्त्तृवाच्य से भाववाच्य और भाववाच्य से कर्त्तृवाच्य में परिवर्तन करने का नाम वाच्य परिवर्तन है।

कर्त्तृवाच्य में कर्म होता भी है और नहीं भी, कर्मवाच्य में कर्म अवश्य होता है, किन्तु भाववाच्य में कर्म नहीं होता।

कर्त्तृवाच्य से कर्मवाच्य

कर्त्तृ०—मोहन ने मेरी कलम चुराली।

कर्म०—मोहन से मेरी कलम चुराई गई।

कर्तृ०—प० अयोध्यानाथ ने कांग्रेस स्थापित की।

कर्म०—प० अयोध्यानाथ द्वारा कांग्रेस स्थापित की गई।

कर्तृ०—महात्मा ऐण्ड्रयूज ने अकाल पीडिता की सहायता की।

कर्म०—महात्मा ऐण्ड्रयूज द्वारा अकाल पीडिता की सहायता की गई।

कर्तृवाच्य—प० गोविन्दसहाय ने फिजी की रिपोर्ट लिखी।

कर्मवाच्य—प० गोविन्दसहाय द्वारा फिजी की रिपोर्ट लिखी गई।

कर्तृवाच्य—चौकीदार ने चोर पकड़ लिया।

कर्मवाच्य—चौकीदार से चोर पकड़ा गया।

कर्मवाच्य से कर्तृवाच्य

कर्मवाच्य—साधू से कैसा गाया जाता है।

कर्तृवाच्य—साधू कैसा गाना गाता है।

कर्मवाच्य—भगवान् कृष्ण द्वारा उपदेश दिया गया।

कर्तृवाच्य—भगवान् कृष्ण ने उपदेश दिया।

कर्मवाच्य—वेदव्यास द्वारा महाभारत रचा गया।

कर्तृवाच्य—वेदव्यास ने महाभारत रचा।

कर्मवाच्य—मुझ से पुस्तक पढी जाती है।

कर्तृवाच्य—मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य

कर्तृ०—मैं नहीं उठता हूँ।

भाव०—मुझसे नहीं उठा जाता।

कर्तृ०—मैं रात भर नहीं सो सकता।

भाव०—मुझ से रात भर नहीं सोया जाता।

कर्त्तृ०—रात भर कोई नहीं जागा।
भाव०—रात भर किसी से नहीं जागा गया।

भाववाच्य से कर्त्तृवाच्य

भाववाच्य—गाय से चला नहीं जाता।
कर्त्तृवाच्य—गाय नहीं चलती।
भाववाच्य—तुमसे खाया जायगा।
कर्त्तृवाच्य—तुम खाओगे।
भाववाच्य—राम से सोया नहीं जाता।
कर्त्तृवाच्य—राम नहीं सोते।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों में उनका भेद बताकर वाच्य परिवर्तन करो—बढ़ई ने किवाड़ बनाये हैं। राम ने मत दिया है। दर्जी से कपड़ा काटा गया। घोड़े से चला नहीं जाता। मैं रात को नहीं पढ़ूँगा। वह कर नहीं आ सकता। तुम हिन्दी में विज्ञान के कई ग्रन्थ लिखोगे। तुम सच नहीं बोले।

वाक्य-रचना का अभ्यास

(४)

अलंकृत वाक्य-रचना

अच्छी रचना के लिए वर्णनीय विषय का परमार्जित ज्ञान, रचना-शक्ति की सजीवता और भाषा पर पूर्ण अधिकार होने की परम आवश्यकता है। जिस भाषा में अलकारों का प्रयोग किया जाता है उसे अलकृत रचना कहते हैं। हिन्दी में अलकारों के दो विभाग किये हैं:—शब्दालकार और अर्थालकार। जब रचना में शब्द-सम्बन्धी चमत्कार होता है तो उसे शब्दालकार कहते हैं। ‘उस सहज सौंदर्य को देख कर मन-मयूर मत्त होकर नृत्य करने लगा” इस वाक्य में न और म के प्रयोगों में शब्द चमत्कार है।

शब्दालकारों के कई भेद है —

एक से अक्षरों की आवृत्ति मे अनुप्रास होता है, जैसे —मन मयूर-मत्त में 'म' की, चतुर चितेरे में 'च' और 'त' की, बोध और सोध मे 'ध' की समता है और एक ही अर्थ में पद व पद-समूहों की समता में लाटानुप्रास होता है, जैसे — 'करि करुणा करुणा-यतन' में करुणा की आवृत्ति एक ही अर्थ में है। जब पद खण्ड, पद या पद समूह की आवृत्ति भिन्न भिन्न अर्थों में होती है, वहाँ यमक अलकार होता है, जैसे —'असरन सरन चरन गनपति के' में रन की आवृत्ति भिन्न भिन्न अर्थों मे होती है। जब एक ही शब्द दो या दो से अधिक अर्थों में आता है तो श्लेष होता है, जैसे — 'मतवाले आपस में लडते है।' यहाँ मतवाले के दो अर्थ है— उन्मत्त और मत के (मजहबी लोग)

जहाँ अर्थ सम्बन्धी चमत्कार होता है, वहाँ अर्थालंकार होता है।

अर्थालकार १०० से ऊपर हैं। इन एक के अनेक सूक्ष्म भेद है। इनमें उपमा (तुलना) सब में मुख्य है।

उपमा—किसी के सौन्दर्यादि का परिचय देने के लिये किसी ऐसी वस्तु से तुलना करनी पडती है जिससे सौन्दर्यादि गुण की लोक में प्रसिद्धि हो। जिस वस्तु की समता दी जाती है वह उपमेय और जिस वस्तु से समता दी जाती है उसे उपमान कहते है। वह गुण जिस से दोनों मे समता हो जाती है समान धर्म कहलाता है।

उपमा—उपमान और उपमेय का एक ही धर्म कथन किया जाता है, जैसे —मुख चन्द्रमा के समान उज्ज्वल है।

रूपक—समान-धर्मी उपमेय उपमानों का अभेद कहा जाता है, जैसे :—मुख चन्द्र है।

उत्प्रेक्षा—उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाती है, जैसे —मुख मानों चन्द्र है।

प्रतीप—उपमान की उपमेय से समता की जाती है, जैसे .—मुख सा चन्द्र है।

अपह्नुति—उपमेय का निषेध करके उपमान का आरोप किया जाता है, जैसे :—मुख नहीं चन्द्र है।

परिणाम—उपमेय उपमान मिल कर काम करते हैं, जैसे —मुख-चन्द्र आनन्द देता है।

स्मरण—उपमान को देखकर उपमेय याद आता है, जैसे :—चन्द्रमा को देखकर मुख याद आता है।

सन्देह—उपमेय उपमान में सन्देह रहता है, जैसे :—मुख है या चन्द्र।

इन्हीं भिन्न भिन्न अलंकारों को गद्य और पद्य के वाक्यों में प्रयोग करते हैं तो उस रचना को अलंकृत कहते हैं।

अभ्यास के लिये साधारण वाक्यों को अलंकृत करना चाहिये और अलंकृत वाक्यों को साधारण भाषा में लिखना चाहिए

साधारण वाक्य	अलंकृत वाक्य
सवार आता है	विद्युत-समान चंचल घोड़े पर चकाचौंध सा करता हुआ सवार आता है (उपमा अलंकार)

राम शरासन की ओर चले	दिनकर कुल-कमल दिवाकर राम शिव शरासन की ओर मत्त-गज गति से चले (रूपक अलंकार)
सन्ध्या हो गई	सूर्य भगवान् ने अस्ताचल की शिखरों पर आरोहण किया। भगवान् पद्मिनी नायक ने दिन भर के परिश्रम से व्याकुल हो विश्राम के लिए अस्ताचल पर्वत का आश्रय लिया।
रामचन्द्र ने शिव धनुष चढ़ा कर सीताजी को मोहित कर लिया।	सूर्यवंशावतंस रामचन्द्र ने अनायास ही शिव धनुष पर, ज्या रोपण कर वैदेही के हृदय को सहसा आकर्षित कर लिया।
यह पत्नी उनको देने आई हूँ।	यह पत्नि रत्न उनके चरण कमल में अर्पण करने आई हूँ।
सूर्योदय से आकाश में लाली छागई और अँधेरा दूर होगया।	सूर्य के उदय होने से गगन मण्डल रक्त वर्ण हो रहा था और आकाश स्थित अन्धकार रूपी धूल सूर्य की किरण रूप झाड़ू से परिष्कृत होगई। (रूपक अलंकार)
उनका रूप बड़ा भयंकर था।	उनको देखकर साक्षात् भूत मध्यस्थ भैरव अथवा दूत-संयुक्त कालान्तक का स्मरण होता था। (स्मरण)

रूपक—समान-धर्मी उपमेय उपमानों का अभेद कहा जाता है, जैसे :—मुख चन्द्र है।

उत्प्रेक्षा—उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है जैसे —मुख मानों चन्द्र है।

प्रतीप—उपमान की उपमेय से समता की जाती है, जैसे :—मुख सा चन्द्र है।

अपह्नुति—उपमेय का निषेध करके उपमान का आरोप किया जाता है, जैसे :—मुख नहीं चन्द्र है।

परिणाम—उपमेय उपमान मिल कर काम करते हैं, जैसे :—मुख-चन्द्र आनन्द देता है।

स्मरण—उपमान को देखकर उपमेय याद आता है, जैसे :—चन्द्रमा को देखकर मुख याद आता है।

सन्देह—उपमेय उपमान में सन्देह रहता है, जैसे :—मुख है या चन्द्र।

इन्हीं भिन्न भिन्न अलकारों को गद्य और पद्य के वाक्यों में प्रयोग करते हैं तो उस रचना को अलकृत कहते हैं।

अभ्यास के लिये साधारण वाक्यों को अलकृत करना चाहिये और अलकृत वाक्यों को साधारण भाषा में लिखना चाहिए।

साधारण वाक्य	अलकृत वाक्य
सवार आता है	विद्युत-समान चंचल घोड़े पर चकाचौंध सा करता हुआ सवार आता है (उपमा अलकार)

राम शरासन की ओर चले	दिनकर कुल-कमल दिवाकर राम शिव शरासन की ओर मत्त-गज गति से चले (रूपक अलंकार)
सन्ध्या हो गई	सूर्य भगवान् ने अस्ताचल की शिखरों पर आरोहन किया। भगवान् पद्मनी नायक ने दिन भर के परिश्रम से व्याकुल हो विश्राम के लिए अस्ताचल पर्वत का आश्रय लिया।
रामचन्द्र ने शिव धनुष चढ़ा कर सीताजी को मोहित कर लिया।	सूर्यवंशावतंश रामचन्द्र ने अनायास ही शिव धनुष पर ज्या रोपण कर वैदेही के हृदय को सहसा आकर्षित कर लिया।
यह पत्नी उनको देने आई हूँ।	यह पत्नि रत्न उनके चरण कमल में अर्पण करने आई हूँ।
सूर्योदय से आकाश में लाली छागई और अँधेरा दूर हो गया।	सूर्य के उदय होने से गगन मण्डल रक्त वर्ण हो रहा था और आकाश स्थित अन्धकार रूपी धूल सूर्य की किरण रूप झाड़ू से परिष्कृत होगई। (रूपक अलंकार)
उनका रूप बड़ा भयंकर था।	उनको देखकर साक्षात् भूत-मध्यस्थ भैरव अथवा दूत संयुक्त कालान्तक का स्मरण होता था। (स्मरण)

वाक्य-रचना का अभ्यास

(५)

वाक्यों के रूपान्तर

सरल वाक्यों को विशेषणों, अलकारों तथा दूसरी भाँति के विविध कौशलों द्वारा रूपान्तरित कर सकते हैं।

सवेरा हो गया।

प्रभात हो गया। सूर्योदय हो गया। रात्रि का अवसान हो गया। रात बीत गई। भगवान् कमलिनी-वल्लभ उदयाचल पर अपनी प्रभा दिखाने लगे। भगवान् सूर्य्य ने ससार का अधकार दूर कर दिया। भगवान् भास्कर भासमान हुए। ऊषा की किरणें प्रस्फुटित हुईं। अरुणोदय हुआ। भगवान् अंशुमाली ने रश्मिराशि फैला दी।

सुख हुआ।

हृदय में आनन्द भर गया। हृदय की कली खिल गई। हृदय कलिका प्रस्फुटित हुई। आनन्द-तरङ्गों में गोते लगाने लगा। आनन्द-समुद्र उमड पडा। सुख-समुद्र में उत्ताल तरंगें उठने लगीं। आनन्द का पारावार नहीं रहा। सुख की सीमा न रही।

चन्द्रमा उदय हुआ।

चन्द्रोदय हुआ। चन्द्रमा ने अपनी किरण फेला दीं। सुखद-चन्द्रिका छिटक गई। चाँदनी फैल गई। चन्द्र दर्शन हुए। कुमुदिनी वल्लभ की आभा प्रस्फुटित हुई। मन-कुरङ्ग को फँसाने के लिए शशि-किरण जाल विस्तृत हुआ।

ज्ञान होगया ।

ज्ञानोदय हुआ । अज्ञान दूर होगया । माया का परदा ह
गया । मोह-तम टल गया । अज्ञानांधकार मिट गया । हृदय में
प्रकाश हो गया । ज्ञान-रूपी-सूर्य्य की किरण से अज्ञानांधकार
विलीन हो गया ।

पतित हो गया ।

पथभ्रष्ट हो गया । उद्देश्य से गिर गया । लक्ष चूक गया ।
स्थिर न रह सका । अपने को सम्हाल न सका ।

दिन काटता हूँ ।

कालक्षेप करता हूँ । दिन व्यतीत करता हूँ । समय का
[illegible]का देता हूँ । दिन काटता हूँ । दिन निकालता हूँ ।

दुखी हुए ।

शोकान्वित हुए । शोक-सागर उमड पडा । शोकाभिभूत
हुए । शोक में मग्न हो गये । शोक में अधीर हो गये । शोकातुर
[illegible]ो गये । शोकाकुल हुए । शोक से हृदय अधीर हो गया ।
[illegible]ख का पारापार न रहा ।

मर गया ।

परलोक वास हो गया । कैलास वास हो गया । स्वर्ग
[illegible]रे । पञ्चत्व प्राप्त किया । असार संसार को छोड दिया ।
[illegible]े चल बसे । हम से चिर विदा ली । भव बंधन से छूट
[illegible]संसार परित्याग किया । उनके प्राण पखेरू उड गये ।
[illegible]दीप निर्वाण हुआ । काल कवल हुए । मानव लीला
[illegible]की । अमर लोक सिधारे आदि ।

[illegible] से कहना है 'चले जाओ' लम्बे पडो, पीठ दिखाओ,
[illegible], काम देखो, रास्ता पकडो, रास्ता लो, आदि ।

'जमना' क्रिया-पद का व्यवाहर साधारणत: द्रव वस्तु क ठोस रूप होने के अर्थ में आता है, जैसे'—पानी जम गया। परन्तु जब अन्य स्थान पर लाते हैं तो विशेष चमत्कार हो जाता है, "दूकान जम गई। हाथ जमा दूँगा। कैसा रंग जमा है। रौब नहीं जमा। मामला जमता नहीं नजर आता। जड़ जमती जाती है। बड़ी भीड़ जमी। जूआ डट के जमा हुआ है"।

यह पत्ती उनको देने आई हूँ।

यह पत्ती उनकी भेंट के लिये लाई हूँ, यह पत्ति-रत्न उनकी भेंट के लिये लाई हूँ। यह पत्ती उनके कर-कमलों में समर्पण करने के लिये लाई हूँ। यह पत्ति-रत्न उनके चरण कमल में अर्पण करने के लिये लाई हूँ।

वाक्य रचना का अभ्यास।

(६)

वाक्य का कोई पद अथवा अंश दिया हुआ हो तो वाक्य पूरा करना।

'स्वास्थ्य है'—उसका अच्छा 'स्वास्थ्य' है।

'परोपकार से'—मनुष्य की 'परोपकार से' बड़ी कीर्ति फैलती है।

'धन्य है'—तुम्हारी करनी को 'धन्य है।'

'पुल पर से'—मैंने 'पुल पर से' नगर को देखा।

'गीति काव्य'—मिश्र जी की 'गीति-काव्य' अच्छी रचना है।

'मानव-जीवन'—'मानव-जीवन' पवित्र होना चाहिये।

'भगवद्भक्ति'—'भगवद्भक्ति' ही मनुष्य जीवन का सार है।

'ज्ञान और भक्ति'—'ज्ञान और भक्ति' दोनों कल्याणकारी है।

'राम और कृष्ण'—'राम कृष्ण' के उपासकों की यह दशा है।
'सत्सगति'—'सत्ससंगति' से बढ कर कौन सा लाभ है?
'धन और धर्म'—अभिमान से 'धन और धर्म' दोनों नष्ट होते है।

'आहार-विहार'—उचित 'आहार-विहार' ही स्वास्थ्य लाभ के मूल है।

'दीन-दुखियों'—'दीन दुखियों' को देखकर उनकी उपेक्षा न करा।

अभ्यास

नीचे लिखे पद वा पद समूहों को वाक्य में लाओ—

'हिमालय के , 'शक्तिहीन', 'चिरवियोग' 'धर्महीन' 'कर्त्तव्य-च्युत' 'प्राणपन से' 'क्रोधपूर्वक' 'मान मर्य्यादा छोड कर ।

'क्षण भर के लिये', 'मेरा दे-बाप कहकर' ने महा महिम'।

मैं माता हूँ और तुम ।' नदी की लहरा का ।' 'हृदय में साहस ।'

'नस नस में शूरता ।' 'परम प्रतापी राणा प्रताप ।'
'वसुन्धरा वीरा के ।' 'गगा हिमालय से ।'
कन्या कुमारी अन्तरीप ।
सूर्योदय होते ही ।' शरद-चन्द्र मनोहारिणी कौमुदी ।'

वाक्य-रचना का अभ्यास

(७)

मुहाविरों पर वाक्य रचना।

मुहाविरा—ऐसे पद य वाक्यांश का जहाँ प्रयोग हो, जिस में शब्दार्थ न लेकर, लाक्षणिक अथवा कोई और ही अर्थ

लिया जाता हो, उसे मुहाविरा कहते हैं। मुहाविरेदार भाषा वह भाषा है, जिसमें मुहाविरों का प्रयोग हो।

मुहाविरों का वाक्यों में प्रयोग।

मुहाविरा अर्थ उनका वाक्यों में प्रयोग।

हाथ धो बैठना = खो देना, वह पुस्तक से हाथ धो बैठा।
हाथ डालना = काम छेड़ना, इस काम में हाथ डालूँगा।
हाथ खींच लिया = सम्बन्ध नहीं रक्खा, मैंने उधर से हाथ खींच लिया।
हाथ उठाना = मारना, बच्चों पर हाथ उठाना अच्छा नहीं।
हाथ मारना = शर्त करना, हाथ मार कर कहे देता हूँ।
हाथ चलाना = छेड़ना, हाथ चलाना अच्छा नहीं।
हाथ होना = कृपा होना, उसके ऊपर राजा का हाथ है।
हाथ कटाना = काबू न रखना, वह अपने हाथ कटा बैठा।
हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना = कुछ न करना, वह हाथ प हाथ रख कर बैठा है।
हाथ खाली होना = कुछ न रहना, मैं खाली हाथ जाकर क करूँगा ?
हथियाना = लेना, उसने मेरी पुस्तक हथियाली।
हाथ धो कर पीछे पड़ना = लगातार पीछे पड़ना, वह हा धोकर मेरे पीछे पड़ा है।
हाथ दबा है = काबू है, मेरा हाथ दबा है।
हाथ निकलना = काबू निकलना, अब क्या है हाथ निकल गय
हाथ मलना = पछताना, हाथ मल रहा है।
हाथ आना = मिलना, तुम्हारे क्या हाथ आवेगा।

सिर मूड़ना = ठगना, किसका सिर मूड़ा।
सिर लेना = जिम्मेवारी लेना, उसे अपने सिर क्यों लेते हो।
सिर हिलाना = मना करना, उसने तो सिर हिला दिया।
सिर देना = बलिदान होना, धर्म पर उसने अपना सिर दे दिया।
सिर पर चढ़ाना=आदत बिगाड़ना, उसने सिर पर चढ़ा लिया है।
सिर पटकना=किसी दूसरे पर डालना, उसने मेरे सिर पटक दिया।
सिर डालना = हठात् सौंपना, राम के सिर डाल दी।
पानी उड़ना = आब बिगड़ना, तलवार का पानी उड़ गया।
पानी पड़ना = शर्म आना, लाखों मन पानी पड़ा।
पानी ढलना = बेशर्म होना, उसकी आँखों का पानी ढल गया।
पानी पी जाति पूछना = काम करके पीछे सोचना।
खाक उड़ना = बरबाद होना, वहाँ खाक उड़ती है।
खाक उड़ाना = बदनामी करना, किसी की खाक उड़ाना अच्छा नहीं।
खाक डालना = छिपाना, खैर हुआ सो हुआ अब खाक डालो।
खाक चाटना = तबाह होना, वह खाक चाट गया।
ख़ाक छानना = बहुत ढूँढना, तुम्हारे पीछे खाक छान डाली।
खाक में मिलना = नाश होना, वह खाक में मिल गया।
खाक बरसना = नाश होना, वहाँ खाक बरसती है।
खून सूखना = डरना, देखते ही मेरा खून सूख गया।
खून बिगड़ना = कोढ़ या और कोई खून का रोग होना, उसका खून बिगड़ गया।
खून बहाना = मारकाट करना, खून बहा दूँगा।
खून उबलना = क्रोध आना, एक दम खून उबल आया।
खून का प्यासा = जान का गाहक, वह मेरे खून का प्यासा है।

मुँह फिरना = घमण्ड होना, उसका मुँह फिर गया।
मुँह फटना = लोभी होना, आजकल उसका मुँह फटा है।
मुँह ही मुँह देना = जवाब पर जवाब देना, क्यों मुँह ही मुँह देते हो ?
मुँह बनाना = चेष्टा विशेष करना, कैसा मुँह बनाया है।
मुँह बिगाड़ना = उलटा जवाब देना, उसका मुँह बिगाड़ दिया।
मुँह फक होना = घबड़ाना, उसका मुँह फक हो गया।
मुँह में पानी भरना = इच्छा होना, देखते ही मुँह में पानी भर आया।
मुँह काला होना = कलङ्क लगना, उसका मुँह काला होगया।
मुँह माँगी मौत मिलना = चाही हुई बात पूरी होना, मुँह माँगी मौत नहीं मिलती।
आँख मारना = इशारा करना, उसकी ओर आँख मार दी।
आँख मटकाना = सैन चलाना, क्यों आँख मटकाता है ?
आँख मूँदना = विचार न करना, आँख मूँद कर काम करता है।
आँख मिचना = मरना, उसकी आँख मिच गई।
आँख खुलना = समझ आना, बड़े दिनों में आँखें खुलीं।
आँख दिखाना = धमकाना, जब वह आँख दिखाने लगा।
आँख लगना = प्रेम होना, सोना। उससे आँख लग गई, उसकी आँख लग गई।
चार आँखें होना = सामने होना, ज्यों ही उनकी चार आँखें हुईं।
आँख बदलना = मन फिरना, उसकी आँखें बदली दिखाई देती हैं।
आँखों में चर्बी छाना = घमण्ड होना, उसकी आँखों में चर्बी छागई है।
आँखें नीली पीली करना = नाराज होना, आँखें नीली पीली क्यों करते हो।

आँख उठा कर देखना = सामना करना, उसकी तरफ कोई आँख भी नहीं उठा सकता।

आँखों में खून उतरना = क्रोध से आँखें लाल होना।

पानी का बुलबुला = क्षणभंगुर, यह जीवन पानी का बुलबुला है।

पानी के मोल = बहुत सस्ता, पानी के मोल बिक गया।

पानी चढना = रंग आ जाना, सोने का पानी चढा है।

पानी पानी होना = अत्यन्त शर्मिन्दा होना लज्जा से पानी पानी होगया।

पानी पी पी कर = लगातार, पानी पी पी कर कोस रहा है।

पानी बुझाना = कोई गर्म वस्तु पानी में डालना, पानी बुझा कर पिलाओ।

पानी भरना = फीका पडना, उसके सामने पानी भरता है।

पानी मरना = कसूरवार साबित होना, उसकी तरफ पानी मरता है।

पानी म आग लगाना = असम्भव बात करना, पानी में आग लगाना है।

पानी भरी खाल = क्षणिक जीवन, पानी भरी खाल है।

अभ्यास

(१) अर्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो —

दण्ड डालना, दण्ड भरना, दण्ड पड़ना, दण्ड भोगना, दण्ड सहना दम भरना, दम मारना, दम सूखना दम के दम में, दम लगाना, दम उखड़ना, दम खींचना, दम देना, दम घुटना, दमपट्टी देना, दम में आना दुःख पाना, दुःख बटाना, दुःख देना, दुःख पडना, दुःख भरना दुनिया-दारी करना दुनिया की हवा लगना, दुनिया भर की बातें मारना दुनिया

भर का बखेड़ा उठाना, दुनिया से उठ जाना, दुनिया भर का सामान लादना, दुहाई देना, दुहाई मारना, दुहाई फिरना, दिन काटना, दिन दहाड़े लूटना, सिर पर चढ़ कर नाचना, नाच नचाना, नाच कूद करना, नाच रंग होना, सिर पर मौत नाचना, तीन तेरह होना, तीन पाँच करना, छुट्टी पाना, छुट्टी होना, छुट्टी रहना, ढील डालना, ढील देना, ढील छोड़ना, शान किरकिरी होना, शान बघारना, शान मारना, शान पर चढ़ना, हवा बँधना हवा उखड़ना, उलटी हवा चलना, हवा का रुख देखना हवा खाना, हवा लगना हवा चलना, हवा बदलना, हवा में उड़ना, हवाई महल बनवाना, साँस खींचना, साँस निकलना, साँस भरना, साँस लेना, गहरी बात, गहरी मार, गहरी चाल, गहरी चोट, टेढ़ी खीर, टेढ़ी बात, टेढ़ी चाल।

(२) अर्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो।—

'मूसलाधार पानी बरसता है' 'किंकर्त्तव्यविमूढ़ होगया' 'कुछ सूझता नहीं' 'रातों रात आगरे पहुँचा' 'तीन तेरह हो गया' 'तीन पाँच क्यों करते हो' 'पानी के बताशे हैं' 'हवाई महल है' 'अन्धाधुन्ध मच रही है' 'लेना एक न देना दो' 'ज्यों का त्यों रक्खा है' 'डाँवाँडोल हो गया' 'आँधी के आम हैं' 'सावन का अन्धा है' 'हरे में कूदी है' 'बक्बक् क्यों मचाई है' 'चलता हो' 'क्यों गुनगुना रहा है' 'साँप फुसकारता है' 'गाय रँभाती है' 'मोर कूकता है' 'कोयल कुहू कुहू करती है' 'कौआ काँव काँव कर रहा है' 'बकरी में में करती है' 'चोर गिड़गिड़ाता है' 'बादल उठ रहा है' 'घटा छा रही है' 'कमल खिल रहा है' 'चाँदनी छिटक रही है' 'निस्तब्धता छा रही है' 'मखमली फर्श हो रहा है' 'परिन्दा पर नहीं मार सकता' 'ऊपर की साँस ऊपर नीचे की नीचे' 'चील झपट्टा मारती है' 'चिड़िया चहचहाती है' 'बड़े ज़ोर की वर्षा होती है' 'टकटकी बँध गई' 'दिन दहाड़े लूट मच गई' 'छाती धक् धक् करने लगी' 'पसीने

पसीने हो गया' 'दिल की कली खिल गई' 'मन बाग बाग हो गया' 'पानी भरा बबूला है' 'पानी की आग है' पैंतरा बदल रहा है' 'तिउरी फट गई' 'तिउरी पलट गई' 'चाल न चल सका' 'बात पकड ली गई' 'रात का मामला है' जिन्दगी भारी पड गई' वे दिन न रहे' 'मान का पान ही अच्छा' 'आँखें फटी की फटी रह गई' 'मन मयूर-मत्त हो गया' 'अन्ततोगत्वा' 'आखिरकार' ।

वाक्य-रचना का अभ्यास

(च)

अनुच्छेद-रचना

"वाक्य पदों का वह नियमबद्ध संगठन है—जिसमें एक पूरा विचार प्रकट करने की शक्ति हो।" ऐसा वाक्य समूह जिसमें एक ही भाव प्रकट हो, अनुच्छेद कहलाता है, अर्थात् सापेक्ष वाक्य समूह ही अनुच्छेद है। अनुच्छेद रचना के समय एक वाक्य के ठीक पीछे ही दूसरा ऐसा वाक्य आता है जिससे विचारों का तारतम्य नष्ट न हो और जो कुछ हम कहना चाहते है उनका क्रम विकास होता जाय। जब तक वह पूरा भाव स्पष्ट न हो जाय जिसे हम व्यक्त करना चाहते हैं वाक्यों का सिलसिला बराबर चला जायगा। अनुच्छेद के वाक्यों में आकांक्षा, योग्यता और क्रम रहता है। इसलिये नीचे कुछ पद समूहों पर अनुच्छेद रचना करके दिखाते हैं —

संज्ञा पद :—

(१) संसार, सदाचार, शक्तियाँ, पवित्र, प्रेम, परमात्मा मन।

संसार में उसी को दुःख होता है जो सदाचार का पालन नहीं करता। सदाचार से शरीर की शक्तियाँ को बल मिलता है, मन निर्मल होता है, हृदय पवित्र होता है। लोग परमात्मा परमात्मा पुकारते हैं परन्तु, जिनके शरीर और मन शुद्ध नहीं हैं वह परमात्मा से प्रेम नहीं कर सकते। परमात्मा के प्रेम का साधन ही सदाचार है।

(२) जल, वायु, भोजन, श्वाँस, जीवन (ज़िन्दगी), प्राण।

मनुष्य-जीवन के लिये जल, वायु और भोजन की आवश्यकता है। वायु के बिना श्वाँस नहीं ले सकते। थोड़ी देर भी श्वाँस क्रिया को रोक लें तो प्राण छटपटाने लगते हैं। जल का तो नाम ही जीवन है। और बिना भोजन के मनुष्य कुछ दिन तक जी सकता है पर दिन पर दिन निर्बल होता जाता है।

अभ्यास

नीचे लिखे हुए प्रत्येक पद-समूह को अलग अलग अनुच्छेदों में लिखो :—

१—शाकुन्तल कालिदास, रचना, अनुपम, संसार, कवि कुल-मुकुट, तुलना।

२—विनय, मनुष्यता, शिष्टाचार, जीवन, पवित्र।

३—पर्वतमाला, रमणीय स्थान, अनुपम छटा, विनोद, स्वास्थ्यकर, घाटियाँ, भ्रमण।

४—दशरथ, अहिल्या, राम, जनकपुर विश्वामित्र, शोभा, गद्गद।

५—अशोकवाटिका, सीता, हनुमान, लंका, मुँदरी।

विशेषण पद:—

(१) भगवती, पवित्र, पुण्य, कार्तिकी, बड़ा, मनोहर, बृहत्काय, दर्शनीय।

भगवती भागीरथी के पवित्र अञ्चल में हरिहर क्षेत्र नामक पुण्य स्थान है वहाँ कार्तिकी पूर्णिमा के अवसर पर अनेक दिनों तक बड़ा मेला लगता है, जिसमें मनोहर घोड़े बृहत्काय हाथी, दर्शनीय बैल आदि पशु सहस्त्रों की संख्या में इकट्ठे होते हैं।

(२) धैर्यवान्, कर्त्तव्यशील, एक, विचित्र।

धैर्यवान व्यक्ति ही संसार में सफलता पा सकता है। कैसा ही कर्त्तव्यशील मनुष्य क्यों न हो बिना धीरज के एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। जीवन में कभी कभी विचित्र अवसर आते हैं उस समय मनुष्य उतावला हुआ और गया।

कहा है "उतावला सो बावला धीरा सो गम्भीरा"

अभ्यास

नीचे की पद-समष्टि पर अनुच्छेद रचना करो —

१—दैनिक, प्रतापशाली हितकारी, शान्ति और दूरदर्शी (दूर की सोचने वाला)

२—पूजनीय, पतित, तिरस्कृत, धैर्यवान और ज्ञानी।

३—लाल, हरा, मीठा, वन का टूटा हुआ।

४—रंग-बिरंगे, मनोहर, ऊँची नीची, शान्ति-दायक।

क्रिया विशेषण :—

(१) हाथोंहाथ, दिनभर, इधरउधर, एकदम, अचानक, अवश्य।

मैं सोनपुर के मेले में जो पुस्तकें ले गया था हाथों हाथ निकल गयीं। फिर दिन भर इधर उधर घूमता रहा अचानक स्वामी दयानन्द जी के दर्शन होगये। उन्होंने कहा "जब कभी इधर आओ मिल तो लिया करो।" मैंने कहा "क्षमा कीजिए, मेला देखकर सायकाल को आपके दर्शन अवश्य करता।"

(२) एकाएक, अकस्मात, कदाचित, बहुधा, व्यर्थ, दिनभर।

मैं कल एकाएक मथुरा पहुँच गया। अकस्मात् चौधरी कृष्ण गोपाल मिल गये। कदाचित श्रावणी तक वहीं ठहरे रहें। बहुधा ऐसा ही किया करते हैं। मैंने आगरे आने के लिये कहा किन्तु व्यर्थ हुआ। उनके पास दिन भर ठहर कर वहाँ से चला आया।

अभ्यास

नीचे लिखे क्रिया विशेषण समूहों पर अनुच्छेद रचना करो:—

१—शान्ति पूर्वक, प्रतिदिन, कथनानुसार, सर्वथा।

२—निरन्तर, पलमात्र, स्वभावत, नाममात्र, नियमानुसार।

३—इसलिये, अचानक, सहज, मुख्य करके, क्रमानुसार।

४—निदान, दौड़ते दौड़ते, जहाँ तक, लगातार, यदापि।

वाक्य—रचना का अभ्यास

(६)

मुहाविरों पर अनुच्छेद-रचना

१—रात ढलना, सन्नाटा छा जाना, हाथों हाथ, मालमता, नौ दो ग्यारह।

रात ढल चुकी थी, सन्नाटा छाया हुआ था हाथों हाथ कुछ दिखाई नहीं देता था, चुपके से चोर आया और सारा मालमता लेकर नौ दो ग्यारह हुआ।

२—मनमानी घरजानी, अंधाधुन्ध, दंग रह जाना, अपना सा मुँह लेकर लौटना।

यहाँ तो मनमानी घरजानी हो रही है, कोई किसी की नहीं सुनता। इस अन्धाधुन्ध का भी भला कहीं ठिकाना है! मैं तो यह दशा देखते ही दंग रह गया। किससे कहूँ और किस की सुनूँ। अपना सा मुँह लेकर उसी दिन लौट आया।

३—चलता पुरजा, हवा का रुख देखना, नाक मुँह सिकोड़ना, दाल न गलना, लैक्चर फटकारना।

मोहन बड़ा चलता पुरजा मनुष्य है, हवा का रुख देख कर बातें करता है। कल तक तो वह समाज सुधार के नाम से नाक मुँह सकोड़ता था किन्तु जब देखा कि अब दाल नहीं गलने की, तो अछूतोद्धार पर एक लम्बा लैक्चर फटकार दिया।

४—जैसे तैसे, यत्किञ्चित, हाथ लगना, चट कर जाना, लम्बी तानना।

मैं अत्यन्त दुर्बल हो रहा था। जैसे तैसे दो चार घण्टे में पर्वत शिखर तक जा पहुँचा। भूख जोर से सता रही थी। यत्किञ्चित् सामान हाथ लगा। चुपचाप चट कर गया ... ऐसी लम्बी तानी कि पता भी न चला रात कब बीत गई।

अभ्यास

हर एक समूह पर सापेक्ष वाक्य-समूह लिखो —

—दिन दहाड़े, दुहाई देना, दम घुस्क होना, दण्ड भोगना।

—डांट बताना, नाचकूद करना, दम में आना, टकटकी बँधना।

—तिउरी बदलना, दाल न गलना, चाल चलना, मनमानी करना हाथ मलते रहना।

—कुढ़ कुढ़ करना चहचहाना, कूकना, पीउपीउ चिल्लाना, भनभनाना, टर् करना।

वाक्य रचना का अभ्यास

(१०)

कहावतों का प्रयोग

कहावतें ऐसे मुहाविरेदार वाक्य (उक्तियाँ) हैं जो एक स्वतन्त्र अर्थ रखती हैं और मनुष्य अपने कथन की पुष्टि में अथवा अपने पक्ष में फैसला लेने के अभिप्राय से, अथवा किसी बात को किसी आड से कहना हो उस समय, अथवा किसी के प्रति उपालम्भ देना हो, अथवा जब किसी को चेतावनी देनी हो, तो उनका प्रयोग किया करते हैं। उन्हें 'कहावत' या 'लोकोक्ति' अथवा 'जन-श्रुति' कहते हैं।

उलटा काम करने वाले को अच्छा फल न मिले तो वहाँ स्पष्ट यह कह कर "तुमने बुरा किया अत: बुरा हुआ" एक लोकोक्ति कह दी ' जैसी करनी पार उतरनी" अवसर निकल जाने के बाद सम्हलने वाले से "अब पछताये होत का चिड़ियाँ चुग गईं खेत।" "का बरसा जब कृषी सुखाने।" आदि।

इस प्रकार सहस्रों कहावतें जनता में कही और सुनी जाती हैं। उन कहावतों का भावार्थ समझ कर वाक्यों में प्रयोग करने से वाक्य रचना का अच्छा अभ्यास होता है।

जब पृथक् २ कहावतों का प्रयोग करते हैं तो सापेक्ष वाक्य समूह का कहावत पर निचोड होता है, जैसे —

देखिये ऊँट किस करवट बैठता है।

अभी परिणाम विदित नहीं हुआ। उद्योग तो खूब किया पर ठीक नहीं कह सकता कि "ऊँट किस करवट बैठे।"

एक का इलाज दो और दो का इलाज चार।

भाई, कल रात को एक दुर्घटना हो गई। जब मै घर आ रहा था दो चोरों ने घेर लिया यद्यपि मैंने बहुत साहस

किया, तथापि आप जानते ही हैं कि "एक का इलाज दो और दो का चार।" यह कपडे लत्ते लेकर लम्बे बने।

सॉईं घोडनि के अछत गदहन आयो राज।

यहाँ तजुरुबेकार पुराने लोगों को कोई पूछता ही नहीं बेचारे सच्चे सीधे एक कोने में पड़े हैं। परन्तु कुछ चालबाज लोगों ने अपना ऐसा गुट्ट बनाया है कि उनके सामने किसी की नहीं चलती। यह दशा देख कर हमें यह मसल याद आती है "सॉईं घोडनि के अछत गदहन आयो राज।"

फरा सो झरा और बरा सो बुताना।

जो आर्य्य-जाति किसी समय सभ्यता के शिखर पर चढ़ी थी, जो एकता और प्रेम के मद में मस्त थी, आज वही अज्ञान, द्वेष, कलह और फूट का शिकार बन रही है। सदैव एक सी दशा किसी की नहीं रहती। यह ईश्वरीय नियम है, "फरा सो झरा और बरा सो बुताना।"

अपनी अपनी ढापुली अपना अपना राग।

अविद्या के अँधेरे ने एकता सूत्र का तोड मोड डाला। यह हिन्दू जाति अनेक सम्प्रदाय और अनेक वर्गों में बट कर अलग अलग हो गई। कोई किसी की बात नहीं मानता है, "अपनी अपनी ढापुली अपना अपना राग" वाली बात हो रही है।

हाथी चले ही जाते हैं कुत्ता भूँकते ही रहते हैं।

संसार में सबकी बुराई भलाई होती है परन्तु बुद्धिमान पुरुष मूर्खों की बात पर कभी ध्यान नहीं देते, वह अपने मार्ग से तिल भर भी नहीं हटते, वह जानते हैं कि "हाथी चले ही जाते हैं और कुत्ते भूँकते ही रहते हैं।"

बड़े लोगों के कान होते हैं, आँख नहीं।

हमारे देश में बड़े लोग लड़कपन से ही कुछ खुशामदी लोगों के हाथ के खिलौने बन जाते हैं। यही बनावटी भक्त उनके विचारों और व्यवहारों के विधाता बन बैठते हैं। जो कुछ इन्होंने कह दिया, जो कुछ समझा दिया वह बेपेंदी के लोटे की तरह इधर उधर लुढ़कते फिरे। तभी तो कहते हैं, 'बड़े लोगों के आँखें नहीं होतीं, कान होते हैं।"

एकार्थक अनेक कहावतों को जब एक अनुच्छेद में प्रयोग करते हैं तो किसी मुख्य भाव की पुष्टि होती।
नीति सम्बन्धी कहावतें—

मनुष्य स्वार्थ वश हो कर नीच से नीच कर्म करने पर उतारू हो जाता है। स्वार्थ भरी संकीर्ण दृष्टि से संसार के सारे कामों को देखता है। उसके हृदय में नीति-धर्म के तत्वों के लिये कोई भी स्थान नहीं रह जाता। उसे तो यार की यारी से काम उसके फैलों से क्या काम? संसार में "मुख्य है दाल रोटी और सभी बात खोटी" होने के कारण "मतलब से मतलब" है। न किसी के अन्यायों पर क्षोभ है न किसी के न्याय पर हर्ष। उसके द्वारा "साठ गाँव का चौधरी बहत्तर गाँव का राव, अपने काम न आवे तो भाड़ में जाव" की अशीष पाता है। वह भी भली प्रकार समझ लेता है कि "स्वारथ के सब ही सगे बिन स्वारथ कोउ नाहिं" उसके लिये "स्वारथरहित सखा सब ही के" कथा के मदा हैं "वह मीठे के लिये दूसरों की जूठन पर लार टपकाता है" ऐसी ही परिस्थिति में फँस कर नीति तत्व का यह मन्त्र—

"रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरै मोती मानुष चून॥"

उनकी निगाहों में क्या मूल्य रख सकता है। उसके निकट 'तिरिया तेल हमीर हट' निरी मूर्खता और 'सत मत छोड़े सूरमा सत छोड़े पति जाय' पागलों का प्रलाप है। परन्तु जब भाग्य-चक्र घूमता है, क्षुद्र स्वार्थ-चक्करों से मनुष्य छुटकारा पाकर ऊपर उठता है तब 'पर स्वारथ के कारने सज्जन धरत सरीर' का महत्त्व देखने लगता है और 'निज कारन दुख ना सहे सहे पराये काज' का तत्त्व समझ पड़ता है 'तुलसी सन्त सुअम्रतरु फूलि फलें पर हेत' अथवा 'परोपकाराय सता विभूतय' का रहस्य छिपा नहीं रह सकता। उस समय 'वर मरे कि कन्या मुझे तो पौरे टका से काम' वाला नर पशुओं का समुदाय देखकर त्रास होता है।

खेती सम्बन्धी कहावतें —

उनके हृदय में यह 'उलट वेद' की बात जम जाती है —

'खेती करे न बजे जॉय, विद्या के बल बैठे खॉय।'

विद्या क्या हुई ठगी हुई। बिना कुछ किये बैठे बैठे खाना क्या कोई जीता है? खेती के लिये तो —

'बॉध कुदारी खुर्पी हाथ, हँसिया लाठी राखे साथ।
काटे घास निरावे खेत, वही किसान करें निज हेत॥'

जब किसान —

'छॉडे खाद जोत गहराई तब खेती का मजा उठाई।'

और यदि —

'जोते खेत घास ना टूटै, ताका भाग साँझ ही फूटै।'

अनेक किसान खर्च तथा खेत की कमी के कारण दूसरों के साझे में खेती करते हैं। बहुत से लोगों को ऐसी अवस्था में लाभ भी हो जाता है और बड़े बूढ़े कहते आये हैं —

'काँटो बुरो करील को अरु बदरी को घाम।
सौति बुरी है चून की अरु साझे को काम॥'

साझे के काम म बड़े बड़े झगड़े हो जाते हैं। मैं-मे तू-तू में ठीक वक्त पर काम नहीं होता। कहा यह है—अगसर खेती अगसर मार घाघ कहैं ये कबहूँ न हार। इससे साझा बहुत सोच समझ कर करना चाहिये। आषाढ़ मे पहले ही खेत की मेंड बाँधकर ऐसा बना देना चाहिये कि उसका पानी न निकलने पावे। इसी से नीचे में खेत अच्छा होता है। उसम पानी की रोक हो सकती है —

'जिसका ऊँचा बैठना, जिसका खेत निचान।
उसका वैरी क्या करे, जिसका मीत दिमान॥'

गेहूँ के लिये तो निचान खेत ही चाहिये, थोड़ा भी पानी उसमें पहुँचे तो बाहर न निकले। 'गेहूँ आये बाल,' खेत बनाओ ताल' और धान का तो पानी ही प्राण है 'काले फूल न पाया पानी, धान मरा अधबीच जवानी' कहाँ तक कहें खेती के ज्ञान भरे हजारों मन्त्र हैं, सबका साराश यही है 'धूल पानी धूल पानी।'

अभ्यास

नीचे लिखी कहावतों का अर्थ करो और वाक्यों में लाओ :—

"घर में भूँजी भाँग नहीं" "घर घर मटियाले चूल्हे है।" "चन्नी का नाम गाढ़ी" "चार दिन की चाँदनी फेर अँधेरी रात" चुनी कहे मुझे घी से खा" "छछूँदर के सिर में चमेली का तेल" "छटी का दूध ज़बान पर आगया" "जब तक साँस तब तक आस" "जमात से करामात" "जन्म के दुखी नाम चैनसुख" "जन्म के अन्धे नाम नैनसुख" "जाओ पूत दक्खिन वही करम के लक्खिन" "जैसे कन्था घर रहे तैसे गये विदेश" "जैसे नाग नाथ तैसे साँप नाथ" "जो धन दीखे जात तो आधा लीजे बाँट" "जोगी जोगी लड़े खप्परों की हानि" "तलवार की आँच बुरी होती है" "तन पर नहीं लत्ता पान खाय अलबत्ता।"

वाक्य-रचना का अभ्यास

(११)

वाच्यार्थ, भावार्थ, तात्पर्य्य और व्याख्या

गद्य पद्य वाक्यों के वाच्यार्थ, तात्पर्य्य, भावार्थ और उनकी व्याख्या लिखने में वाक्य-रचना का अच्छा अभ्यास होता है।

वाच्यार्थ—वाक्य के कठिन शब्द और मुहाविरों को सरल वाच्यार्थ में बदल कर, सुबोध वाक्य में उसे परिवर्तित कर देते हैं, उसे वाक्य का सरलार्थ कहते हैं, जैसे :—

"धनि रहीम जल पंक को लघु जिय पियत अघाय।
उदधि बड़ाई कौन है जगत पियासो जाय॥"

गद्यान्वय—रहीम, पंक को जल धन्य (जेहि) लघुजिय अघाय पियत, उदधि (की) कौन बड़ाई (है) (जिससे) जगत पियासो जाय।

रहीम कहते हैं कीच का जल धन्य है। जिसे छोटे छोटे जीव भरपेट पी लेते हैं, समुद्र की क्या बड़ाई है जिस के पास से संसार प्यासा जाता है।

भावार्थ—पर्य्याय शब्दों के द्वारा किये हुए अर्थ का त्याग कर केवल भाव पर स्वतन्त्र वाक्यों में जो अर्थ किया जाता है वह भावार्थ है। ऊपर के दोहे का भाव यह है—"उस बड़प्पन की अपेक्षा जिससे किसी का कार्य्य न सधे उस क्षुद्र वस्तु को धन्य है जो दूसरों के हित में लगे।"

तात्पर्य्य—वक्ता की इच्छा को तात्पर्य कहते हैं। तात्पर्य निर्णय के समय अर्थवाद (विषयान्तर) की बातें पृथक् कर दी जाती हैं। "हाथ कमल के समान सुन्दर है"— इसमें कमल अर्थवाद है। तात्पर्य्य यह है हाथ बहुत ही कोमल और सुन्दर है।

चतुर्थ अध्याय

रचना के लिये ज्ञातव्य बातें

(१)

काव्य, रस, गुण, दोष, रीति, छन्द और गद्य भाषा

रसात्मक वाक्य का नाम 'काव्य' है। जिस रचना के पढने से पाठक के हृदय में एक अनिर्वचनीय आनन्द का उदय हो उसका नाम 'काव्य' है। जिस व्यक्ति को आधार मानकर किसी काव्य की रचना की जाती है, वह उस काव्य का 'नायक' कहलाता है और नायक का प्रतिद्वन्द्वी प्रतिनायक, जैसे.—रामायण में राम नायक और रावण प्रतिनायक है। नायक और प्रतिनायक के सिवाय गौणरूप से अन्य पुरुषों का वर्णन भी रहता है।

काव्य के दो भेद है—श्रव्य और दृश्य। पढ़ने और सुनने योग्य काव्य 'श्रव्य' कहलाता है, जैसे—रामायण। और जिसका अभिनय किया जा सके वह 'दृश्य' काव्य है, जैसे—नाटक, प्रहसन आदि। श्रव्य काव्य के दो भेद हैं—महाकाव्य और खण्डकाव्य।

महाकाव्य—किसी देवता या प्रसिद्ध पुरुष के चरित्र के आधार पर की हुई जिस रचना में सम्पूर्ण रस और भावों का विस्तृत वर्णन हो, शान्त, वीर और शृङ्गार में से कोई रस प्रधान हो। उसे महाकाव्य कहते है। महाकाव्य में १८ से लेकर ८ सर्ग तक होते हैं, जैसे—महाभारत, रामायण, प्रियप्रवास आदि।

खण्डकाव्य—जिस काव्य म काव्य के थोडे से अङ्गों का वर्णन हो उसे खण्डकाव्य कहते है, जैसे—जयद्रथ-वध।

रस

किसी वर्णन को सुनकर या पढ़कर अथवा नाटकादि का अभिनय देखकर हृदय में जो एक स्थायी और अपूर्व भाव पैदा होता है उसे 'रस' कहते हैं। रस नौ प्रकार के होते हैं :—

(१) शृङ्गार—नायक-नायिका के अनुराग विषयक भाव के नाम को शृङ्गार कहते हैं।

(२) वीर—दया, धर्म, दान, देशभक्ति और संग्राम में उत्साह-विषयक भाव के वर्णन में वीर रस होता है।

(३) करुणा—प्रिय वस्तु के वियोग और अप्रिय वस्तु के संयोग में जो शोक होता है, उसे करुणा कहते हैं।

(४) अद्भुत—आश्चर्यजनक विषय को देख कर, सुन कर, पढ़ कर जो आश्चर्य का भाव उत्पन्न हो उसे अद्भुत रस कहते हैं।

(५) रौद्र—क्रोध उत्पन्न करने वाले को रौद्र रस कहते हैं।

(६) भयानक—जिससे मन में भय हो उसे भयानक रस कहते हैं।

(७) वीभत्स—जिसके द्वारा मन में घृणा उत्पन्न हो, वह वीभत्स रस है।

(८) हास्य—हँसी का भाव जहाँ पैदा हो वहाँ हास्य रस होता है।

(९) शान्त—तत्त्व ज्ञान आदि से मन में जहाँ शान्ति उत्पन्न हो वहाँ शान्त रस होता है।

सरस रचना में इन्हीं रसों में से एक या कई रस होते हैं।

गुण

रस को बढाने वाले धर्म को 'गुण' कहते हैं। गुण के तीन भेद हैं —माधुर्य्य, ओज और प्रसाद।

माधुर्य्य—जिस रचना को सुनकर चित्त द्रवीभूत हो जाय उसे माधुर्य्य गुण' करते हैं।

ओज—जिस रचना से चित्त में उत्तेजना, वीरता और साहस बढ़े वहाँ 'ओज गुण' होता है।

प्रसाद—जिस रचना को सुनते ही उसके अर्थ का भान हो जाय वहाँ 'प्रसाद गुण' होता है।

रीति

रचना के लिये पद योजना करने की पद्धति को रीति व शैली कहते हैं। भिन्न भिन्न लेखकों की भिन्न भिन्न शैली है। इसी लेखन-शैली के उत्कर्ष के अनुसार रचना की सुन्दरता बढती है। उत्कर्ष-शैली के लिये स्पष्टता, माधुर्य्य, पद प्रयोग की सार्थकता, चित्ताकर्षकता, भाषा वैचित्र्य और भाव प्रतिफलन का ध्यान रखना चाहिये।

(१) स्पष्टता—रचना के पढ़ने से अर्थ बोध में कठिनता न हो। स्पष्टता को गुण विशेष कह सकते हैं। बिना स्पष्टता के रचना के अन्य गुण व्यर्थ हो जाते हैं। लेख के भावों को सरलतापूर्वक पाठक समझ सकें इसका ध्यान रखना परम आवश्यक है। रचना-गौरव के लिये कभी कभी लेखक इस प्रकार पद-विन्यास करते हैं जिससे यह नहीं समझ सकते कि किस पद का सम्बन्ध किससे है। कोई कोई कठिन और अप्रचलित शब्दों का प्रयोग करते हैं। अनेक लेखक थोडे से शब्दों में व्यक्त होने वाले भाव को बडे बडे वाक्यों में प्रकट

करते हैं, ऐसे स्थान पर भाव की जटिलता बढ़ जाती है। रचना को स्पष्ट करने में इन दोषों का परिहार करना चाहिये।

(२) माधुर्य्य—हृदय के भाव प्रकाशन में जो स्वाभाविक वाक्य मुँह से निकालते हैं, उन्हीं सब वाक्यों के साधारण विन्यास द्वारा रचना में सरलता लाने की चेष्टा करनी चाहिये। प्रसंग के प्रतिकूल वाक्य विन्यास द्वारा रचना का माधुर्य्य नष्ट होता है। शान्त और करुणा रस के व्यक्त करने वाली पदावली कोमल होनी चाहिये न कि दुर्बोध और बहु-समास-सम्पन्न। धर्म और नीति मूलक रचना में सजीवता तथा भाव-गाम्भीर्य्य की रक्षा होनी चाहिये, नहीं तो सौन्दर्य्य नष्ट हो जायगा। जैसा गंभीर विषय हो उसी प्रकार उसमें गौरव भी आना चाहिये। वीर, रौद्र और वीभत्स आदि रसों में जटिल और समास युक्त भाषा द्वारा ओज बढ़ता है।

(३) पद-प्रयोग की सार्थकता—जिन वाक्य-समूह व पदों का प्रयोग करें वह अप्रासंगिक* होंगे तो व्यञ्जकता+में जटिलता आ जायगी और अर्थ का स्फुरण × ठीक न हो सकेगा। निरर्थक शब्दों के प्रयोग से रचना फीकी हो जाती है। अनेक लोग एक ही भाव को अनेक वाक्यों में भिन्न २ तरह से दिखाकर उसे व्यर्थ बढ़ाते हैं। थोड़ी सी बात का यह मतलब नहीं है कि वह सहज ही में न समझी जा सके।

(४) चित्ताकर्षकता—लेखक की पदावली ऐसी गौरवशालिनी हो जो पढ़ते ही पाठकों के चित्त को अपनी ओर खींचले। लेखक

---

*प्रसंग के बाहर के। +भाव प्रकट करने की शक्ति। ×स्फुरना।

जहाँ दुःख और शोक प्रकाशित करे, पढते ही पाठक भी उसे अनुभव करने लगें। किसी विषय को पढ कर, देख कर या सुन कर, पाठक दर्शक और श्रोता के मन में उस अनुभव के कारण एक अनिर्वचनीय 'विकार' उत्पन्न हो उसे भाव' कहते हैं। रचना विशेष के पढने आदि से उत्साह, शोक, विस्मय क्रोध, भय, स्नेह, हास्य, घृणा और विरति उत्पन्न होती है। पाठकों के मन को उसका पूरा अनुभव करा देना ही रचना की प्रशसा है। सुलेखक को पद विन्यास का गौरव भली प्रकार जान लेना चाहिये।

सुकुमारता—भाषा का एक गुण और है। लालित्य विहीन होने पर सारयुक्त भाषा भी पाठकों का चित्ताकर्षण नहीं कर सकती। भाषा की रीति का हर एक लेखक को ध्यान रखना चाहिये। कर्कश शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिये, इससे 'श्रुति-कटु' दोष पैदा होता है और भाषा की कोमलता नष्ट हो जाती है। नीचे दर्जे की भाषा में ग्राम्य दोष होने से श्रुति मधुरता नहीं होती। अर्थागम में सन्देह, अप्रसिद्ध, अर्थ में अनेक अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग, किसी अर्थ वाले शब्द का दूसरे अर्थ में प्रयोग, कष्टार्थक कल्पना, अनावश्यक पद प्रयोग और आवश्यक पदों के अभाव का ध्यान रखना चाहिये। परस्पर अपेक्षा रखने वाले पदों अथवा वाक्यों की अर्थ समता पर ध्यान रखना चाहिये। कभी भी एक वाक्य को हठात् दूसरे वाक्य के भीतर लाने की चेष्टा न करनी चाहिये। अव्यय पदों के ठीक ठीक प्रयोग में भाषा का सौदर्य्य बढता है।

भाषा वैचित्र्य—भाषा का एक विशेष गुण है। वर्णित विषय को ऐसे सुन्दर भावों से सजाना चाहिये जिससे उसका सौदर्य्य और आकार स्पष्ट दीखने लगे। साधारण भाव वाले पदों से

विन्यास में वह स्पष्टता नहीं होती। अर्थालंकार और दृष्टान्तों से विषय का सौन्दर्य्य और आकार प्रत्यक्ष होता है। भाषा में जितना वैचित्र्य होगा, भाव में सौंदर्य्य का उतना ही उदय होगा। 'वाक्य के रूपान्तर' प्रकरण में भाषा वैचित्र्य के कुछ उदाहरण दिखा चुके हैं।

भाव प्रतिफलन—जिस प्रकार सूखे काठ में अग्नि शीघ्र प्रवेश करती है उसी प्रकार भाषा में कहे हुए भाव भी शीघ्र प्रतिफलित हों, अर्थात् पढ़ते ही भाव समूह पाठकों के चित्त में व्याप्त हो जायँ। 'परोपकार', जन साधारण में ज्ञान की वृद्धि और 'मन का विकास', यही रचना के मुख्य उद्देश्य हैं।

छन्द

वह वाक्य जिसमें वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार विराम आदि का नियम हो 'छन्द' कहलाता है। यह दो प्रकार का होता है —वर्णिक और मात्रिक। जिस छन्द के प्रतिचरण में अक्षर की संख्या और लघु-गुरु के क्रम का नियम होता है वह 'वर्णिक' या 'वर्णवृत्त' और जिसमें अक्षरों की गणना और लघु-गुरु के क्रम का विचार नहीं, केवल मात्राओं की संख्या का विचार होता है वह 'मात्रिक' छन्द कहलाता है, रोला, रूपमाला, दोहा, चौपाई इत्यादि मात्रिक छन्द हैं, वंशस्थ, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, मालिनी, मन्दाक्रान्ता इत्यादि वर्णवृत्त हैं।

गद्य

वह लेख जिस में मात्रा और वर्णों की संख्या और स्थान आदि का कोई नियम न हो और जिसमें कर्त्ता और क्रियादि पद यथा स्थानों पर स्थित हों।

१५—अनुप्रास, यमक आदि शब्दालंकारों की भरमार से रचना को जटिल नहीं बनाना चाहिये।

१६—अनेक सम-कारक पद एक वाक्य में आवें तो अन्तिम पद के पूर्व संयोजक या वियोजक अव्यय लाना चाहिये और प्रथम को छोड़कर शेष पदों के पूर्व अल्प-विराम।



पञ्चम अध्याय

पत्र-लेखन

(२)

पत्र-लेखन रचना का मुख्य अङ्ग है। लेख, निबन्ध और पुस्तकादि लिखने वालों की संख्या तो परिमित होती है किन्तु प्राय पत्र लिखने लिखाने का काम तो समाज के हर एक सदस्य को पड़ता ही है। गार्हस्थिक सामाजिक, नैतिक तथा धार्मिक ऐसी अनेक आवश्यकताएँ होती हैं जिनके लिये हमें दूरस्थ मित्रों, सम्बन्धियों, सम्पादकों, शासकों तथा आत्मीय जनों को पत्र लिखना पड़ता है अथवा उनके पत्रों का उत्तर देना पड़ता है। पत्रों में कामकाजी साधारण बातों से लेकर बड़े बड़े ऐतिहासिक, दार्शनिक, सामाजिक और नैतिक विषयों का उल्लेख करना पड़ता है। उच्च श्रेणी के पत्र योग्य लेखक ही लिख सकते हैं, उन्हें निबन्ध रचना के सम्पूर्ण नियमों की जानकारी आवश्यक है। किन्तु साधारण योग्यता तो हर एक अक्षराभ्यासी के लिये अपेक्षित है, इसलिये मुख्य मुख्य बातें नीचे लिखी जाती हैं।

पत्र लिखते समय दो प्रकार की बातों पर ध्यान देना चाहिये —

१—पत्र-सम्बन्धी सभ्यता अर्थात् शिष्टाचार।

२—मुख्य विषय।

शिष्टाचार

१—शिष्टाचार के लिये यह देखना चाहिये कि हम जिनको पत्र लिख रहे हैं वह पूज्य, मान्य, आत्मीय, सम्बन्धी या परिचित हैं। प्रचलित नियम के अनुसार उनके लिये वैसी ही प्रशस्ति (सरनामा) लिखना चाहिये।

२—हिन्दी में प्रचलित प्रणाली के दो भेद हैं, प्राचीन और नवीन।

पुराने ढग के व्यापारी, जमींदार, पडित तथा अन्य लोग अब भी पुरानी प्रथा के अनुसार पत्र लिखते है और नये विचार के लोग नये ढग से शिक्षा पाये हुए अथवा उनसे सम्पर्क रखने वाले लोग–नवीन परिपाटी से पत्र लिखते है।

नवीन परिपाटी में व्यर्थ की बहुत सी बातें न लिख कर मुख्य मुख्य बातों को सक्षेप में लिख देते हैं। आजकल इसी का अधिक प्रचार हो गया है और होता जा रहा है।

पुरानी प्रथा के सरनामे इस प्रकार के होते है :—

सबसे प्रथम किसी देवता या ईश्वर को नम लिखते है, जैसे —श्रीकृष्णायनम , रामायनम.। बडों को सिद्धश्री सरगोपमा विराजमान सकलगुण निधान श्री शुभस्थान योग्य लिखी से की नमस्कार, प्रणाम, दण्डवत् , (आदि प्रणाम वाची शब्द '

नाम से पहले पदवी, अवस्था योग्यता अथवा केवल सम्मान के लिये 'विद्यानिधि', वयोवृद्ध,' 'विद्वद्वृन्द-शिरोमणि', 'परम प्रतापान्वित्त' आदि एक वा कई विशेषण और जोड देते हैं।

पुरानी प्रथा में नाम के साथ श्री श्री श्री लिखने की भी प्रथा है। पृथक् पृथक् न लिख कर एक बार 'श्री' लिखकर उसके आगे जितनी श्री लिखनी योग्य हों उतने का अङ्क बना देते हैं, जैसे :—श्री ५।

श्री लिखने का नियम यह है गुरू को ६, बडों को ५ शत्रु को ४, मित्र और बराबर वालों को ३, सेवक को २, और स्त्री को १।

'अत्र कुशलम् तत्रास्तु' अथवा 'आपकी कृपा से', 'भगवान् श्री कृष्णचन्द्र आनन्दकन्द की कृपा से' 'श्री गगा जी

की कृपा से' 'यहाँ कुशल है' आपकी कुशल सदैव चाहते हैं लिखकर 'आगे समाचार यह है', अथवा 'समाचार एक वचना जी' अन्त में 'पत्र शीघ्र भेजिये' 'उत्तर शीघ्र दीजिये' तथा शुभभूयात्, शुभमस्तु, इति शुभम् और तिथि।

छोटों और बराबर वालों को 'सिद्ध श्री' की जगह 'स्वस्ति श्री' तथा प्रणाम की जगह 'आशीर्वाद', 'अशीष', 'जै रामजी की' 'जै श्री कृष्ण जी की' 'जै गंगा जी की' तथा 'राम राम' आदि लिखते हैं।

नवीन प्रथा में देवता अथवा ईश्वर के प्रणाम के पीछे पत्र लिखने के कागज की दाईं ओर कोने पर वह स्थान लिखते हैं जहाँ से पत्र लिखा जाता है, फिर उसके ठीक नीचे तिथि व तारीख।

बड़ों को—'पूज्यपाद', 'पूज्यचरणेषु', 'महामहिम', 'मान्यवर', 'महामान्यवर', 'श्रद्धास्पद', 'श्रीचरणेषु', प्रशस्ति में लिखकर अन्त में 'कृपापात्र, कृपैषी', 'प्रणत, 'स्नेह भाजन, 'दास', 'सेवक', 'कृपाभिलाषी', आदि लिख कर अपना नाम लिख देते हैं।

बराबर वालों को—'प्रियवर', 'प्रियमित्र', 'प्रियबन्धु', 'प्रियवर स्नेही जी', प्रियवर विद्यार्थी जी', 'प्रियवर वर्मा जी' आदि उपनाम भी साथ में लिख देते हैं, कोई कोई नाम भी 'प्रियवर सत्यव्रत जी' लिख देते हैं।

नीचे आपका 'स्नेही' 'मित्र' या केवल 'आपका' या 'भवदीय' लिख कर अपना नाम लिख देते हैं।

छोटों को—'चिरंजीव', 'आयुष्मान्, स्नेहास्पद', आदि लिखकर अन्त में 'हितैषी', शुभचिन्तक', आदि शब्द लिखते हैं।

स्त्री अपने पति को—'प्राणपति, 'प्राणनाथ', 'प्राणाधार' आदि पद लिखकर नीचे केवल 'दासी', 'सेविका' आदि लिखती हैं।

सरनामा के पीछे—यदि पत्र का उत्तर देना हो तो "आपका पत्र मिला आनन्द हुआ"। "आपका पत्र पढ़ कर

आनन्द हुआ"। "पत्र पढते ही आँखों मे आनन्दाश्रुओं की धारा वह निकली।" यदि कोई आश्चर्य की वात हो 'पत्र पढते ही दग रह गया।' आश्चर्य का पारावार न रहा।' और यदि कुछ चिन्ताजनक या दु:खद वात हुई तो 'पत्र पढ़ कर वडी चिन्ता हुई।' 'दु ख का पारावार न रहा।' 'वहुत दु:ख हुआ' आदि लिख कर पत्र के विषय से वाक्य रचना को मिला देते हैं।

पत्र स्पष्ट और सुन्दर अक्षरों में लिखना चाहिये।

पता लिखना

'पता-लिखना' पत्र-लेखन कला का मुख्य अङ्ग है। यों तो कुल पत्र ही स्पष्ट और सुन्दर अक्षरों में लिखना चाहिये, परन्तु पता लिखने मे वडी सावधानी रखनी चाहिये। पत्र लिख कर लिफाफे में वन्द कर देते हे और लिफाफे के ऊपर स्पष्ट अक्षरों में ठीक रीति से पता लिखते हैं। पुराने ढग के लोग पत्र के ऊपर भी वहुत वडा सरनामा लिख देते हैं। नाम के साथ पदवी आदि के अतिरिक्तऔर कुछ न लिखना चाहिये। नाम के नीचे स्थान लिखो। यदि पत्र डाक से भेजना है तो जिला और डाकखाना भी होना आवश्यक है यदि कार्ड पर खुला हुआ पत्र हो तो उसके पीछे पता लिखना चाहिये।

श्रीयुत प० रामजीलाल शर्मा हिन्दी प्रेस, प्रयाग। प्रयाग U P	टिकट

श्रीयुत प० लक्ष्मीधर वाजपेयी c/o साहित्य कार्यालय, दारागज, प्रयाग।	टिकट

मुख्य विषय

१—पत्र लिखने से पूर्व सोचना चाहिये कि हमें क्यों पत्र लिखना है। पत्र में जितनी बातें लिखनी हैं उनका संकेत एक कागज पर लिख लो।

२—यदि दूसरे के पत्र का उत्तर देना है तो देखो वह क्या क्या बातें आपसे जानना चाहता है अथवा उसकी बिना इच्छा के क्या क्या बता देना चाहते हो। यह सब संकेत कागज पर लिखलो।

३—हर एक संकेत के भाव को सापेक्ष वाक्यों में लिखकर पूरा करो।

४—हर बात को क्रमबद्ध लिखो। एक बात पूरी न करलो तब तक दूसरी प्रारम्भ न करो। जो लोग बिना संकेतों के एकदम लिखना प्रारम्भ कर देते हैं—कोई बात जरा सी कहली, झट दूसरी शुरू करदी, वह भी पूरी नहीं हो पाती कि पहिली बात का एक और अंश याद आया—लिखने लगे। ऐसा करने से अपने मन की बात ठीक ठीक दूसरे के पास नहीं पहुँचा सकते हैं और पत्र पढ़ने वाला बड़ी अड़चन में पड़ जाता है।

५—पत्र की भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिये। यथाशक्ति अपने भाव को सरल वाक्यों में क्रमबद्ध प्रकाशित करते जाओ।

६—पत्र लिखते समय सोचलो कि जिसको तुम पत्र लिख रहे हो वह सामने उपस्थित है और तुम उससे बातें करते जा रहे हो। ऐसा करने से तुम्हारी भाषा और क्रम में स्वाभाविकता रहेगी।

७—पत्र समाप्त करने से पहले अपने संकेतों और पत्र को मिला लो। कोई आवश्यक बात छूट गई हो तो उसे पूरा करलो। फिर उचित शब्दों के साथ उसे समाप्त करो।

८—पत्र में कोई उपदेश, कहानी या निबंध लिखना हो तो उसे इस तरह जोड़ो जिससे यह न पता चले कि यह व्यर्थ ही आडम्बर लाद दिया है।

९—कहानी या लेख के विभाग-निबंध रचना के नियमानुसार—करके उसे पूरा करो। कोई उपदेश नीति या सार निकलता हो, उसे फिर इन शब्दों के साथ 'साराश यह है' 'भाव यह है' 'तात्पर्य यह है लिख कर फिर उस पर उसका ध्यान ले जाओ जिसको पत्र लिख रख रहे हो।

१०–उचित रीति से पत्र को समाप्त करदो।

पुरानी प्रथा के पत्र लिखने का नमूना

श्री हरि

सिद्धि श्री सर्वोपमा विराजमान सकल गुण-निधान शुभस्थान बाडी विद्वद्वृन्दशिरोमणि पूज्य मामा जी को योग्य लिखी आगरे से रामरत्न, चन्द्रहस, नारायणप्रसाद, श्यामाचरण, प्रभूदयाल तथा शिवशंकर का अनेक प्रणाम बचना जी। अत्र कुशलम् तत्रास्तु। अपरञ्च हाल यह है कि पत्र आपका आया। समाचार जाने। आपने लिखा है कि आम पक रहे हैं। इन दिनों में कोई आओ, अचार के लिये भी आम लेजाओ। निवेदन यह है कि आपकी आज्ञा तो माननी ही चाहिये परन्तु कार्य बहुत हैं। एक पल की भी फुरसत नहीं। मौका लगने पर जरूर कोई न कोई आवेगा। आपके दर्शनो की भी बडी इच्छा है। आपने कहा था कि सावन में हम दाऊजी के दर्शन करने जायँगे तभी आगरे आयँगे। आशा है अवश्य पधारेंगे। पत्र भेजते रहिये। पत्र न आने से चिन्ता बढ जाती है। अधिक क्या लिखूँ। इति शुभ मिती आसाढ़ शुक्ला पूर्णिमा स० ११८० विक्रमी।

श्रीयुत प० वासुदेव जी बाडी पो० बाडी, राज्य धौलपुर।	टिकट

पिता, गुरु, मामा आदि पूज्य लोगों का पत्र के भीतर नाम नहीं देते हैं।

नवीन प्रथा के पत्र का नमूना

ओ३म्   रत्नाश्रम आगरा।

तिथि

श्रीयुत वर्मा जी

बहुत दिन से आपका कोई पत्र नहीं मिला। न मैंने ही कोई पत्र लिखा। नहीं मालूम था कि सांसारिक पचड़ों में फँस कर हम लोग एक दूसरे से इतने विलग हो जायँगे। वह दिन क्या हुए। उस समय आज की दशा की कल्पना भी नहीं की जाती थी। आपसे मिलने की बड़ी प्रबल इच्छा है। सांसारिक झगड़ों से अवकाश मिलते ही कभी कभी दिन में एक दो बार अवश्य आपका स्मरण हो आता है। यहाँ तक अनुताप की वेदना बनी रहती है। समुद्र की उत्ताल तरंगों में पड़े हुए तिनके की भाँति, वायु के थपेड़ों से अनिच्छित दिशाओं में बहता फिरता हूँ। बहुतेरा सोचा कि इन्हीं राहों में किसी समय उस तट पर भी पहुँच जाऊँ 'दरिद्राणां मनोरथ" वाली कहावत चरितार्थ हुई। स्थिरता आते ही सेवा में उपस्थित हूँगा, अधिक क्या लिखूँ।

आपका—

रामरत्न

श्रीयुत बा० वृन्दावनलाल वर्मा
बी ए, एल एल बी वकील हाईकोर्ट
झाँसी (यू० पी०)

टिकट

अभ्यास

१—अपने भाई को एक पत्र लिखो जिसमें तुमने कोई मेला देखा हो उसका वर्णन हो।

२—अपने मित्र को एक पत्र लिखो जिसमें किसी विवाह में तुम्हारे सम्मिलित होने की चर्चा हो।

३—अखबार के सम्पादक को एक पत्र लिखो जिसमें आपके शहर का कोई समाचार छपने के लिये हो।

४—अपनी मा को एक पत्र लिखो जिसमें बोर्डिङ्ग में तुम्हारी रहन-सहन का वर्णन हो।

५—अपने पिता को एक पत्र लिखो जिसमें परीक्षा में पास हो जाने की चर्चा हो।

६—अपने किसी साथी को एक पत्र लिखो जिसमें बालचर (बाल-स्काउट्स) दल में सम्मिलित होने की उत्तेजना हो।

७—अपनी छोटी बहिन को 'पाक विद्या' नामक पुस्तक भेजी जाय, उसके साथ जो पत्र भेजोगे उसका विषय लिखो।

८—नीचे लिखे आशय वाले पत्रों का उत्तर लिखो —

(१) किसी विवाह में सम्मिलित न होने की शिकायत आई हो।

(२) किसी की पढ़ने को माँगी हुई पुस्तक को ठीक समय पर न देने की शिकायत हो।

(३) उधार लिये रुपये भेजने के साथ चिट्ठी का नमूना।

(४) हैडमास्टर के पूछने पर स्कूल से अनुपस्थित रहने का कारण।



षष्टम अध्याय

प्रबन्ध-रचना का प्रारम्भिक अभ्यास

किसी भाषा के व्याकरण और मुहाविरे के अनुसार पद-योजना या वाक्ययोजना को 'रचना' कहते हैं। और जब किसी मुख्य विषय को लेकर हम क्रमशः वाक्य और अनुच्छेदों (पैराग्राफ) द्वारा रचना करते हैं तो उसे 'प्रबन्ध रचना' कहते हैं। यह रचना दो प्रकार से होती है, एक वक्तृता द्वारा दूसरी लेख द्वारा। इस पुस्तक में केवल 'लेखनी बद्ध रचना' पर ही विचार किया जाता है।

पिछले कई अध्यायों में रचना सम्बन्धी आनुषंगिक विषयों का वर्णन है। धीरे २ रचना का अभ्यास करके अन्त में कोई मनुष्य ऐसा लेखक बन जाय जो रचना-शास्त्र के नियमों के अनुसार पत्र, कहानी, लेख, पुस्तक आदि लिखने में पूर्ण सफलता प्राप्त करे। जब लेखक अपने कार्य्य में कुशल हो जाता है तो उसे किसी प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता नहीं, किन्तु कुशलता प्राप्त करने के लिये ही उस पूर्ण अभ्यास की आवश्यकता है। तभी वह अच्छे निबन्ध आदि लिख सकेगा। प्रबन्ध रचना के लिये कहानियों तथा पाठों का सार और स्वतन्त्र कहानियाँ लिखने का अभ्यास होना चाहिये।

पाठों और कहानियों का सार

पाठ्य पुस्तकों के पाठों व कहानियों का सार स्वतन्त्र भाषा में लिखने से निबन्ध-रचना का अच्छा अभ्यास होता है। पहले पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर संकेत-वाक्य लिख लेने चाहियें और उन संकेत-वाक्यों को पढ़कर स्वतन्त्र रूप से दूसरी भाषा में उस पाठ को लिख लेना चाहिये और यदि कोई कहानी या उपदेश पद्य में है तो उसका आशय समझ कर उस पर संकेत-वाक्य बना लेने चाहियें, फिर गद्य में उन्हें लिख लेना चाहिये।

असत्य भाषण का दुष्परिणाम

एक लडका भेड चराया करता था। उसका स्वभाव था कि वह कभी-कभी खेल खेल में ही भेडिया ! भेडिया !! भेडिया !!! चिल्ला उठता था। सैकडों बार उसने ऐसे ही चिल्ला चिल्ला कर आदमियों को चक्कर में डाला, क्योंकि जैसे ही वह चिल्लाता था मनुष्य अपना अपना काम छोड कर सहायता देने को दौड आते थे। परन्तु जब उनको यह पता लग गया कि वह हँसी में झूठ मूठ चिल्ला उठता है तो आना बन्द कर दिया। एक समय एक भेडिया आ ही गया, बस लडका बडे जोर जोर से चिल्लाया, परन्तु कोई भी पहली तरह झूठ समझ कर नहीं हिला चिगा। अन्त में यह हुआ कि भेडिये ने लडके को मार दिया और कई भेडों को भी मारकर खागया। सच है—'झूठे का कोई विश्वास नहीं करता।'

सकेत-वाक्य

(१) लडके की क्या आदत थी—झूठ-मूठ भेडिया भेडिया चिल्लाता था।
(२) उससे क्या होता था— लोग व्यर्थ परेशान होते थे।
(३) अन्त में क्या हुआ—लोगों ने उसकी बात पर विश्वास करना छोड दिया।
(४) कहानी का सार क्या है— झूठे का कोई विश्वास नहीं करता।

स्वतन्त्र भाषा में कहानी लिखना

भेड चराने वाला एक लडका जगल में चिल्ला उठता था 'भेडिया आया ! भेडिया आया !!' उस लडके की चिल्लाहट सुनकर लोगों को दया आ जाती थी और उसे बचाने के लिये दौडकर उसके पास पहुँचते थे। तब वह उनसे कहता—मैंने तो दिल्लगी की थी, यहाँ कोई भेड़िया नहीं आया। लोग उसकी बुद्धि पर तरस आते थे। उसके ऊपर से सब का वि[illegible] ।। [illegible] दिन सचमुच भेडिया आ [illegible]

होकर बड़े जोर से चिल्लाने लगा—"बचाओ! बचाओ!! भेड़िया आ गया।" आखिरकार "काठ की हाँडी दो बार नहीं चढ़ती" कोई उसकी रक्षा के लिये नहीं आया। भेड़िये ने उसको मार डाला और कई भेड़ों को चीड़ फाड़ कर चट कर गया। भला कोई झूठे का भी विश्वास करता है।

अभ्यास

१—नित्य अपनी पुस्तक के गद्य-पाठ को सरल-वाक्यों में लिख कर अपनी भाषा में दुबारा लिखो और अध्यापक को दिखाओ।

२—पद्य पाठों का भाव, सरल-वाक्यों में लिख कर गद्य में उसका सरलार्थ लिखो।

कहानी-लेखन

कोई परिणाम व विषय का सार देकर छोटी छोटी कहानियाँ लिखने का अभ्यास करना चाहिए। ऐसी कहानियों की भाषा बड़ी सरल होनी चाहिये। कहानियाँ लिखने से कल्पना शक्ति जागृत होती है।

हाथी में बदला लेने की बुद्धि—

एक हाथी रोज तालाब में पानी पीने जाता था। रास्ते में एक दर्जी की दूकान थी। दर्जी हाथी का रोटी दिखाता तो हाथी खिड़की में सूँड डाल कर उसे खा लेता था। एक दिन रोटी के बदले उसने सूँड में सुई चुभो दी। हाथी उधर से सूँड में कीचड़ भर लाया और चुपचाप खिड़की में सूँड डाल कर उसके कपड़े बिगाड़ दिये।

लालची मारा जाता है—

एक कुत्ता मुँह में रोटी लिये हुये नदी में तैरता जाता था अपनी परछाईं देख कर समझा कि दूसरा कुत्ता भी रोटी लिये हुए आ रहा है। जैसे ही उसकी रोटी छीनने के लिये उसने मुँह खोला तो गाँठ का टुकड़ा भी चला गया। सच है-लालच में आदमी मारा जाता है।

कौए की बुद्धिमानी —

एक कौआ प्यास के मारे मरा जाता था। एक पानी का घड़ा देख कर उस पर बैठ गया। परन्तु पानी तक उसकी चोंच नहीं पहुँची। उसने एक उपाय सोचा। बहुत से कंकड़ घड़े में डालना शुरू किये। जब पानी ऊपर चढ़ आया तो पेट भर कर पी लिया। यदि वह बुद्धिमानी से काम न लेता तो प्यासा मरता रहता।

अभ्यास

१—एक ऐसी कहानी लिखो जिसका यह सार निकले—'साँच न लागे आँच'।

२—एक ऐसी कहानी लिखो जिसको पढ़ कर विद्यार्थी आपस में एक दूसरे से प्रेम करना सीखें।

३—एक ऐसे लड़के की कहानी लिखो जो 'दूसरों की सेवा करके सब का प्यारा बन गया हो'।

४—एक ऐसी कहानी लिखो जिसमें खेतीबारी की उन्नति की विधि बताई गई हो।

५—एक ऐसी कहानी लिखो 'जिसमें किसी धनी ने किसी देश के काम के लिये अपना सर्वस्व लगा दिया हो'।

६—एक ऐसी कहानी बनाओ 'जिसमें कोई गरीब लड़का अपनी मेहनत से पढ़ा हो और विलायत जाकर डाक्टर बना हो। फिर भारत में आकर बड़ा नाम पैदा किया हो।

७—एक आलसी लड़के की कहानी लिखो।

८—एक ऐसी कहानी लिखो जिसके अन्त में यह दोहा आ सके—

"गंगा-तट गिरवर गुहा, कहा वहाँ नहीं ठौर।
क्यो एते अपमान तें, खात पराये कौर॥"



सप्तम अध्याय
निबन्ध रचना का अभ्यास

विषय की अभिज्ञता

विविध विषयों की निबन्ध रचना के लिये विविध विषयों की अभिज्ञता आवश्यक है। विषय की शुद्ध जानकारी बिना रचना का कैसा ही अभ्यासी हो, लेख नहीं लिख सकता। यह छोटी पुस्तक संसार भर की बातें न बता कर, रचना का आदर्श और विषय अभिज्ञता का मार्ग दिखा सकती है। विषय-अभिज्ञता के लिये पुस्तकाध्ययन, सत्संग, देशाटन, व्यवहार-कुशलता और अनुभव-शक्ति निरीक्षण शक्ति, विचार शक्ति, कल्पना-शक्ति, विवेचन शक्ति का ठीक ठीक उपयोग आदि अनेक व्यापार हैं। देखो भालो, सुनो समझो, पढ़ो लिखो, सोचो-विचारो, अनेक विषयों की अभिज्ञता प्राप्त होती आयगी। जाने हुए विषय को या विषय को जानकर निबन्ध-रचना की रीति के अनुसार रचना का अभ्यास करो।

प्रबन्ध भेद

यों तो विषय-भेद से प्रत्येक निबन्ध एक दूसरे से पृथक् ही होता है, परन्तु सामान्यतः वर्णनात्मक, कथात्मक व्याख्यात्मक और आलोचनात्मक, चार प्रकार के मोटे भेद हैं।

वर्णनात्मक

किसी वस्तु का सामान्यरूप में वर्णन करना—जिसे कि आँखों से देखा है, कानों से सुना है अथवा और किसी रीति से जाना है, जैसे —'ताजमहल', 'नीम का पेड़' 'तोता', 'आगरे का क़िला', 'झाँसी का रेलवे स्टेशन', 'जनकपुर की शोभा', 'सीताजी की सुन्दरता' 'प्रयाग की प्रदर्शिनी', यमुना की छटा'।

कथात्मक

जिसमें किसी ऐतिहासिक व सामयिक, पौराणिक अथवा किसी काल्पनिक जीवनचरित्र का वर्णन हो, जैसे.—हरिश्चन्द्र, शिवाजी महात्मा गॉधी , हक़ीक़त या एक धर्मवीर।

अथवा किसी ऐतिहासिक, पौराणिक, सामयिक तथा काल्पनिक घटना का वर्णन हो, —'हरिश्चन्द्र का काशी में बिकना' 'प्लासी का युद्ध' '१९१२ का देहली दरबार', 'विसूवियस का भभकना' इंग्लैंड में ट्रेनों की टक्कर', 'स० १९५६ का अकाल'। उपाख्यान, जैसे — पंचतन्त्र की कहानी', 'राजा भोज का सपना'।

यदि घटना और चरित्र इतिहास से सम्बन्ध रखते हैं तो उन निबन्धों को ऐतिहासिक निबन्ध भी कह सकते है। किन्तु काल्पनिक घटना और चरित्रों के लिये इतिहास में स्थान नहीं मिलता, इसलिये ही घटनात्मक और चरित्रात्मक निबन्धों का भेद कर दिया गया है। इतिहास में घटना, चरित्र और वर्णन तीनों का समावेश होता है।

व्याख्यात्मक

किसी अमूर्त्त-विषय, जैसे —चिन्ता, आशा, क्रोध, धैर्य्य दया आदि की व्याख्या की जाती है। वर्णनात्मक निबन्ध एक व्यक्ति के विषय में होता है, जैसे.— "आँधी चलना' यह व्याख्यात्मक है और '११ जून की आंधी" वर्णनात्मक है। 'भूचाल आना' व्याख्यात्मक है, कल का भूचाल वर्णनात्मक है। 'बाग लगाना' व्याख्यात्मक है और 'रामसहाय का बाग' वर्णनात्मक है।

वैज्ञानिक प्रबन्ध इसी भाग में आते हैं इन प्रबन्धों में कल्पना और विचार को अधिक काम करना पड़ता है। किसी कहावत तथा 'मूलसूत्र' की व्याख्या पर जो लेख हों, इसी विभाग में होते हैं।

आलोचनात्मक

सद् असद् विवेकनी बुद्धि तथा युक्ति (तर्क) द्वारा सत्या सत्य का निर्णय, अच्छे बुरे का निर्णय अनुकूल और प्रतिकूल सम्मतियों का निर्णय, सार-असार का निर्णय जिन लेखों में किया जाय, वह आलोचनात्मक या विवेचनात्मक अथवा तार्किकप्रबन्ध कहलाते हैं। किसी ऐतिहासिक घटना को तर्क पर तोल कर उसके सत्यासत्य का निर्णय इसी भेद में आ जाता है। 'मनुष्य की खुराक क्या है?' 'रामायण से क्या लाभ है?' 'विवाह कब होना चाहिये?' 'मरना ही जीना है।' 'सृष्टि कैसे उत्पन्न होती है?' 'गाँव में रहना अच्छा है या शहर में?' दो विरुद्ध विचार तथा मिलते जुलते विचारों की तुलना भी इसी विभाग में होती है, जैसे '—स्वतन्त्रता और स्वेच्छाचार व स्वतन्त्रता और परतन्त्रता आदि। यदि ये निबन्ध तर्क पर न तोले जायँ केवल व्याख्या ही रहे, तो यह व्याख्यात्मक ही कहलाएँगे।

यह पृथक् पृथक् भेद बतलाए गये हैं, किन्तु आप बड़े लेखकों के लेखों में तो दो, तीन या सम्पूर्ण भेदों का मिश्रण देखेंगे।

प्रबन्ध का ढाँचा

किसी प्रकार का प्रबन्ध लिखना हो, लिखने से पहिले उसे उचित भागों में बाँट लेना चाहिये। इस प्रकार विषय को बाँटने से बड़े बड़े लेखकों को भी बड़ी सुविधा हो जाती है, पर नौसिखिया लेखक तो इसके बिना ठीक लिख ही नहीं सकते। ऐसा करने से लेखक सीमा के भीतर रहेगा और विषय के अङ्ग प्रत्यङ्ग पर प्रकाश डाल सकेगा। ठीक समय के भीतर उचित पंक्ति और पृष्ठों में निबन्ध को पूरा कर देगा और क्रम भी ठीक बैठ जायगा। लिखने से प्रथम लेख के विषय पर गहरी दृष्टि डाल कर उसके सम्बन्ध में जितनी बातें ध्यान में आवें, एक कागज पर नोट करलो और ठीक ठीक सिलसिले से जमा कर

क्रम बाँधलो। किसी वस्तु के सम्बन्ध में मोटे मोटे तीन शीर्षक हो सकते हैं, दिखावट, गुण और उपयोग। जीव पर लिखना हो तो किस प्रकार का जीव है, उसका आकार और गठन, स्वभाव और भोजन, कहाँ पाया जाता है और उसका उपयोग। धीरज पर लिखना हो तो धीरज क्या है? किन में होता है? धीरज का महत्व, यह गुण अभ्यास से बढ़ सकता है। किसी के चरित्र के विभाग उसके चरित्र की विशेषता के अनुसार पृथक् २ हो सकते हैं, पर मोटी रीति से, जन्मकाल और माता पिता, बाल्यावस्था (पालन-पोषण और शिक्षा) जीवन की मुख्य मुख्य घटनाएँ और मृत्यु।

विषय का प्रारम्भ

जब तुम्हारे प्रबन्ध की सूची बन जाय तो देखो कि कितने समय और कितने स्थान में प्रबन्ध लिखना है। मानलिया एक घण्टे में लेख समाप्त करना है। उसमें से १५ मिनट तो सोचने और ढाँचे के लिये गये। रहे ४५ मिनट, उनको तुम्हारे प्रबन्ध के ५ उपशीर्षक हैं—उन पर बाँटा तो प्रत्येक शीर्षक को ६ मिनट मिले। अतः सामान्यतः एक शीर्षक ६ मिनट में समाप्त होना चाहिये। उपशीर्षक के छोटे बड़े होने के अनुसार समय भी कम बढ़ हो सकता है। रही स्थान की बात, मान लिया कि ५० पंक्ति में लेख पूरा करना है, एक शीर्षक में सामान्यतः १० पंक्ति होनी चाहियें। उपशीर्षक के छोटे बड़े होने के अनुसार एक उपशीर्षक न्यूनाधिक पंक्तियों में लिखा जा सकता है। इन सब बातों पर विचार करके लिखना आरम्भ करो। आरम्भ करने का कोई मुख्य नियम नहीं है। विभिन्न लेखक एक ही लेख को विभिन्न प्रकार से आरम्भ करते हैं। कोई विषय की भूमिका बाँध कर, कोई परिभाषा कह कर, कोई किसी कहावत या कवि वाक्य को कह कर, कोई विषय का सार कह कर और कोई घटना का मध्य पकड़ कर लेख आरम्भ कर देते हैं।

विस्तार

आरम्भ करने के पीछे सूची के प्रत्येक उपशीर्षक को लक्ष करके वाक्य-समूह या अनुच्छेद (पैराग्राफ) की रचना होनी चाहिये। एक वाक्य-समूह के वाक्यों में पारस्परिक और आनुपूर्व सम्बन्ध होना चाहिये। एक वाक्य समूह में वर्णित भावों के लघुत्व गुरुत्व के अनुसार अनुच्छेद छोटा और बड़ा होता है। भाव गुरुत्व के कारण कभी कभी एक भाव एक से अधिक अनुच्छेदों में लिखा जाता है। इसी प्रकार सूची के हर एक उपशीर्षक पर अनुच्छेद रचना करो और जिस प्रकार एक अनुच्छेद के सब वाक्यों में पारस्परिक आनुपूर्व-सम्बन्ध होता है, उसी भाँति एक विषय के सब अनुच्छेदों में पारस्परिक आनुपूर्व-सम्बन्ध होता है। किसी भाव की पुष्टि में कोई कहावत, किसी कवि का वचन अथवा कोई उदाहरण लिखना उचित हो, लिख देना चाहिये। परन्तु उदाहरण सक्षिप्त हो और विषय से पूरा सम्बन्ध रखता हो।

समाप्ति

समाप्ति होने पर उसे यों ही एक दम मत छोड़ दो। सक्षेप में या तो अपने निबन्ध का सार कह दो, या कोई शिक्षा मिलती हो उसे दिखादो, या कोई उससे अप्रत्यक्ष परिणाम झलकता हो, स्पष्ट कर दो और एक बार फिर पढ़ जाओ। जहाँ जहाँ पर विरामादि चिह्न छूट गये हों अथवा कोई व्याकरण और मुहाविरे की भूल होगई हो, ठीक करलो।

शहद

प्रबन्ध की सूची —

क्या है ? कैसे इकट्ठा होता है ? स्वाद, रंग कहाँ मिलता है ? गुण और उपयोग।

सूची का विकास —

अ—फूलों का रस जिसे मधुमक्खी इकट्ठा करती हैं 'शहद' कहलाता है। मक्खियाँ फूलों पर बैठ कर रस को चूँस लेती है, फिर अपने छत्तों में जमा करती रहती है। जब बहुत सा शहद जमा हो जाता है, तो बहेलिया अथवा और कोई मनुष्य छत्ते को तोड कर उसमें से शहद निचोड लेता है।

ब—मक्खियाँ झाडी, पेड की खोंतर, डाली तथा घरों में कहीं अपना छत्ता रख लेती हैं।

स—शहद लाल रंग का बहने वाला लसदार पदार्थ है। ठण्ड से जम जाता है। स्वाद मीठा होता है।

द—लोग दूध या पानी में डाल कर पीते हैं। औषधि के साथ खाया जाता है।

चाँदी

प्रबन्ध का सार —

१ प्रकार—खनिज पदार्थ।
२ दिखावट—सफेद चमकीली धातु है।
३ गुण—खिंचने वाली, कुटने वाली, भारी, नरम, गलने वाली अपारदर्शी है।
४ उपयोग—सिक्के और बर्तन बनते तथा इसकी भस्म को वैद्य दवा के काम में लाते हैं। इसके वर्क भी दवाई के काम आते हैं।

प्रबन्ध का विस्तार —

चाँदी एक प्रकार की धातु है जो मिट्टी तथा दूसरी धातुओं के साथ मिली हुई खान से निकाली जाती है। यन्त्रों द्वारा इसे शुद्ध करते है।

कच्ची चाँदी का रंग मटमैला होता है, यन्त्रों और अग्नि के प्रयोग से शुद्ध कर लेते हैं तो इसका रंग बहुत स्वच्छ, सफेद और चमकीला निकल आता है।

पहिले कारीगर शुद्ध चाँदी की सलाई बना लेते हैं, फिर मजबूत धातु के छेदों में डाल कर उसका तार खींचते हैं। पहले बड़े छिद्र में, फिर छोटे छिद्र में, फिर उससे भी छोटे छिद्रमें डाल कर खींचने से बहुत ही पतला तार बन जाता है।

कूटने से चाँदी टूटती नहीं है वरन् फैलती जाती है। यहाँ तक कि कुटते कुटते बहुत ही हलके वर्क बन जाते हैं। पानी की अपेक्षा यह धातु बहुत भारी होती है तभी पानी में छोड़ते ही डूब जाती है। इसकी बहुत मोटी सलाई को हाथ से नवा लेते हैं, किन्तु लोहे का कड़ा हाथ से नहीं नवता।

ताँबे को मिलाकर के एक लम्बी सलाख बनाते हैं, उससे छोटे छोटे टुकड़े काट कर यन्त्र की सहायता से सिक्के बनाते हैं। वैद्य लोग अन्य औषधियों के सहारे से इनकी भस्म बना कर दवाई के काम में लाते हैं। चाँदी के गहने और बर्तन बनाये जाते हैं। इसी प्रकार ताँबा सोना, पारा आदि धातुओं पर लेख लिखो।

ताजमहल

सार —

क्या है? कहाँ है? विस्तार बनावट उसका सौंदर्य।

विस्तार —

युक्तप्रान्त का आगरा एक प्रसिद्ध नगर है। यह यमुना नदी के दाएँ किनारे पर बसा हुआ है। आगरा फोर्ट-स्टेशन से दो मील पूर्व एक भव्य इमारत बनी हुई है, लोग इसे ताजमहल कहते हैं।

यमुना जी के किनारे एक मील लम्बे घेरे में यह स्थान बना हुआ है। बाहर लाल पत्थर का कोट है। आगरा-फोर्ट से मैकडानल पार्क में होकर जाते हैं, तो एक विशाल दरवाजा

देख पडता है। दरवाजे पर कुछ दूकानें हैं, जिनमें सगमरमर या दूसरे सफेद पत्थर तथा सेलखडी के बने हुए ताजमहल के नमूने, तश्तरी तथा अन्य चीजें मिलती हैं। दरवाजे के भीतर जाते हुए दोनों ओर कुछ दूकानें बनी हैं, शायद यहाँ कभी बाजार लगता होगा। यह ताजमहल का बाहरी घेरा है। ऐसा ही एक दरवाजा दूसरी ओर दृष्टि आता है, जिस पर कुरान की आयतें बडी कारीगरी से जडी हुई हैं। दरवाजे के भीतर जाते ही, सामने सुन्दर भवन दृष्टि आता है, जिसकी अद्भुत छटा को देखकर मन में बडा आनन्द होता है। दरवाजे से नीचे उतरते ही महल तक फव्वारों की एक फर्लाङ्ग से भी लम्बी कतार लगी हुई है। बीच में एक सगमरमर का चबूतरा है। इसके ऊपर एक छोटा सा तालाब है, जिसमें रग-बिरगी मछलियाँ तैरती रहती हैं। चारों ओर रग बिरगे पुष्पों की क्यारियाँ लगी हुई हैं। हरी घास का मखमली फर्श बिछा हुआ है। सुपारी-इलायची आदि के बडे बडे वृक्ष हैं। साथ ही अशोक वृक्ष बडे सुहावने मालूम होते हैं।

यमुना के ठीक तट पर एक विस्तृत चबूतरा है, जिसके चारों किनारों पर चार ऊँची ऊँची मीनारें हैं। इसके बीचों-बीच एक सगमरमर का विशाल भवन बना हुआ है। इसमें प्रवेश करते हुए शाहजहाँ और उसकी बीबी की नकली कबर नजर आती है, जिन पर बहुत बढिया पत्थर का जडाऊ काम हो रहा है। जरा जरा से फूलों में २०-२० से भी अधिक पत्थर के टुकडे जडे हुए हैं। एक अगुल स्थान भी बेल-बूटों से खाली नहीं है। इन नकली कबरों के ठीक नीचे ही शाहजहाँ और उसकी बीबी की असली कबरें हैं। यहाँ बडा अन्धकार रहता है। मोमबत्ती या लालटेन के सहारे से यहाँ का शान्त और अद्भुत दृश्य दिखाई देता है। इन कबरों पर भी जडाऊ बेल

बूटे बने हैं जो अनेक रंग के कीमती पत्थरों के बनाये गये हैं। इमारत के बाहरी ओर संगमरमर पर काले पत्थर के टुकड़े जड़े हुए हैं, उन पर जब चन्द्रमा का प्रकाश पड़ता है तो तारों की भाँति चमकने लगते हैं। इसके ठीक नीचे ही यमुना बहती हुई दिखाई देती है। इसे शाहजहाँ ने अपने जीवन काल में ही अपनी स्त्री मुमताजमहल के लिये बनवाया था मरने के पीछे शाहजहाँ की समाधि भी यहीं बनवाई गई।

पक्षी विशेष के लिये

(१) नस्ल। (२) कहाँ पाया जाता है? (३) रंग। (४) स्वभाव। (५) भोजन। (६) लाभ। (७) आयु। (८) विशेष विवरण।

किसी देश के निवासियों पर

(१) नस्ल। (२) आकार और गठन। (३) भोजन। (४) रीति-रिवाज और धर्म। (५) सामाजिक-स्थिति और शिक्षा। (६) जीवन निर्वाह का ढंग। (७) उनकी सभ्यता पर विदेशी सभ्यता का प्रभाव। (८) विशेष विवरण।

मथुरा का विश्राम घाट

(१) बनावट। (२) यात्रियों का स्नान। (३) सायंकाल की आरती। (४) उस समय यमुना का दृश्य।

किसी स्थान विशेष पर यह शीर्षक होंगे।

१—उस स्थान का नाम और स्थिति, ऐतिहासिक वर्णन।
२—जलवायु और आस पास की पैदावार।
३—आकार, विस्तार बड़ी सड़कें और जन-संख्या।
४—प्रबन्ध, शासन और न्याय।
५—शिक्षा का प्रबन्ध।
६—व्यापार और शिल्प।
७—ऐतिहासिक व धार्मिक दर्शनीय वस्तुएँ।

आगरा

१—यह नगर युक्तप्रदेश में यमुना नदी के किनारे पर बसा हुआ है। पुराने समय में इसे अर्गलपुर कहते थे, मगर अकबर बादशाह ने इसका नाम अकबराबाद रक्खा। हिन्दू राजत्व-काल का अधिक हाल नहीं मिलता। परन्तु अकबर ने दिल्ली छोडकर आगरे को अपनी राजधानी बनाया और यमुना के किनारे लालपत्थर का एक बडा और दृढ किला बनवाया। शाहजहाँ के राज्य-काल तक आगरा मुगलों की राजधानी रहा।

२—यहाँ की जलवायु गर्म और खुश्क है। यमुना के खादर को छोड कर आस पास की शेष भूमि चौरस और उपजाऊ है, जो उत्तर की ओर गंगा की नहरों से और पश्चिम और दक्षिण की ओर यमुना की नहरों से सींची जाती है।

३—यह नगर १२ कोस के बीच में बसा हुआ है जिसके चारों कोनों पर ४ महादेव जी के मन्दिर बने हुए हैं। कुछ टोले अलग २ बसे हुए हैं, परन्तु बीच में बहुत घनी बस्ती है। एक मुहल्ले से दूसरे तक सडकें बनी हुई हैं। ठण्डी सडक बहुत चौडी है जिस पर सायंकाल को लोग वायु-सेवन के लिये घूमा करते हैं। इसके अतिरिक्त सिटी और मेकडानल पार्कों से भी बहुत आराम मिलता है। यहाँ की जन-संख्या दो लाख के लगभग है।

४—कुल शहर का प्रबन्ध एक म्युनिसिपैलिटी के अधिकार में है। रोगियों के लिये कई औषधालय और चिकित्सालय बने हुए हैं। पानी के लिये यमुना से जल-कलों का प्रबन्ध किया गया है। प्रकाश के लिये जगह जगह पर बिजली, गैस तथा सामान्य लेम्पों के खम्भे लगे हुए हैं। शासन मैजिस्ट्रेट और

पुलिस के अधिकार में है। न्याय के लिये दीवानी, फौजदारी और जजी की अदालतें हैं।

५—जगह जगह पर प्रारम्भिक शिक्षा के लिये पाठशालाएँ बनी हुई हैं। अनेक हाई-स्कूल कालेज तथा छात्र निवास बने हुए हैं, जिनमें बाहर के विद्यार्थी भी आकर शिक्षा पाते और रहते हैं। आगरा कालेज युक्तप्रदेश का सब से पहिला कालेज है। इसके अतिरिक्त सेण्टजोंस, सेण्टपीटर्स और ट्रेनिंग कालेज भी हैं। आगरे में यूनीवर्सिटी भी खुल गई है।

६—आगरे में "जी आई पी" "ई आई आर" "बी बी एण्ड सी आई आर" और "आर एम आर" रेलवे द्वारा चारों ओर से माल आता है और जाता है। इससे पहिले यमुना के द्वारा नावों पर व्यापार होता था। लाल पत्थर व संगमरमर की बनी चीजें बहुत दूर तक जाती हैं। दरी और गलीचे बहुत अच्छे बनते हैं।

७—बादशाही समय की इमारतों में ताजबीबी का रोजा, अकबर बादशाह की कबर, एतमादुद्दौला व जुम्मा मसजिद तथा आगरे से १२ कोस पश्चिम फतहपुर सीकरी के महल देखने योग्य हैं।

८—मेकडानलपार्क में महारानी विक्टोरिया का स्मारक देखने योग्य है। यहाँ का अस्पताल बहुत बड़ा है। पागलखाना और अकबर का बनाया हुआ आगरे का किला देखने योग्य है।

नोट—यह साधारण विवरण है इसे विस्तृत और भाव मयी भाषा में लिख सकते हैं।

जानवर

(१) आकार और उसका गठन। (२) स्वभाव और भोजन।
(३) व्यवहार और लाभ। (४) कोई विशेष बात।

घोडा

१—घोडा बिना सींग का चार पैर वाला जीव है जो मा के स्तनों से दूध पीता है। यह देखने में बड़ा सुन्दर होता है। इसका शरीर दृढ और गठीला होता है। शरीर पर छोटे छोटे चमकीले बाल होते हैं। बडा घोडा, सुम के नीचे से लेकर अयाला तक प्रायः ५ फीट ऊँचा, और कानों के बीच से लेकर पूँछ की जड तक ७ फीट लम्बा होता है। छोटे घोडे को टट्टू कहते हैं।

घोडे के कान तेज और आँखें बडी तथा दृष्टि प्रबल होती है, नथुने खुले हुए निरे मांस के बने होते हैं, इनमें हड्डी नाम को भी नहीं होती। सूँघने की शक्ति बडी प्रबल और टाँगे दृढ होती हैं, और खुर चिरे हुए नहीं होते।

२—घोडा बडा मिलनसार होता है। जगल के घोडे टोल बाँध कर रहते हैं। पालतू दशा में और जानवरों से स्नेह कर लेते हैं। इनकी स्मरण-शक्ति बडी प्रबल होती है अपने रक्षक और स्थान को कभी नहीं भूलते। यह बडे स्वामिभक्त और बुद्धिमान होते हैं, इसके बहुत प्रमाण उपस्थित हैं। महाराणा प्रताप के चेतक घोडे ने अपने स्वामी को बचाने के लिये अपने प्राण तक दे दिये थे।

यह केवल घास, जौ, चने आदि का भूसा तथा चना जौ और मोठ आदि का दाना खाता है। इसके होंठ इतने लचकदार होते हैं कि छोटी से छोटी घास को धरती से पकड कर कतर लेता है।

३—जीवित घोडा सवारी के काम में आता है, गाडी और इक्कों में जोता जाता है। कहीं कहीं घोडों से हल भी चलाये जाते हैं। मृत्यु के पश्चात् इसका प्रत्येक भाग काम में आता है। बालों को गद्दी-तकियों में भरते हैं और उनसे

बुरुश भी बनाये जाते हैं। खाल से जूतों के तले और घोड़ों का सामान तथा रंग और पुट्ठों से सरेस बनाते हैं हड्डियों से चाकुओं के बेंटे, खुरों से बटन और डिबिया आदि बनाते हैं।

अभ्यास

१—घोड़े पर एक स्वतन्त्र निबन्ध लिखो।

२—गाय, भैंस, बकरी भेड़, गधा, खच्चर, बैल, हाथी ऊँट पर एक एक निबन्ध लिखो।

वृक्ष

यदि किसी वृक्ष पर निबन्ध लिखना हो तो —

१—उसकी ऊँचाई और फैलाव।

२—कहाँ पाया जाता है ?

३—उसकी जड़, पेड़ी, डाली, पत्ते, फूल और फल का वर्णन।

४—उपयोग और लाभ।

५—कितनी आयु होती है ?

६—यदि कोई विशेषता हो।

नीम का वृक्ष

२—नीम का पेड़ चालीस फीट के समीप ऊँचा होता है। इसकी पत्तियाँ बड़ी ही सघन और छाया बहुत ही शीतल होती हैं इसलिये गर्मी के दिनों में गाँव के मनुष्य नीम की छाया के नीचे बैठते और सोते हैं।

२—यह पेड़ उत्तरी भारत के मैदानों में बहुत पाया जाता है।

३—पेड़ी-११ फीट तक लम्बी और १० फीट तक मोटी होती है। ऊपर की छाल खुरदरी होती है। पेड़ में से बड़े बड़े गुद्दे और गुद्दों में से बड़ी बड़ी टहनियाँ निकलती हैं।

पत्ते-लम्बे और नोकदार होते हैं। उनके किनारों पर दोनों ओर दाँते बने रहते हैं।

घोडा

१—घोडा बिना सींग का चार पैर वाला जीव है, जो मा के स्तनों से दूध पीता है। यह देखने में बडा सुन्दर होता है। इसका शरीर दृढ और गठीला होता है। शरीर पर छोटे छोटे चमकीले बाल होते है। बडा घोडा, सुम के नीचे से लेकर अयाला तक, प्राय. ५ फीट ऊँचा, और कानों के बीच से लेकर पूँछ की जड तक ७ फीट लम्बा होता है। छोटे घोडे को टट्टू कहते है।

घोडे के कान तेज और आँखें बडी तथा दृष्टि प्रबल होती हैं, नथुने खुले हुए निरे मास के बने होते है, इनमें हड्डी नाम को भी नहीं होती। सूंघने की शक्ति बडी प्रबल और टाँगें दृढ होती हैं, और खुर चिरे हुए नहीं होते।

२—घोडा बडा मिलनसार होता है। जगल के घोडे टोल बाँध कर रहते है। पालतू दशा में और जानवरों से स्नेह कर लेते है। इनकी स्मरण-शक्ति बडी प्रबल होती है अपने रक्षक और स्थान को कभी नहीं भूलते। यह बडे स्वामिभक्त और बुद्धिमान होते हैं, इसके बहुत प्रमाण उपस्थित है। महाराना प्रताप के चेतक घोडे ने अपने स्वामी को बचाने के लिये अपने प्राण तक दे दिये थे।

यह केवल घास, जौ, चने आदि का भूसा तथा चना, जौ और मोठ आदि का दाना खाता है। इसके होठ इतने लचकदार होते हैं कि छोटी से छोटी घास को धरती से पकड कर कतर लेता है।

३—जीवित घोडा सवारी के काम में आता है, गाडी और इक्कों में जोता जाता है। कहीं कहीं घोडों से हल भी चलाये जाते है। मृत्यु के पश्चात् इसका प्रत्येक भाग काम में आता है। बालों का गद्दी-तकियों में भरते है और उनसे

बुरुश भी बनाये जाते हैं । खाल से जूतों के तले और घाडों का सामान तथा रगों और पुट्ठों से सरेस बनाते हैं हड्डियों से चाकुओं के बेंटे, खुरों से बटन और डिबिया आदि बनाते हैं ।

अभ्यास

१—घोडे पर एक स्वतन्त्र निबन्ध लिखो ।

२—गाय, भैंस, बकरी भेड़, गधा, खचर, बैल, हाथी ऊँट पर एक एक निबन्ध लिखो ।

वृक्ष

यदि किसी वृक्ष पर निबन्ध लिखना हो तो —

१—उसकी ऊँचाई और फैलाव ।

२—कहाँ पाया जाता है ?

३—उसकी जड, पेडी, डाली, पत्ते, फूल और फल का वर्णन ।

४—उपयोग और लाभ ।

५—कितनी आयु होती है ?

६—यदि कोई विशेषता हो ।

नीम का वृक्ष

१—नीम का पेड चालीस फीट के समीप ऊँचा होता है । इसकी पत्तियाँ बडी ही सघन और छाया बहुत ही शीतल होती है इसलिये गर्मी के दिनों में गाँव के मनुष्य नीम की छाया के नीचे बैठते और सोते हैं ।

२—यह पेड उत्तरी भाग के मैदानों में बहुत पाया जाता है ।

३—पेडी-११ फीट तक लम्बी और १० फीट तक मोटी होती है । ऊपर की छाल खुरदरी होती है । पेड में से बडे बडे गुद्दे और गुद्दों में से बडी बडी टहनियाँ निकलती हैं ।

पत्ते-लम्बे और नोकदार होते हैं । उनके किनारों पर दोनों ओर दाँते बने रहते हैं ।

फूल—छोटे छोटे श्वेत रंग के फूल बहुत ही सुगन्धित होते हैं। जिस समय नीम फूलता है अपनी चारों दिशाओं को सुगन्ध से भर देता है।

फल—इसका फल, रूप और आकार में खिन्नी के बराबर होता है, जिसको निबौली कहते हैं।

४—इसकी छाया आरोग्य वर्द्धक होती है। श्वास के साथ मनुष्य के फेफड़ों से जो हानिप्रद-वायु निकलती है, उसे खींचकर प्राणप्रद-वायु छोड़ता है रुधिर-विकारों को नष्ट करने की इसमें बड़ी शक्ति है। लोग इसका अर्क निकाल कर काम में लाते हैं। छाल को घिस कर फोड़े-फुन्सियों पर लगाते हैं। लकड़ियों को मकान के काम में लाते हैं और छोटी छोटी टहनियों की दाँतौन बनाते हैं।

अभ्यास

१—नीम के वृक्ष पर अपनी भाषा में एक निबन्ध लिखो।

२—पीपल, तुलसी, वटवृक्ष, आम अमरूद, पपीता, खजूर, बाँस और केला पर एक एक निबन्ध लिखो।

नोट—वर्णन-प्रबन्धों में हरएक वस्तु के विभाग करके इसी प्रकार लिख सकते हैं। वस्तु पाठों से इनमें बहुत सहायता मिल सकती है।

वर्णनात्मक-निबन्धों के कुछ ढाँचों को बड़ा कर ऊपर दिखाया गया है। कुछ नमूने के निबन्ध दिये हैं, कुछ केवल ढाँचे। इसी प्रकार बहुत ढाँचे तैयार किये जा सकते हैं और उन पर रचना की जा सकती है।

दक्षिणी-भारत का एक पहाड़ी-दृश्य

भूमण्डल में सबसे अधिक सुन्दर प्राकृतिक दृश्य भारत के बर्फ से ढके हुए हिमालय पर्वत में है। हिमालय पर्वत की चोटी एवरेस्ट पृथ्वी की सब पर्वत-चोटियों से ऊँची है। भारत के पश्चिमी भाग में इतने ऊँचे पर्वत नहीं हैं, परन्तु तिस पर भी वहाँ प्राकृतिक शोभा की कमी नहीं है। यदि हम

बम्बई से रेल द्वारा जबलपुर की ओर चलें तो पहिले पचास या साठ मील तक दोनों ओर मैदान दिखाई देते हैं। परन्तु इसके बाद हमें पश्चिमी घाट के पर्वतों में घुसना पड़ता है। यह पर्वत श्रेणी समुद्र के किनारे से लगभग तीस मील की दूरी पर है। इसकी शाखायें भारत के पश्चिमी किनारे के निकटवर्ती कोकन आदि प्रदेशों में फैली हुई हैं। इन पर्वत श्रेणी के पूर्व की ओर जमीन की ऊँचाई क्रम क्रम से कम होती गई है और उस पर से भीमा कृष्णा और गोदावरी आदि नदियाँ बही हैं। जब वर्षा ऋतु में यात्री पश्चिमी घाट के पर्वतों पर चढ़ते हैं तो, उन्हें भिन्न भिन्न रंगों के बादलों की शोभा बहुत ही सुन्दर दिखाई देती है। उस समय पर्वत, हरे रंग की पत्तियों और घास से ढके रहते हैं। और उस हरियाली के बीच में चमकीली चट्टानों से गिरते हुए और सूर्य्य की किरणों के पड़ने से चाँदी के समान चमकते हुए नाला तथा नदियों की शोभा बड़ी मनोहारिणी होती है। परन्तु इस दृश्य की शोभा देखने का पूरा आनन्द रेल के यात्रियों को नहीं मिलता, क्योंकि रेल अपनी सड़क पर वेग से चली ही जाती है। कई यात्री इस दृश्य को देखकर मुग्ध हो जाते हैं और उनका मन रेल से उतर कर पर्वत की शोभा को नेत्र भर देखने के लिये ललचाने लगता है। यदि पश्चिमी घाट के पर्वतों की प्राकृतिक शोभा का पूरा आनन्द लेना है तो रेल से उतर कर एक या दो पक्ष उन्हीं पर्वतों में रहना चाहिये, और पर्वत के भिन्न भिन्न स्थानों में भ्रमण कर, नेत्रों को तृप्त करना चाहिये। इस काम के लिये इगतपुरी स्टेशन पर रेल से उतरना सब से अच्छा होगा। इगतपुरी से कुलसीबाई, जो दक्षिण में सब से ऊँचा स्थान है, पास पड़ता है, और उसी के समीप ऐसी कई एक छोटी

सेवा-समिति

हमारे देश की स्त्रियों की तो दशा ही और है। उनके जीवन का अमूल्य समय, "मैं-मैं तू-तू" ही में व्यतीत होता है। प्लेग के दिनों में भगिनी निवेदिता ने मुहल्ले की सफ़ाई रखने में लोगों की बड़ी मदद की। अपने हाथों से रोगियों की सेवा की। युवकों के साथ मिलकर इसी काम के लिये एक मण्डली बनाई, जिसने प्राणों पर खेल-कर उस समय अच्छा काम किया।

अकाल पीड़ितों की सहायता

सन् १९०७ में बाकरगंज में घोर अकाल पड़ा। देशभक्त लोगों के साथ मिलकर वहाँ के अनाथ और दुखियों की बहुत सहायता की। उनके लिये घर घर भीख माँगी और अन्न-दान दिया। अन्य प्रकार की सेवा-सुश्रूषा करके उनकी प्राण-रक्षा की। इस काम में इनको बड़े बड़े कष्ट भुगतने पड़े, परन्तु उनकी ज़रा भी परवाह न की।

विधवाश्रम

बङ्गाली-विधवाओं के दुःखों को देख कर इनके हृदय में भारी ठेस लगी। उनकी सहायता के लिये एक आश्रम बनाया। एक पाठशाला खोली, जिसमें छोटे छोटे बालकों को किण्डर गार्डन से शिक्षा देने लगीं।

गुण और स्वभाव

आप बड़ी सुलेखिका थीं। व्याख्यान देने की शक्ति भी अच्छी थी। स्त्रियों के साथ उनके पतियों का असभ्य बर्ताव देखकर उन्हें बहुत क्लेश होता था। लोगों को समझाया कि स्त्री, पुरुष के जीवन की एक सहायक है न कि दासी। स्त्रियों को भी विदुषी बनाकर पुरुषों की सहायता करने के लिये प्रोत्साहित किया।

अहङ्कार इनको छू तक नहीं गया था। आप भक्ति और प्रेम की साक्षात् मूर्ति थीं। स्वभाव बड़ा ही कोमल और सीधा था। आपने आजन्म कुमारी रहकर भारत की सेवा की। लण्डन में सम्पूर्ण जातियों की जो महासभा हुई थी, उसमें भगिनी निवेदिता ने भारत की भलाई के लिये, एक निबन्ध लिखकर भेजा था।

मृत्यु

आप काम करते करते अचानक बीमार हुईं और दार्जिलिङ्ग के पहाड़ पर स्वर्ग-यात्रा की। भारत और इङ्गलैण्ड में इनके लिये बड़ा शोक मनाया गया। धन्य देवी! तुझे अनेश धन्य है! वह कौनसा दिन होगा जब इस भारत में भी ऐसी देवियाँ उत्पन्न होकर देश, जाति और समाज का कल्याण करेंगी।

महात्मा गोखले

जन्म और शिक्षा

महात्मा गोखले का जन्म सन् १८६७ ई० में कोल्हापुर के निकट कागल ग्राम में हुआ था। इनके पिता सामान्य स्थिति के ब्राह्मण थे। यह एफ ए तक कोल्हापुर में ही पढ़े थे। १८ वर्ष की आयु में बम्बई के एलफिन्स्टन कालेज से बी ए पास किया। आपकी बुद्धि जितनी प्रखर और स्मरण शक्ति जितनी तीव्र थी, वैसे ही आप अध्यवसायी भी थे।

कार्यक्षेत्र में प्रवेश

घर वाले चाहते थे कि गोपालराव गोखले इञ्जीनियर होकर बहुतसा रुपया कमावें और हमारी बहुत दिनों की आशा पूरी हो। परन्तु कालेज ही से आपके हृदय में देश भक्ति की ज्योति जगमगाने लगी थी। वहाँ से निकल कर आप दक्षिण-शिक्षा समिति में सम्मिलित हो गये।

७५) रु० मासिक पर फर्गुसन कालेज में नौकरी कर ली। कुछ दिनों तक आप गणित एवं अङ्गरेजी के अध्यापक रहे,

फिर इतिहास और अर्थ शास्त्र पढ़ाते रहे, अन्त में उसी कालेज के प्रिंसिपल भी हो गये। छुट्टियों में शिक्षा समिति की उन्नति के लिये उद्योग करते थे एक बार आपने द्वार द्वार घूम कर उसके लिये दो लाख रुपया मांगे। कालेज में तो आप अधिक परिश्रम करते ही थे, साथ ही साथ न्यायाधीश रानाडे के समीप बहुत दिनों तक धर्मशास्त्र और राजनीति का अध्ययन किया रानाडे ने इन्हें उपयुक्त पात्र पाकर परिश्रम करने में किसी प्रकार की कसर नहीं की।

सार्वजनिक सेवा

उस समय पूने में एक सार्वजनिक सभा थी, जिसके द्वारा एक त्रैमासिक-पत्र निकलता था। पहिले इस पत्र के सम्पादक थे जस्टिस रानाडे। इस पत्र में सरकारी अर्थनीति की आलोचना रहती थी सन् १८८७ में मि० गोखले इसके सम्पादक हुए। बड़ी योग्यता से काम किया। राजा और प्रजा में सद्भाव पैदा करने की चेष्टा की। साथ ही सरकारी भूलों की आलोचना भी हुई। थोड़े ही दिनों में मत भेद होने के कारण डेकन्स सभा के नाम से एक नई सभा खुली, जिसके आप मन्त्री चुने गये।

इसके सिवाय आप पूने के 'सुधारक' पत्र के भी सम्पादक रहे, जो एंग्लो-मराठी में निकलता था। २२ वर्ष की आयु में प्रांतिक-परिषद् में आपका ऐसा भाषण हुआ, जिसे सुनकर मि० मुधोलकर ने इनके लिये एक दिन राष्ट्र-सभा के सभापति होने की भविष्यवाणी की थी। १७ वर्ष पीछे सन् १६०५ में यह बात सत्य हुई।

विलायत-यात्रा

आपने कई बार विलायत यात्रा की। इङ्गलैण्ड में १८६७ ई० में वेलबी-कमीशन के सामने आपकी बड़ी महत्त्वपूर्ण गवाही हुई। सन् १६०५ में दूसरी बार विलायत गये। भारत की भलाई

के लिये बहुत व्याख्यान दिये, जिनका इङ्गलैण्ड की जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा। १९०८ और १९०८ में फिर इङ्गलैण्ड गये और लार्ड मार्ले से मिलकर बहुत सी हित की बातें कीं। अन्त में आप १९१३-१४ में पब्लिक-सर्विस कमीशन में भारत की ओर से सम्मिलित हुए। सन् १९१२ में दक्षिण अफ्रीका जाकर भारतवासियों के दुःख दूर करने का यत्न किया और उसमें बहुत कुछ सफलता हुई।

भारत सेवक-समिति

अपने उद्देश्यों की सफलता का प्रयत्न सदैव जारी रखने के लिये आपने 'भारत सेवक समिति' स्थापित की। समिति के उच्च शिक्षा-प्राप्त अनेक आत्मत्यागी योग्य युवक सभासद् हैं, जो नाममात्र वेतन पर अपना निर्वाह करके देश का काम करते हैं। अकालों तथा हरिद्वार-कुंभ के समय समिति की ओर से जो कार्य हुआ है, राजा और प्रजा दोनों उसका कीर्ति-गान करते हैं। अभी इस समिति को सहस्रों नहीं वरन लाखों आत्मत्यागी युवकों की आवश्यकता दीख पड़ती है।

मृत्यु

इस प्रकार ४८ वर्ष की आयु तक महात्मा गोखले ने भारत वर्ष की भलाई के लिये प्राणपण से चेष्टा की। काम की अधिकता से इनका स्वास्थ्य भी बहुत दिनों से बिगड़ गया था, परन्तु उसकी कुछ परवाह नहीं की। १९ फरवरी सन् १९१५ ई० को दिन के एक १ बजे इनकी तबीयत बहुत बिगड़ गई। रात १० बजे राजा प्रजा और समिति की बात करते करते आपने इस असार संसार को छोड़, स्वर्गधाम की यात्रा की। देश भर में हाहाकार मच गया। राजा और प्रजा दोनों ही के शोक का पारावार न रहा। भारत के प्रत्येक नगर और संस्था ने उनकी मृत्यु पर हार्दिक शोक तथा उनके कुटुम्ब के साथ समवेदना प्रकट की।

आपके उत्तराधिकारी

मृत्यु के समय आपकी दो अविवाहिता कन्याएँ थीं, जो उस समय १६ व ११ वर्ष की आयु में मैट्रिक और बी० ए० की परीक्षा में सम्मिलित हुईं। बालिकाओं की सहायता के लिये लोगों ने लिखा पढ़ी की परन्तु आत्मत्याग की मूर्त्ति इन देवियों ने धन्यवाद-पूर्वक उसे अस्वीकार किया।

फल

जन्म लेना ऐसे ही पुरुषों का सार्थक है, अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है।

अभ्यास

१—भगिनी निवेदिता और महात्मा गोखले के चरित्रों पर एक एक स्वतन्त्र निबन्ध लिखो।

२—इनके जीवन से तुम्हें जो शिक्षाएँ मिलती हैं उनकी विस्तृत व्याख्या करो।

३—ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, राजा राममोहन राय, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवकानन्द पर एक एक निबन्ध लिखो।

दिल्ली में अशोक-स्तंभ

दिल्ली भारतवर्ष का बड़ा पुराना नगर है। उसके पुराने खँडहर और ध्वंसावशेष* अनेक राजकीय परिवर्त्तनों की याद दिलाते हैं। उसके एक एक खँडहर की एक एक ईंट इतिहास प्रेमियों को—ऐतिहासिक खोज करने वालों को—बड़े महत्त्व की चीज़ है। आज हम वहीं के एक २००० वर्ष पहले बने हुए स्तंभ का उल्लेख करते हैं। यह स्तम्भ ईसा से कई शताब्दी पहले महाराज अशोक ने बनवाया था। दिल्ली के पास फीरोज़ाबाद के कोटला दुर्ग में स्थापित है। महाराज

*पुराने मकानों के चिह्न।

अशोक ने इसकी स्थापना यहाँ नहीं की। फीरोजशाह तुगलक इसे अम्बाला जिले के शिवलिक पर्वत के पास तोपहर गाँव से लाया था। इसकी गोलाई नीचे ६३⁄४ फीट और चोटी पर ६१⁄२ फीट है। इसकी जड में एक चबूतरा है उससे स्तम्भ की ऊँचाई ३७ फीट है, ऐसा विशाल स्तम्भ इतनी दूर से—

'दिल्ली कैसे लाया गया'

यह प्रश्न सबके जी में उठता है। जियाउद्दीन बर्नी ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि फीरोजशाह ने अपनी सेना और आस-पास की प्रजा को इकट्ठा किया। बहुत सी सेमल की रुई मँगा कर उसके बडे बडे मोटे गद्दे बनवाये और बहुत सी रुई स्तम्भ पर लपेटी गई। उसकी जड को धीरे २ खोदकर उसे रुई पर गिरवा दिया और रुई अलग करादी। फिर सरपता और चमडा लपेट कर कोई १० हजार आदमियों ने एक ४२ पहिये की गाडी में रक्खा और यमुना जी पर ले गये। वहाँ से बडी बडी जुडी हुई नावों के द्वारा दिल्ली ले आये और कोटला नामी दुर्ग में उसे स्थापित किया।

स्तम्भ पर प्राचीन लेख

इस पर बौद्धों के चार अनुशासन (आज्ञाएं) ईसा से ३०० वर्ष पहिले की अंकित हैं। इसके सिवाय राजा विशालदेव चौहान के सं० १२०८ के दो और लेख हैं परन्तु इतिहासज्ञ इन लेखों को अधिक महत्त्व नहीं देते हैं इस स्तम्भ के चबूतरे से कोटला दुर्ग के आसपास के भग्न और खँडहर तथा हुमायूँ के मकबरे आदि मनोहर दृश्य दिखाई देते हैं।

अभ्यास

१—आगरा, भरतपुर और ग्वालियर के किला पर एक एक निबन्ध लिखो।
२—पाटलिपुत्र (पटना) के ऐतिहासिक खँडहरों पर एक निबन्ध लिखो।
३—ताजमहल पर एक निबन्ध लिखो।

अशोक

बौद्धों के कथनानुसार अशोक अपने पिता की मृत्यु के समय उज्जैन का शासक था। बौद्ध लेखकों का मत है कि वह युवाकाल में बड़ा निर्दयी और कठोर हृदय था। उसने राज-पद अपने अट्ठानवे भाइयों के मारने पर पाया। परन्तु ये बातें असत्य जान पड़ती है, क्योंकि अशोक के शिला लेखों से ज्ञात होता है कि अशोक के भाई और बहन उसके सम्राट् होने पर भी जीवित थे और अशोक को सदा इस बात की फिक्र रहती थी कि उनको कोई कष्ट न पहुँचे। अशोक के समय का सच्चा इतिहास शिला लेखों से ही जान सकते हैं।

राजतिलक होने के आठ साल बाद अशोक कलिंगराज से युद्ध करने गया। घोर युद्ध होने पर उसने शत्रुओं को हराया और उनका देश जीत लिया। परन्तु जो मनुष्यों का संहार उसमें हुआ था उसे देख कर अशोक को अपने किये पर बहुत संताप हुआ। अशोक ने अपने लिखे हुए 'कलिंगयुद्ध' के वर्णन में बहुत शोक प्रकट किया है। उसने फिर कभी युद्ध नहीं किया। जीवन का शेष काल अहिंसा और पवित्र आचरण सहित रहकर बिताया।

अशोक के मानसिक भावों में परिवर्त्तन होने का कारण एक बौद्ध सन्यासी का उपदेश था। इसी समय से अशोक ने बौद्धमत ग्रहण किया और फिर उस मत का पक्का अनुयायी होगया। यहाँ तक कि वह बौद्धभिक्षु का पीला कपड़ा पहिनने और सन्यासी बनने के लिये भी तैयार था।

अशोक ने अपनी राजधानी में बौद्ध भिक्षुओं की एक सभा भी कराई। सभा का उद्देश्य बौद्ध-मत के भिन्न भिन्न सम्प्रदायों को

एक करना और बौद्ध धर्म के ग्रन्थों की अशुद्धियाँ जो काल वश उनमें आगई थीं उनको दूर करना था। अशोक ने मनुष्यों को सच्चरित्र बनाने के लिये अपने राज्य भर में पत्थर पर खुदे हुए उपदेश गढवाये। इन शिला लेखों का अनुसन्धान गत सत्तर वर्ष में हुआ है और होता जाता है। ये शिला लेख मैसूर, पंजाब, बम्बई और उड़ीसा में पाये जाते हैं। उनसे विदित होता है कि भारत के दक्षिण के कोने को छोड़ कर सारे देश में अशोक का साम्राज्य था।

अशोक के एक शिला-लेख में यह उपदेश है—"माता पिता की आज्ञा मानना चाहिये, प्राणियों पर दया करना चाहिये, सच बोलना चाहिये, गुरु की सेवा करना चाहिये और कुटुम्बियों से सद्व्यवहार करना चाहिये"। प्रजा से इन उपदेशों का पालन कराने के लिये राज कर्मचारी नियत थे। अशोक ने बौद्ध मत का प्रचार कराने के लिये मिश्र, यूनान, फारस, तिब्बत और लंका आदि देशों में बौद्ध-भिक्षु भेजे थे, और उन्होंने बौद्ध-मत का खूब प्रचार किया। यहाँ तक कि कुछ समय के लिये बौद्ध-मत ही पृथ्वी का प्रधान धर्म होगया था। यह सब अशोक के ही प्रयत्नों का फल था और इसी कारण से वह प्रसिद्ध सम्राटों और धर्म-प्रचारकों में गिने जाने योग्य है।

अभ्यास

१—इस लेख पर संकेत-वाक्य बनाकर अपनी भाषा में एक निबन्ध लिखो।

२—चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य, पृथ्वीराज, बाबर, प्रताप, शिवाजी, अकबर, शाहजहाँ, पर एक एक निबन्ध लिखो।

लिखा जा चुका है कि विशेष चरित्र व विशेष घटनाओं की सूची विशेष रीति पर होती है पर सामान्यतः किसी घटना की सूची इस प्रकार होती है —

घटना

(१) कहाँ और किस समय हुई। (३) सामान्य वर्णन।

(२) कारण। (४) परिणाम।

व्याख्यात्मक निबन्ध

किसी विषय के इस प्रकार खोल कर वर्णन करने को जिस से साधारण मनुष्य भी उसके रहस्य को भली भाँति समझ सके, व्याख्या कहते हे। इस विभाग में भावात्मक विषयों तथा व्यापक नियमों की व्याख्या होती है अथवा किन्हीं सिद्धान्तों का स्पष्टी करण होता है। व्याख्यात्मक निबन्धों को प्रायः परिभाषा से प्रारम्भ करते हैं। उसकी विशेषताओं की क्रमश व्याख्या और आवश्यकतानुसार उदाहरणों से उसे पुष्ट करते हे। बहुत से विषय तो ऐसे हैं कि बिना उदाहरणों के उनकी व्याख्या पूर्ण हो ही नहीं सकती, जैसे किसी गणित वा व्याकरण के नियमों की व्याख्या वा कोई भूगोल आदि की परिभाषा।

श्रावणी पूर्णिमा और रक्षा-बन्धन

श्रावण महीने की अन्तिम तिथि, श्रावणी कहलाती है, इस दिन प्रायः श्रवण-नक्षत्र होता है।

यों तो चारों बडे त्यौहार समस्त हिन्दू जाति के हैं, परन्तु मुख्य कर श्रावणी ब्राह्मणों की, विजयादशमी क्षत्रियों की, दिवाली वैश्यों की और होली शूद्रों की कही जाती हैं।

प्राचीन समय में ऋषि लोग एक विशाल यज्ञ करते थे, उस में राजा तथा अन्य यजमान लोग भी सम्मिलित होते थे। वेद के मन्त्रों द्वारा इस यज्ञ में द्विजातिमात्र यज्ञोपवीत धारण करते थे। यज्ञ के प्रारम्भ में आशीर्वादात्मक मंत्र पढ़ कर हाथ में एक रंगीन सूत्र बाँधते थे।

धीरे धीरे ब्राह्मणों की अवनति हुई। वह एक एक पैसे के लोभ से द्वार द्वार, घर घर जाकर एक रंगीन सूत्र लोगों के हाथ में बाँधने लगे।

काल क्रम से यह लडकियों का मुख्य त्योहार हो गया। लडकियाँ अपने भाई, चाचा, भतीजे आदि सम्बन्धियों को भुजरियाँ या राखी देने लगीं। ऋषि लोग यज्ञ के स्थान में जो आदि अन्न बो देते थे और यज्ञ के अन्त में छोटे २ पौधों को सिर पर धारण करते थे, कदाचित् यह भुजरियाँ उसी का रूपान्तर हो।

मध्यम काल में इस राखी ने बडी शक्ति धारण की जिस लडकी ने किसी के हाथ में एक बार राखी बाँध दी, वह आजन्म के लिये भाई हो गया। ग्रामों में श्रावणी के दिन लडकियाँ इकट्ठी होकर गाँव के नाते से जो भाई, चाचा, ताऊ भतीजे हैं उनके राखी बाँधती हैं। सामाजिक पवित्रता की रक्षा के लिये इसने बडा काम किया है। यवन शासन-काल में कोई अत्याचारी, असमर्थ हिन्दू महिला पर अत्याचार करने का विचार करता तो वह किसी बलवान राजपूत के पास राखी भेज कर उसे अपना भाई बनाती थी और वह अपनी धर्म बहिन के सतीत्व की रक्षा में अपने प्राण तक दे देते थे। चित्तौड पर जब गुजरात के बादशाह बहादुरशाह ने चढाई करने की तैयारी की तो रानी करुणावती ने हिमायूँ बादशाह के पास राखी भेजी। हिमायूँ उन दिनों अफगानों से लडने की तैयारी कर रहा था। सब को छोड छोड इस धर्म-बहिन की रक्षा के लिये चित्तोड दौडा। किन्तु दूरी के कारण देर से पहुँचा तब तक बहादुरशाह ने चित्तोड जीत लिया। रानी २००० सहेलियां सहित अग्नि में जल मरी। हिमायूँ ने बहादुरशाह को मार भगाया और रानी के पुत्र, अपने धर्म भानजे को चित्तौड की गद्दी फिर से दी।

सारांश यह है कि इस समय बाहरी अत्याचार तो कम दिखाई देते हैं, पर अभी सामाजिक अत्याचारों की बड़ी भरमार है, जिनके कारण स्नेहलता आदि देवियों ने अपनी बहिनों की रक्षा के लिये प्राणों की गरजी भेज कर, नवयुवक भाइयों से सहायता की आशा की है। आशा है हमारे होनहार युवक प्राणपन से इन सामाजिक अत्याचारों की जड़ खोदने की चेष्टा करेंगे।

अभ्यास

१—अपनी भाषा में श्रावणी पर एक निबन्ध लिखो।

२—दशहरा, विजयादशमी, होली दीपावली, रामनवमी कृष्णाष्टमी यमद्वितीया गणेश-चतुर्थी, आदि पर एक एक निबन्ध लिखो।

मुद्रा-यन्त्र

यूरोप में सारे काम कलों से होते हैं। वह सब कलें अभी भूमिका हमारे देश में नहीं आई है। परन्तु बहुत से काम यहाँ भी कलों की सहायता से किये जाते हैं उसमें छापे की कलों का प्रचार बहुतायत से हो रहा है। हर एक जिले में एक दो अथवा उससे भी अधिक छापेखाने खुल गये हैं। मनुष्यों के बनाये हुए बहुत से शिल्प-यन्त्रों में "मुद्रा-यन्त्रों" के तुल्य उपकार करने वाला और कोई यन्त्र नहीं है।

सृष्टि और क्रमोन्नति — ईसा की नवीं शताब्दी के अंत में पहिले पहल चीन देश में छापे की कल का आविष्कार हुआ। उस समय काठ के पट्टे पर अक्षर खोद कर छापे का काम लिया गया। इस समय यूरोप में इस विषय की नई सृष्टि हुई है। सन् १८३६ और १८३९ ई० के बीच में गटेनबर्ग और कोस्टेर नामक दो आदमियों ने पृथक् पृथक् छापे की विद्या का आविष्कार किया। वह यूरोप में काठ के पट्टे पर बहुत से शब्द

खोद कर एक पृष्ठ छापने लगे। धीरे धीरे इस विद्या की बहुत उन्नति हुई।

ईसा की १५ वीं सदी में जर्मनी के एक विद्वान ने धातु के अक्षर बना कर अच्छा नाम प्राप्त किया। बहुत

भाप की सहायता से छपना — दिनों पीछे स्टनहोपेर नामक एक नामी शिल्पी ने लोह-यन्त्र बना कर ज्ञान प्रचारक-पथ को विस्तृत कर दिया। १६ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में इङ्गलेण्ड में भाप की सहायता से चलने वाला मुद्रा यन्त्र तैयार हुआ, जिस में प्रति घंटा १८०० कागज एक ओर छपने लगे। वैज्ञानिक उन्नति के साथ मुद्रा यन्त्र की भी यथेष्ट उन्नति होती गई।

बिजली से परिचालन — इस समय अनेक जगह बिजली की सहायता से छापेखाने चलते हैं, जिस से थोड़े ही समय में बहुत सा काम छप जाता है। अक्षर ढालने के काम में भी वर्णनातीति उन्नति होगई है।

अद्भुत उन्नति — वर्तमान समय में इस विद्या की उन्नति सुन कर हमारे देश के लोगों को अवश्य आश्चर्य होगा। किसी किसी यन्त्रालय में १६ पृष्ठ वाले विख्यात संवाद-पत्र की ५५००० कापी एक घंटे में छप जाती है।

उपकार — पहिले किसी विषय के प्रचार के लिये हस्त लिखित पुस्तकों से काम लिया जाता था। इसमें परिश्रम और व्यय बहुत होता था और काम कम। ५० वर्ष से अधिक समय में एक बड़ी पुस्तक कठिनता से लिखी जाती थी और सौ वर्ष में भी समाज में उसका प्रचार होना कठिन था, परन्तु इस परमोपकारीयन्त्र की सहायता से थोड़े ही दिनों में जो ज्ञान और धर्म का प्रचार हुआ, अकथनीय है। दो महीने नहीं बीतने पाते कि भूमण्डल के एक प्रान्त में छपने वाली पुस्तकें दूसरे प्रान्त में

पहुँच जाती है। कोई नया आविष्कार नया तत्त्व और नई बात किसी विद्वान ने निकाली कि शीघ्र ही दूसरे देश के पंडितों के सामने आजाती है। राज्य के सब प्रकार के समाचार शीघ्र ही प्रजा के सामने आजाते हैं, रात्रि की घटनायें रात्रि ही में मुद्रित होकर सवेरे सर्व-साधारण के हाथ में पहुँच जाती हैं। वास्तव में इस यन्त्र से संसार को बहुत लाभ पहुँचा है। भूमंडल पर ज्ञान और शिक्षा के विस्तार का प्रधान सहायक है। धर्म और नीति के प्रचार में इसी का सहारा है। मनुष्य के सुख स्वच्छन्दता का प्रधान कारण है। सच बात तो यह है कि इस कला के उपकार गिनाने में "गिरा अनयन नयन बिनु बानी" कहना पड़ता है

अभ्यास

१—मुद्रा-यन्त्र पर एक निबन्ध स्वतन्त्र रीति से लिखो।

२—'चरखा और करघा' पर निबंध लिखो।

३—मिल द्वारा सूत कातने और वस्त्र बुनने पर एक निबंध लिखो।

४—एक निबन्ध लिखो जिसमें हस्तशिल्प कौशल' और 'यन्त्र शिल्प कौशल' की तुलना हो?

५—पृथक् पृथक् व्याख्या करो —

अ—यान्त्रिक-ज्ञान (रेल, मोटर, हवाई जहाज, आदि) का देश की परिस्थिति पर प्रभाव।

ब—विज्ञान से शासन कार्य में सुविधायें।

नहर

पाश्चात्य शिक्षा और सभ्यता से हमारा सम्बन्ध होने पर नहरों की यहाँ भी बहुत से यान्त्रिक सुधार हुए हैं। इनसे राज आवश्यकता कार्यों में बड़ी उन्नति हुई है, शिक्षा आदि के प्रचार से लोगों को अपनी हीनता का पता चलता है और वे अनेक प्रकार के सुधारों के लिये प्रयत्न कर रहे हैं। भारतीय जनता का अधिकांश भाग खेती से अपना निर्वाह करता है। अब

कृषि की उन्नति के लिये भी प्रयत्न हो रहे हैं। खेती के मुख्य आधार जलाशय हैं। जिस वर्ष पानी नहीं बरसता खेती का काम बिलकुल नहीं होता। अन्न की महँगी होजाती है। लाखों आदमी भूख से तड़फ तड़फ कर मर जाते हैं। चारों ओर पानी के अभाव से करोड़ों उपयोगी पशुओं का नाश हो जाता है। इन डरों के मिटाने के लिये नहरों, तालाबों, और झीलों के बनाने की बड़ी जरूरत है।

नहरों से लाभ

अकाल का भय दूर होजाता है, खेती में बहुत कुछ उन्नति हो जाती है। अनेक प्रकार की चीजें अन्न, तरकारी, घास लकड़ी तथा फल आदि पैदा होने लगते हैं। पशुओं को जल तथा तृण का अकाल नहीं होता। नहरों के द्वारा यात्रा तथा व्यापार में बड़ी सहायता मिली है। नावों पर चढ़ा कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर माल ले जा सकते हैं और यात्रा कर सकते हैं। सरकार को बहुत सा रुपया जल कर से मिल जाता है और करोड़ों रुपये की लकड़ी तैयार होजाती है। हजारों बीघा जमीन जो बंजर पड़ी रहती है उपजाऊ हो जाती है।

नहरों का प्रचार और उनकी उन्नति

सबसे पहिले फीरोजशाह तुगलक ने हरिद्वार के पास गंगा जी से एक नहर निकाली थी। बहुत दिनों तक वह बुरी अवस्था में पड़ी रही। पीछे से अंग्रेजों ने उसे ठीक किया। इसके सिवाय सतलज आदि पंजाब की नदियों तथा गंगा, यमुना और उसकी सहायक नदियों से उत्तरी हिन्दुस्तान में बहुत सी नहरें बनाई गई हैं। इसी प्रकार दक्षिण में भी झीलों तथा नदियों से नहरें निकाली गई हैं। परन्तु जिस देश में २५ करोड़ के लगभग किसान, बसते हों, वहाँ दस-बीस नहरों से

पूरा थोडा ही पड सकता है, नदी, झील तथा बहुत बडे बडे बाँध बना कर उनसे नहरें निकालनी चाहियें।

अभ्यास

१—नहर-विभाग पर स्वतन्त्र निबन्ध लिखो।

२—रेल, तार, डाक विभाग आदि पर एक एक स्वतन्त्र निबन्ध लिखो।

३—कोई बन्ध बाँध कर सिंचाई का प्रबन्ध किस प्रकार करना चाहिये, इस पर एक लेख लिखो।

मा-बाप की आज्ञा मानना

मा बाप ने जबसे जन्म दिया, उसी दिन से हमारे लिये उन्होंने अनेक प्रकार के कष्ट उठाये। जिस समय जन्म हुआ हम उस समय सब प्रकार से असमर्थ थे। मा ने दूध पिला कर पाला पोषा और बडा किया। कुछ बडा होने पर खाना-पीना सिखलाया। मा गीले में सोई, हमें सूखे में सुलाया। हमारी बीमारी के डर से वह अपना स्वादिष्ट भोजन नहीं करती थी। और कडवी कडवी औषधियाँ पीती थी। मा बाप ने बोलना सिखाया और पढा लिखा कर चतुर किया। कैसा ही बुरा बालक हो, मा बुरा नहीं कहती। कहावत है-"पूत कपूत हो पर माता कुमाता नहीं होती"। परन्तु क्या पुत्रों को कपूत होना उचित है? जिस माता ने अनेक कष्ट उठाये उसके प्रति नमक हरामी करके क्या घोर पाप से बच सकते हैं? मा बाप की आज्ञा मानने में सन्तान कोई विशेष बात नहीं करती। मा बाप के उपकारों का बदला हम जन्म भर नहीं दे सकते।

काशी प्रयाग, जगन्नाथ, हरिद्वार मक्का आदि तीर्थों से मा बाप की आज्ञा बढ़ कर घर बैठे मा-बाप की आज्ञा पालन मानना उत्तम धर्म है। करना परमोत्कृष्ट धर्म है।

उपर्युक्त यात्रा में कष्ट उठाना पड़ता है, व्यय होता है, परन्तु मा-बाप की सेवा रूपी यात्रा में यह नहीं होता। संसार के समस्त धर्मों में मा-बाप की सेवा करना सर्वोपरि धर्म समझा गया है। अधिक से अधिक पुण्य इसी का है। श्रवण की पितृभक्ति का उदाहरण पुराणों में प्रसिद्ध है।

उसकी ही तरह मा बाप की भक्ति सबको करनी चाहिये। उसके मा बाप अन्धे थे। उसने उनकी आज्ञानुसार भारत के भिन्न भिन्न स्थानों के ६८ तीर्थों की यात्रा कामरी में उठाकर करवाई थी।

मा-बाप के इतने अधिक गुणों का न विचार कर जो मनुष्य अपने मा-बाप का सामना करता है, और उनकी वृद्धावस्था में उनको दुख देता है, उसकी कितनी अधिक मूर्खता, कितनी निर्दयता और कितनी अधिक दुष्टता है। हे प्रभु! ऐसे प्राणी को पत्थर बनाया होता तो कैसा अच्छा होता, वह कपड़े धोने के काम में आता और दूसरों के बिगाड़ने का आदर्श न बनता। शिक्षित मनुष्यों को मा बाप के प्रति विशेष भक्तिवान होना चाहिये। वय प्राप्त मनुष्यों को मा बाप की आज्ञा पालन करना चाहिये। उनका पुत्र उनके दृष्टान्त से उनका अनुकरण करे, जिससे पिछली अवस्था में वह दुःख न पावे, परन्तु धर्म तथा कर्त्तव्य पालन के विरुद्ध आज्ञा का पालन भी अच्छा नहीं।

मा-बाप की आज्ञा उल्लंघन करना पाप है।

अभ्यास

१—अपनी भाषा में निबन्ध लिखो, जिसमें वृद्ध और पूज्य सम्बन्धियों के सम्बन्ध में कैसा व्यवहार होना चाहिये—इसकी चर्चा हो।

२—मित्र तथा समाज के अन्य व्यक्तियों के साथ हमारे क्या कर्त्तव्य हैं।

३—विद्यार्थियो और शिक्षकों के साथ कैसा व्यवहार होना चाहिये ?

४—हम किस प्रकार की रहन-सहन बनावें, जिससे लोक प्रिय हो सकें।

५—सभ्यता पर एक निवन्ध लिखो जिसमें इन सङ्केत वाक्यो को चढ़ाया गया हो—

'व्युत्पत्ति और व्याख्या' 'ससार में इस गुण की आवश्यकता' 'सभ्यता की भिन्न भिन्न पहिचान' 'सभ्यता ढोंग नहीं है' 'सभ्यता भिन्न भिन्न देश व समाजो के कारण भिन्न भिन्न होती हैं' 'सभ्यता से लाभ' 'साराश और बोध'।

रामायण

१ रामायण का गौरव, २ रामायण का काम, ३ समाज का चित्र ४ उसके चरित्रो मे शिक्षा।

हिन्दू समाज में रामायण का जो स्थान है, जैसी उसकी पूजा है जैसा उसका मान है, दूसरे किसी ग्रथ का नहीं। राजा से लेकर रङ्क तक पण्डित से लेकर सामान्य अक्षराभ्यासी तक सब रामायण को पढ कर अपनी अपनी रुचि के अनुसार आनन्द प्राप्त करते है। हर जगह पण्डितों के द्वारा उसकी कथा कहलाते हैं।

महात्मा तुलसीदास के समय में धार्मिक सम्प्रदायों में बहुत मत-भेद बढ गया था। हर एक सम्प्रदाय, एक दूसरे के मान्यदेवों की घोर निन्दा करते थे। आन्तरिक कलह हिन्दू-समाज को बहुत ही कमजोर बना रहा था। तुलसीदास जी ने जनता के सामने यह आदर्श रक्खा —

सिव वैरी मम दास कहावै, सो नर मोहि सपनेहुँ नहिं भावै।"

उन्होंने सामाजिक दशा का भी अच्छा चित्र खींचा है —

"ढोल गँवार सूद्र पसु नारी, ये सब ताडन के अधिकारी।"

"नारि-स्वभाव सत्य कवि कहहिं, अवगुन आठ सदा उर रहहिं।"

"कोउ नृप होउ हमें का हानी, चेरी छॉडि न होउब रानी।"

आदि वाक्यों से उस समय की हिन्दू-समाज के भीतरी

रहस्यों का पता चलता है। भगवान् रामचन्द्र का चरित्र अवश्य अनुकरण करने योग्य है। भाई भरत और लक्ष्मण से स्वार्थत्यागी होने चाहियें। राजा दशरथ के समान प्राण और पुत्रों को देकर भी अपने वचनों का पालन करना चाहिये। कुबरी जैसी दुष्टा स्त्री किस भाँति घर में फूट डलवा कर नाश करा देती है। दुष्टों और धूर्तों की बातों में आकर कैकेई जैसी बुद्धिमान स्त्री भी बहक जाती है। सती-सीता का कैसा पवित्र चरित्र है। श्रीराम का विभीषण और सुग्रीव के साथ मित्रता करना राजनीति का अच्छा उदाहरण है।

कुमार्ग में चलने वालों तथा अपने भाइयों को सताने वालों को बालि और रावण के चरित्र से पाठ लेना चाहिये। भगवान् रामचन्द्र का भीलनी के हाथ से बेर खाना, भील के साथ घनिष्ठ मित्रता करना, रात दिन नीच ऊँच की चिन्ता में रहने वालों को अच्छी शिक्षा देता है। इसके अतिरिक्त "ईश्वर अंस जीव अविनासी" आदि वाक्यों का अभिप्राय है कि किसी जीव के साथ में अत्याचार नहीं करना चाहिये, क्योंकि ईश्वर का अंश है। यदि मनुष्य माया (अज्ञानता) के पर्दे को हटा दे तो वह ब्रह्म हो (समीपस्थ) हो सकता है। कहाँ तक गिनावें वेदान्त, भक्ति, ज्ञान, धर्म, नीति आचार व्यवहार आदि सिखाने को पर रामायण ही पर्याप्त है। जहाँ पर कम शिक्षा देने का विधान हो, एक रामायण से ही उसका बहुत कुछ काम निकल सकता है।

अभ्यास

१—इस रामायण के छोटे से सार को बढ़ाकर बड़े आकार में लिखो।

२—सीता, कौशिल्या, सुमित्रा, कैकेई, भरत, लक्ष्मण, दशरथ हनुमान पर पृथक् पृथक् निबन्ध लिखो।

३—महाभारत की कथा का सार लिखो।

४—रामायण से क्या २ शिक्षाएँ मिलती हैं, इन पर एक निबन्ध लिखो।

देशी-कारीगरी

इतिहास देखने से ज्ञात होता है कि किसी समय अपना देश विद्या और कला में पृथ्वी के और देशों से बहुत बढ़ा चढ़ा था। यहाँ से बहुत सा माल अरब तुर्किस्तान और मिश्र होता हुआ यूरोप जाता था। भाँति भाँति का सूती और रेशमी कपड़ा बनता था। आज भी सूरत का जरी का काम, नागपुर के धोती दुपट्टा और काश्मीरी शाल दुशाले यहाँ की प्राचीन कारीगरी का गौरव दिखाते हैं।

प्राचीन काल में देश की कारीगरी

अ—अपने देश के कारीगरों में अज्ञानता, आलस्य और निर्धनता होने के कारण वह नवीन सभ्य देशों के कारीगरों की बराबरी नहीं कर सके। समय की गति के साथ उन्होंने अपने विद्या, कला और हुनर में सुधार नहीं किया।

अवनति का कारण

ब—यूरोप के लोग उद्योग, साहस और चतुराई में बढ़ गये। अपनी कारीगरी में उन्होंने बड़ा सुधार किया। अनेक प्रकार के यन्त्र बनाये। दूसरे देशों से कच्चा माल मँगा कर यन्त्रों की सहायता से सस्ता और साफ माल तैयार किया। उसके सामने हाथ से बना हुआ देशी माल तेज पड़ा। उतनी सफाई भी न दिखाई दी, इससे उसकी खपत कम हो गई।

अ—कला विद्या की पुस्तकें अपनी भाषा में प्रकाशित करके सस्ते मूल्य पर बेचनी चाहियें। साथ ही साथ बड़े बड़े शहरों में आदर्श-कार्यालय खोलने चाहियें जिनमें कारीगरों को कलों से काम करना सिखाया जाय।

देश में कला-कौशल की वृद्धि

ब—यूरोप, अमरीका और जापान आदि में काम सीखने के लिये विद्यार्थी भेजे जायँ; वह लौट कर देशी कारीगरों को उसी ढग पर काम करने के लिये तैयार करें।

स—धनी लोग देश में दियासलाई, कागज, सूती व ऊनी कपड़े, होल्डर, निब, कृषि यंत्र आदि आवश्यकीय वस्तुओं के बनाने के लिये कारखाने खोलें और सहकारी समितियाँ बनावें।

यह है कि देशी कारीगरों की दशा को सुधारना जरूरी है। साराश रुई, रेशम, सन और ऊन आदि पदार्थ यहाँ से यूरोप जाते है। वहाँ से कपड़ा बनकर यहाँ आता है। अगर वह यहीं बनें तो करोड़ों आदमियों की रोजी चले और देश में धन की बढ़ती हो। अकाल का डर कम हो जाय। इस समय दैव योग से जर्मनी का माल भारत में कम आ रहा है, परन्तु अमेरिका और जापान कुल व्योपारी मैदान को हथियाने की कोशिश में हैं। हिन्दुस्तानियों को भी सचेत होने का मौका हाथ से न जाने देना चाहिये और भारत की समृद्धि के लिये तन, मन, धन, लगा देना चाहिये।

अभ्यास

१—इस लेख को पढ़कर एक स्वतंत्र लेख लिखो।

२—'स्वदेशी वस्तुओं का आदर करना चाहिये' इस बात पर २५ पंक्ति में सुन्दर भावपूर्ण रचना करो।

३—'देश में कला-कौशल की वृद्धि से अकाल का डर नहीं रहता' इस विषय पर एक छोटा सा निबन्ध लिखो।

फलों का आहार

औषधियों का सामान्य गुण यह है कि वह आँतों को ठीक, रक्खे और अजीर्ण न होने दे। यदि अजीर्ण हो जाय तो उसे दूर करे। परन्तु औषधियों की अपेक्षा फल अधिक लाभदायक हैं।

यों तो सेब, नारङ्गी, नासपाती, केला, रसभरी, शहतूत और अनार में अजीर्ण दूर करने का गुण है ही, परन्तु अञ्जीर, अंगूर, खुबानी, किशमिश और खजूर में यह गुण बहुतायत से पाया जाता है।

फलों से हृदय को लाभ होता है

हृदय का कार्य धीमा हो या उनमें गर्मी आ गई हो तो फलों का नमक और खटाई उसे लाभ पहुँचाती है। फलों की चीनी को हृदय आराम से पचा लेता है।

फल मेदे के रस को शुद्ध करते हैं

मेदे में भोजन पचाने वाला रस है, वह यदि दूषित हो जाय तो फल उसे शुद्ध कर देते हैं। फलों का हलका भोजन आठ-दस दिन में अजीर्ण दूर करता है। उबले हुए चावल और तले हुए सेब, अथवा दो भाग केले के गूदे में एक भाग मलाई मिला कर बहुत ही लाभदायक है।

नारंगी और खरबूजे का रस, गुरदे का मैल दूर करके उसे बलवान बनाता है और चित्त प्रसन्न करता है। गठिया के रोगी को भी खट्टे फल लाभदायक हैं। जिसके शरीर में मांस खाने से जो रक्त-विकार उत्पन्न हो, उसे नीबू और तरबूज का अधिक व्यवहार करना चाहिये।

जो आलस्य से जीवन निर्वाह करते हैं उनकी पाच
निर्बल हो जाती है। आँतें ठीक काम नहीं करतीं। मल
तरह बाहर नहीं निकलता। अप शरीर में

रक्त की कमी फलों के आहार से दूर होती है। केला इस रोग के लिये विशेष उपकारी है।

यदि शरीर में मोटाई अधिक हो तो ऐसे रोगी को फल अधिक देने चाहियें। नीबू और नारंगी आदि खट्टे फलों का रस पीना बहुत लाभदायक है। निर्बलता में अंगूर और पेचिस के रोग में खजूर और अंजीर अधिक लाभ पहुँचाते हैं।

जैतून का तैल कमजोरी दूर करता है। कॉडलिवर आयल के बदले इसका खाना बहुत ही उपयोगी है।

बच्चों को मांस व मिठाई न देकर फल ही देना चाहिये। फलों को वह पसन्द भी करते हैं।

जो मनुष्य भोजन के साथ नित्य फल खाता है, वह बहुत कम रोगी होता है। इन के भोजन से पाचन शक्ति बढ़ती है, बल पहुँचता है और शरीर के अन्य विकार दूर हो कर वह पुष्ट होता है।

अभ्यास

१—फलों के आहार पर एक स्वतंत्र निबन्ध लिखो।
२—'अधिक औषध सेवन से स्वास्थ्य नष्ट होता है।' २० पंक्ति में इस की व्याख्या करो।
३—'स्वास्थ्य और भोजन' इस पर सरल वाक्य लिख कर इन्हें बढ़ाओ।
४—इन वाक्यों की एक निबन्ध में व्याख्या करो—
  अ—मनुष्य-जीवन के लिये जल, वायु और भोजन आवश्यक है।
  ब—स्वास्थ्य रक्षा के लिये व्यायाम आवश्यक है।
  स—व्यायाम के प्रकार और उनसे विशेष लाभ।

विद्या

जिस के द्वारा कुछ जाना जाता है उसे विद्या कहते हैं। "विद्या ददाति विनयम् विनयात् याति पात्रताम्" विद्या ही से

मनुष्य बनता है। अन्धा जिस प्रकार दिन-रात के भेद को नहीं जान सकता है, विद्याहीन मनुष्य भी उसी प्रकार नीति और कर्त्तव्य को नहीं जान सकता। ज्ञान का अभाव ही इसका कारण है। ज्ञान किसी के साथ साथ जन्म नहीं लेता, विद्या-शिक्षा से ही ज्ञान मिलता है। अभ्यास से शिक्षा की उन्नति होती है। उन्नति से ज्ञान का क्रम-विकास होता है। क्रम विकास का परिणाम मनुष्य को विद्वान् बनाता है। विद्वान् का आदर राजा से अधिक होता है, "स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते।" राजा भी विद्वान का सम्मान करता है।

विषयों के अनुसार विद्या के कई भेद हैं—कृषि, शिल्प, नीति आचार, विज्ञान, आदि।

'पुस्तक बिना पढ़े विद्या नहीं आती है' यह बात झूठ है। बिना पुस्तक पढ़े भी मनुष्य विद्वान् हो सकता है। पुस्तक से शिक्षा में सहायता मिलती है—विद्या भाषा मयी है। बिना भाषा के हम अपने भावों को न तो दूसरों पर प्रगट कर सकते हैं न दूसरे के भावों को समझ सकते हैं। अच्छी भाषा सीखने के लिये प्रारम्भ से ही पुस्तक पढ़ने का नियम है। धैर्य, क्षमा, संयम, अहिंसा, शान्ति, पवित्रता आदि गुण विद्या से ही उत्पन्न हो सकते हैं। विद्या से चित्त की शुद्धि होती है। कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, सत्-असत्, झूठ सच का ज्ञान होता है। "भूगो
पड़ा है? आकाश के चमकते हुये तारे क्या हैं
बातें हैं, पर बिना विद्या के
"शरीर को स्वस्थ किस
पोषण कैसे करें? किस

विद्या ही सच्चा
आज यूरोप व

ही से जापान इतना ऊँचा उठ गया है। रेल, तार, हवाई जहाज, बिना तार का तार, भाँति भाँति की कलें विद्या ही से बनायी गई। विद्या ही से वह अरबों-खरबों का व्यापार कर रहे हैं। हमारी भारत भूमि भी विद्या की खानि और विद्वानों की जननी है। व्यास, वाल्मीकि, पातञ्जलि, शङ्कर, दयानन्द, विवेकानन्द, गोखले आदि ने इसी की गोद से जन्म लिया। समय के फेर से यहाँ से विद्या का सूर्य अस्त हुआ। अज्ञान का अँधेरा चारों ओर फैल गया। पर अब काल-चक्र के प्रभाव से फिर पौ फटने लगी, भारताकाश में लालिमा दिखाई देने लगी है। आशा है कि विद्या-सूर्य उदय होगा और हम उसके प्रकाश में उन्नति प्राप्त करेंगे।

अभ्यास

१—विद्यासम्बन्धी निबंध पर सूची (सकेत वाक्य) लिखो और उस सूची पर स्वतंत्र लेख लिखो।

२—नीचे लिखे विषयों पर पहले सकेत वाक्य लिखकर फिर निबन्ध पूरा करो।

अ—पुस्तकावलोकन, इ—पुस्तकालय, उ—समाचार पत्र, ऋ—इतिहास का ज्ञान, ए—भूगोल का ज्ञान, ऐ—साहित्य का ज्ञान, ओ—चित्रकारी (ड्राइंग सीखने का लाभ)।

संतोष

सतोष मन के ऊपर निर्भर है असतोषी कभी सुखी नहीं होता। सतोषी थोड़े ही में सुखी हो जाता है। मनुष्य अपने अच्छे काम करने ही पर सतोष कर सकता है। कहीं कहीं सतोष भी बुरा है।

सतोष मनुष्य के मन के ऊपर निर्भर है। धन से मनुष्यको कभी सतोष नहीं हो सकता जब तक कि वह स्वभाव से ही सतोषी न हो। असतोषी मनुष्य कभी कभी कहा करता है कि मुझे अपने पड़ोसी के बराबर धन मिल जाय तो सतोष होगा,

यदि उसे उतना धन मिल जाए तो संतोष नहीं होता और वह अधिक धन की इच्छा करने लगता है। इसका कारण उसका स्वभाव से ही असंतोषी होना है। इच्छित वस्तु के पाने पर भी मनुष्य के सन्तुष्ट न होने का कारण यह है कि उसकी इच्छाओं का कभी अन्त नहीं होता। प्रत्येक समय मनुष्य के मन में इच्छाएँ उत्पन्न हुआ करती हैं। सब से पहिले एक गरीब मनुष्य कुछ रुपयों की इच्छा करता है, जब वे उसे मिल जाते हैं तो वह और भी अधिक धन की इच्छा करने लगता है। इसी तरह से वह समय कभी नहीं आता जब उसे कोई इच्छा न रहती हो, परन्तु संतोषी मनुष्य थोड़े धन पर ही आनन्द से रहता है।

संतोषी मनुष्य चाहे जिस स्थिति में हो, आनन्द से रहता है। यदि कोई मनुष्य बहुत गरीब हो तो उसे इसी बात पर आनन्दित रहना चाहिये कि उसका स्वास्थ्य-धन, धनवान मनुष्य से अच्छा है। जो मनुष्य, मित्र हीन और कुटुम्ब हीन है, उसे शोक न करना चाहिये, वरन् अपना समय पुस्तकों के पढने तथा और ऐसे कामों में लगाना चाहिये, जिससे कि उसका तथा समाज का भला हो। जो सदा से रोगी रहते हैं, उनको अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों की प्रीति में ही प्रसन्न रहना चाहिये।

मनुष्य का सब से अधिक संतोष का वह समय है—जब उसे किसी अच्छे कार्य में सफलता प्राप्त होती है। यदि कोई मनुष्य किसी सत्कार्य्य के करने में पूरा परिश्रम करता है तो भी उसके हृदय को संतोष होता है। मनुष्य चाहे कितनी ही बुरी अवस्था में हो, परन्तु जब वह अपना कर्त्तव्य अच्छी तरह से कर लेता है तो उसकी आत्मा को पूरा आनन्द मिलता है।

संतोष तो एक अच्छी वस्तु है, परन्तु कभी कभी संतोष करना सराहनीय नहीं है। अपने जीवन-आदर्श को उच्च न बनाना और सदा अवनत-दशा में संतोष करना ठीक नहीं है।

किसी गरीब भाई को बुरी दशा में देखकर उसकी दशा सुधारने का उपाय न करना, किसी मनुष्य के किये हुए अत्याचार को सह लेना और उसे उचित बदला न देना भी अपने कर्त्तव्य से विमुख होना है।

स्वार्थ

स्वार्थी मनुष्य का चरित्र, ऐतिहासिक उदाहरण, स्वार्थी मनुष्य को सदा सुख नहीं मिलता, स्वार्थी दया पात्र नहीं है।

स्वार्थी मनुष्य सदा अपने सुख की इच्छा रखता है और दूसरे मनुष्यों के सुख की बिलकुल परवाह नहीं करता। वह सदा अपने उद्देश्य पूर्ति के प्रयत्न में लगा रहता है और चाहता है कि जितनी भर पृथ्वी पर अच्छी वस्तुएँ हैं, वे सब मुझे ही मिल जायँ। जब उसके सुख की वस्तु मिल जाती है तो वह उसका उपयोग करता है और इस बात को नहीं सोचता कि उसके साथी सुख में हैं या नहीं। यदि किसी को दुःख देने पर भी उसे कोई वस्तु मिलती है तो वह उसका विचार न करके उस वस्तु को ले लेता है। इतिहास में ऐसे कई राजाओं के उदाहरण मिलते हैं, जो प्रजा का धन लूट कर अपने स्वार्थ के लिये लगाते थे। जिनको अपने विलास के सिवाय प्रजा के सुख की बिलकुल परवाह न थी। रोम में भी ऐसे कई बादशाह हुए हैं, जो कि अपना जीवन, सुख और विलासपूर्वक बिताने के लिये ही राज्य का काम अपने हाथों में लेने का प्रयत्न करते थे। उसके लिये बड़े बड़े युद्ध करते थे, जिसमें बहुत से मनुष्यों का संहार होता था। ऐसी स्वार्थपरता केवल राजाओं में ही नहीं किन्तु साधारण मनुष्यों में भी पाई जाती है। पृथ्वी के प्राय प्रत्येक भाग में ऐसे मनुष्य हैं जो अपने सुख के लिये दूसरों के अधिकार छीन लेते हैं। वे इस

यदि उसे उतना धन मिल जाय तो सतोष नहीं होता और वह अधिक धन की इच्छा करने लगता है। इसका कारण उसका स्वभाव से ही असतोषी होना है। इच्छित वस्तु के पाने पर भी मनुष्य के सन्तुष्ट न होने का कारण यह है कि उसकी इच्छाओं का कभी अन्त नही होता। प्रत्येक समय मनुष्य के मन में इच्छाएँ उत्पन्न हुआ करती है। सब से पहिले एक गरीब मनुष्य कुछ रुपयों की इच्छा करता है, जब वे उसे मिल जाते हैं तो वह और भी अधिक धन की इच्छा करने लगता है। इसी तरह से वह समय कभी नहीं आता जब उसे कोई इच्छा न रहती हो परन्तु सतोषी मनुष्य थोड़े धन पर ही आनन्द से रहता है।

सतोषी मनुष्य चाहे जिस स्थिति में हो, आनन्द से रहता है। यदि कोई मनुष्य बहुत गरीब हो तो उसे इसी बात पर आनन्दित रहना चाहिये कि उसका स्वास्थ्य धन, धनवान मनुष्य से अच्छा है। जो मनुष्य, मित्र हीन और कुटुम्ब हीन है, उसे शोक न करना चाहिये, वरन् अपना समय पुस्तकों के पढ़ने तथा और ऐसे कामों में लगाना चाहिये, जिससे कि उसका तथा समाज का भला हो। जो सदा से रोगी रहते हैं, उनको अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों की प्रीति में ही प्रसन्न रहना चाहिये।

मनुष्य का सब से अधिक सतोष का वह समय है—जब उसे किसी अच्छे कार्य में सफलता प्राप्त होती है। यदि कोई मनुष्य किसी सत्कार्य्य के करने में पूरा परिश्रम करता है तो भी उसके हृदय को सतोष होता है। मनुष्य चाहे कितनी ही बुरी अवस्था में हो, परन्तु जब वह अपना कर्त्तव्य अच्छी तरह से कर लेता है तो उसकी आत्मा को पूरा आनन्द मिलता है।

संतोष तो एक अच्छी वस्तु है, परन्तु कभी कभी सतोष करना सराहनीय नहीं है। अपने जीवन-आदर्श को उच्च न बनाना और सदा अवनत-दशा में सतोष करना ठीक नहीं है।

किसी गरीब भाई को बुरी दशा में देखकर उसकी दशा सुधारने का उपाय न करना, किसी मनुष्य के किये हुए अत्याचार को सह लेना और उन्हें उचित बदला न देना भी अपने कर्त्तव्य से विमुख होना है।

स्वार्थ

स्वार्थी मनुष्य का चरित्र, ऐतिहासिक उदाहरण, स्वार्थी मनुष्य को सदा सुख नहीं मिलता, स्वार्थी दया पात्र नहीं है।

स्वार्थी मनुष्य सदा अपने सुख की इच्छा रखता है और दूसरे मनुष्यों के सुख की बिलकुल परवाह नहीं करता। वह सदा अपने उद्देश्य पूर्ति के प्रयत्न में लगा रहता है और चाहता है कि जितनी भर पृथ्वी पर अच्छी वस्तुएँ हैं, वे सब मुझे ही मिल जावें। जब उसके सुख की वस्तु मिल जाती है तो वह उसका उपयोग करता है और इस बात को नहीं सोचता कि उसके साथी सुख में हैं या नहीं। यदि किसी को दुःख देने पर भी उसे कोई वस्तु मिलती है तो वह उसका विचार न कर के उस वस्तु को ले लेता है। इतिहास में ऐसे कई राजाओं के उदाहरण मिलते हैं, जो प्रजा का धन लूट कर अपने स्वार्थ के लिये लगाते थे। जिनको अपने विलास के सिवाय प्रजा के सुख की बिलकुल परवाह न थी। रोम में भी ऐसे कई बादशाह हुए हैं, जो कि अपना जीवन, सुख और विलासपूर्वक बिताने के लिये ही राज्य का काम अपने हाथों में लेने का प्रयत्न करते थे। उसके लिये बड़े बड़े युद्ध करते थे, जिसमें बहुत से मनुष्यों का संहार होता था। ऐसी स्वार्थपरता केवल राजाओं में ही नहीं किन्तु साधारण मनुष्यों में भी पाई जाती है। पृथ्वी के प्राय प्रत्येक भाग में ऐसे मनुष्य हैं जो अपने सुख के लिये दूसरों के अधिकार छीन लेते हैं। वे

बात की ओर बिलकुल ध्यान नहीं देते कि उनके अधिक सुख भोग के कारण कई गरीबों को बहुत दु:ख सहना पडता है। स्वार्थी मनुष्य अपने मित्रों और बन्धुओं के हक भी छीन लेता है, इस कारण से वह सारे कुटुम्ब और मित्रों की घृणा का पात्र बन जाता है, तो भी वह अपनी स्वार्थपरता नहीं छोडता। जब सब घृणा से देखते हैं तब उसे हार्दिक शान्ति नहीं मिलती। मनुष्य को शान्ति तो तब मिलती है जब उसके समाज के मनुष्य उससे प्रसन्न रहें इसलिये अपने समाज के मनुष्यों को प्रसन्न रखना अत्यावश्यक है। सच पूछा जाय तो मनुष्य को स्वार्थ त्याग में ही सुख है। जब कोई मनुष्य अपनी समाज के लिये कोई भला काम करता है तब समाज को सुख तो होता ही है, परन्तु उसे भी सुख होता है। इसके सिवाय वह समाज की प्रीति का पात्र बन जाता है। परन्तु स्वार्थी मनुष्य को इस आनन्द से वञ्चित ही रहना पडता है। समाज की घृणा के कारण उसे जो हार्दिक वेदना होती है, उससे यह अपनी सुख-सामग्री का भी उपभोग नहीं कर सकता। यदि वही मनुष्य स्वार्थपरता छोडकर अपनी समाज का हितेच्छु बन जाय तो उसे सुख और शान्ति दोनों मिल सकते हैं।

चित्त की स्थिरता वा धीरज

क्या है? किन में होती है? उसका महत्व—१ सैनिकों को, २ व्यापारियों को। ३ सम्बन्धियों को। यह गुण अभ्यास से बढ सकता है।

हो समय कैसा ही कठिन, दृढ़ चित्त होकर मत डरो,
पड जॉय लाखों विघ्न पर, कर्त्तव्य तुम अपना करो,
कहते न तुम घर घर फिरो, बाधा हरो बाधा हरो,
निज बाहुबल से नाव लेकर, दु:ख का सागर तरो।

स्थिरचित्त वाला मनुष्य कठिनाई के आने पर विचलित नहीं होता, किन्तु धैर्य्य के साथ बात समझता है और समय

के अनुसार उचित काम करता है। जो मनुष्य किसी समाज के नेता रहते हैं, उनके चित्त का स्थिर होना एक स्वाभाविक गुण है। जब कोई मनुष्य किसी आपत्ति के आने पर विह्वल होजाता है और यह नहीं सोच सकता कि उचित कार्य क्या है, तब शान्त चित्त वाला मनुष्य, उन्हें धैर्य से उस आपत्ति का सामना करने और उसके निवारण करने का उपाय बतलाता है। उच्चपद पर स्थिर चित्त वाले मनुष्य का ही नियत करना चाहिये, क्योंकि केवल वही साहस धारण करके विपत्ति का सामना करता है। वह अपनी स्थिति का अच्छी तरह से जान कर समयानुकूल चाल चलने की अपने साथियों को सलाह देता है। ऐसा मनुष्य जल्दी बात समझ लेने वाला भी हो, जिससे कि वह मौका हाथ से न जाने दे और उचित कार्य करले। जो मनुष्य शान्त चित्त होकर समयानुकूल काम नहीं करता, वह किसी काम का नहीं।

ऐसा प्राय देखा गया है कि प्रसिद्ध पुरुष भी जब कठिन काम आजाता है तो धैर्य खो देते हैं और ऐसा काम कर बैठते हैं, जिसके कारण उनकी जग में हँसी होने लगती है। उसका कारण चित्त की स्थिरता का अभाव है। वे फिर यह नहीं सोच सकते कि क्या करना चाहिये। ऐसे मनुष्यों को उच्चपद पर कभी नियत न करना चाहिये। यदि कोई सेनापति युद्ध के समय में धैर्य छोड़ देवे तो वह सब काम बिगाड़ देता है। वह चाहे कितना ही ईमानदार और राजभक्त हो, परन्तु उस समय वह किसी काम का नहीं—सेनापति के पद के लिये अयोग्य है। व्यापारी, जो युद्ध की झूठी खबरें सुनकर और बाजार के भाव की परवाह न करके अपना भाव तेज या मंदा कर देता है—टोटे में पड़ता है। जो मनुष्य बैङ्कों की स्थिति का पूरा ज्ञान न करके रुपया खींच लेते हैं अथवा उनके हिस्से मोल ले लेते हैं, वे

भी अपनी और दूसरे की हानि करते हैं। इससे मनुष्यको कोई भी काम बिना अच्छी तरह से सोचे और उसका अच्छी तरह से ज्ञान प्राप्त किये नहीं करना चाहिये। फायदे में वे ही मनुष्य रहते है जो बिना समझे जन-समूह का अनुकरण नहीं करते, किन्तु किसी भी काम को सोच विचार के हाथ में लेते हैं।

'चित्त की स्थिरता' एक स्वाभाविक गुण है, परन्तु प्रयत्न और अभ्यास से भी मनुष्य स्थिर-चित्तवाला हो सकता है। जिस मनुष्य की मानसिक शक्तियों का विकास बुद्धि द्वारा हो गया है और जो मनुष्य बलवान और स्वस्थ शरीर वाला है वह हर कठिन समय पर बुद्धि के साथ काम करता है और मौके पर अपना काम निकालने से नहीं चूकता। परन्तु जिस मनुष्य में मानसिक और शारीरिक बल नहीं होता वह तुरन्त ही विचलित हो जाता है,वह यह नहीं सोच सकता कि क्या करना चाहिये। जिस विषय का मनुष्य को पूरा ज्ञान रहता है, उससे सम्बन्धित किसी काम में बहुत कम भूल करता है, क्योंकि वह जानता है "उस में कौनसी भूलों की अधिक सभावना है" वह उन भूलों से बचाव के उपाय भी सोच लेता है। यदि सेनापति को लडाई के विषय की सब बातें मालूम हों, तो वह शीघ्र ही समयोचित काम करेगा और कभी विचलित न होगा। इसी तरह यदि माता को बच्चों की सब बीमारियों का ज्ञान हो तो वह अपने बालक को बीमार देख कर घबडायगी नहीं, वरन् उस बीमारी के लिये उचित औषधि देने का प्रबंध करेगी।

पश्चात्ताप

क्या है ? उन्नति के लिये पश्चात्ताप की आवश्यकता । पश्चात्ताप से भविष्य में उन्नति की सभावना ।'पश्चात्ताप ही दण्ड है।

किसी कर्त्तव्य के न करने अथवा किसी अनुचित कार्य के करने के पश्चात् जो हृदय में वेदना होती है उसे पश्चात्ताप कहते हैं। आत्मोन्नति के लिये पहले पश्चात्ताप के ज्ञान की आवश्यकता है। मनुष्य को चाहिये कि प्रत्येक अनुचित काम करने पर पश्चात्ताप करे, क्योंकि पश्चात्ताप करने वाला मनुष्य दूसरी बार उस अनुचित काम को न करेगा जिसके ऊपर कि उसने पश्चात्ताप किया है। यदि चोर को चोरी करने पर लज्जा नहीं आती तो वह फिर चोरी करेगा। यदि किसी मनुष्य का झूठ बोलने पर पश्चात्ताप नहीं होता तो वह सदा झूठ ही बोला करेगा।

जो सदा अपराध करते रहते हैं, उनको भी किसी समय हार्दिक वेदना, अपने अनुचित कार्यों पर होती है। जो मनुष्य अपने किये हुये अपराधों पर पश्चात्ताप प्रकट करता है, वह मानों अपने अपराधों के लिये ईश्वर से क्षमा माँगता है। यदि पश्चात्ताप सच्चा हो तो वह फिर वैसा काम कभी नहीं करता। जो मनुष्य स्वभाव से ही अपराधी हो उसको सच्चरित्र बनाने का एक ढङ्ग यह भी है कि उसके अनुचित कार्यों पर पश्चात्ताप कराया जाय, क्योंकि पश्चात्ताप से अपने किये हुये अपराधों पर शोक प्रकट करना ही नहीं प्रत्युत आगे अपराधों का न करना भी होता है। पश्चात्ताप मनुष्य तब ही करेगा जब उसे इस बात का निश्चय हो जायगा कि जो काम उसने किया है वह हर तरह से बुरा है। यदि किये हुए काम में उसे कुछ भलाई दीखेगी तो उस पर वह पश्चात्ताप न करेगा।

पश्चात्ताप केवल बाहरी ही नहीं किन्तु हार्दिक होना चाहिये यदि कोई लड़का सजा से बचने के लिये अपने शिक्षक से कोई अपराध न करने की प्रतिज्ञा कर दे तो वह पश्चात्ताप नहीं है। पश्चात्ताप होगा तब, जब स्वयं अपना अपराध स्वीकार कर और उसके कारण दण्ड [illegible] को उद्यत हो। ऐसे

में पश्चात्ताप करने वाले को दण्ड देना उचित नहीं क्योंकि पश्चात्ताप द्वारा मनुष्य को हार्दिक-वेदना होती है, उसका दुःख दण्ड के दुःख से भी बढ़ कर होता है।

प्रसन्नता

१—प्रसन्न मनुष्य का चरित्र, २—प्रसन्नता सुख की जड़ है, ३—मनुष्य अस्वस्थ होने पर भी प्रसन्न रह सकता है, ४—प्रसन्न चित्त मनुष्य अपना काम अच्छी तरह करता है, ५—स्वास्थ्य नियम-पालक अपने चित्त को प्रसन्न रख सकता है।

प्रसन्न चित्त वाला चाहे जिस दशा में हो—उदास नहीं होता। विपत्तियाँ साधारण मनुष्य को बिलकुल उदास कर देती हैं, वे प्रसन्न चित्त वाले पर कुछ असर नहीं कर सकतीं। वही मनुष्य सुख से रह सकता है जो आपत्तियों का सामना करता है और विचलित नहीं होता। प्रसन्नता ही मनुष्य के सुख की जड़ है, क्योंकि मनुष्य बुरी अवस्था में होकर भी यदि प्रसन्न रहे तो वह सुखी है और अच्छी स्थिति के होने पर भी उदास रहे तो वह दुखी है। जो मनुष्य धनहीन होने पर भी प्रसन्नचित्त रहता है, वह एक धनिक और उदास मनुष्य से अच्छा है। सम्पत्ति से वह सुख प्राप्त नहीं हो सकता जो कि प्रसन्नता से होता है।

मनुष्य के सुख और दुःख का कारण उसका मन होता है, बाहिरी वस्तुएँ नहीं। यही कारण है कि जो मनुष्य मन से प्रसन्न है वही सुखी है। प्रसन्नचित्त वाला मनुष्य अपना काम भी अच्छी तरह से कर सकता है, क्योंकि कैसा ही काम क्यों न हो, वह उसे करने से नहीं हिचकता और उसे कष्टसाध्य देख कर निराश नहीं होता। उसे प्रत्येक कठिन काम करने में सफलता प्राप्त करने का रहस्य मालूम है और वह प्रसन्नता है। वह उसे संसार के प्रत्येक काम में सहायता देती है और सफलता प्राप्त कराती है।

जो मनुष्य दिन भर रोता हुआ काम करके और उसी पर सोचता हुआ उदास रहा आता है,उसे कभी सुख नहीं होता। प्रसन्न चित्त वाले मनुष्य को उसी काम के करने में विशेष आनन्द आता है। वह अपना काम पूरा कर लेता है तो सदा उसी को नहीं सोचता, किन्तु जो काम उसके आगे रहता है उसकी ओर ध्यान देता है और दत्तचित्त हो उसे करने लगता है। इससे उसका काम भी अच्छा होता है और उसे अधिक व्यथा भी नहीं मालूम पड़ती। इसी से कहा है कि प्रसन्नता सफलता का साधन है।

प्रसन्नता ईश्वर की देन नहीं है, वह प्रत्येक मनुष्य में हो सकती है। प्रसन्न मनुष्य को तो आनन्द सा ही है, परन्तु उसकी प्रसन्नता से उसके साथियों को भी आनन्द होता है। जिस तरह उदास मनुष्य की सूरत सब को बुरी मालूम होती है, उसी तरह प्रसन्न पुरुष का मुख सब को अच्छा मालूम होता है।

मनुष्य को अपना स्वास्थ्य अच्छा रखने के लिये भी प्रसन्नता की आवश्यकता है। जो मनुष्य प्रसन्नचित्त होते हैं वे अच्छे स्वास्थ्यवाले होते हैं और उदास मनुष्यों का स्वास्थ्य सदा बिगड़ा हुआ रहता है। यह वैद्यों का मत है कि उदास रहने से पाचन-शक्ति घट जाती है, जिसके घटने से सब प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं।

मित्रता

मित्रता से सुख बढ़ता है। विपत्ति में दुःख कम होता है। आपत्ति में धीरज बँधता है। बुरे मित्र से हानि है।

मित्रता करने से मनुष्य के सुखों की वृद्धि और दुःखों का नाश होता है। किसी मनुष्य को किसी काम में सफलता प्राप्त होती है तो उसको और उसके मित्रों को आनन्द होता

है। यदि किसी कारण से उसे दुःख होता है तो उसके मित्र सहानुभूति दिखाते हैं और धैर्य्य दिलाते हैं, जिस से उसे अधिक सुख मालूम होता है। जिस मनुष्य का मित्र नहीं है, उसे सुख के समय में पूरा आनन्द नहीं आता और दुःख के समय दुःख दूना मालूम होता है। मित्रहीन मनुष्य को धन, वैभव और मान से कोई लाभ नहीं होता, क्योंकि इनका उपभोग मनुष्य अच्छी तरह से तब ही कर सकता है जब उसके मित्र होवें। यदि मनुष्य अपनी सम्पत्ति द्वारा मित्रों का भी कुछ भला करता है तो उसे विशेष आनन्द होता है।

जब हम कोई नया काम हाथ में लेते हैं, तब हमें मित्रों की आवश्यकता होती है। मित्र हीन मनुष्य बिना सलाह के नये काम में हाथ लगाने से हिचकता है, परन्तु मित्रवाला मनुष्य अपने मित्र द्वारा उत्साहित होकर साहस से नये काम में हाथ लगाता है और उसे उसमें सफलता भी मिलती है। प्रत्येक मनुष्य अपने काम के विषय में यह भी जानना चाहता है कि वह जन समुदाय को अच्छा मालूम होगा या बुरा। यह बात वह मित्रों द्वारा ही जान सकता है, क्योंकि चापलूस झूठी तारीफ कर देते हैं और अवसर निकलने पर बड़ी निन्दा करने लगते हैं। मित्रों की सच्ची आलोचना से मनुष्य को अपनी भलाई और बुराई मालूम हो जाती है और वह अपने दुर्गुणों को दूर करने के प्रयत्न में लग जाता है।

मित्रों से सबसे अधिक लाभ आपत्ति के समय में होता है। जब मनुष्य को बहुत सी आपत्तियाँ आकर घेर लेती हैं और वह हताश हो जाता है तो आपत्ति से बचाने वाले व धैर्य्य बँधाने वाले मित्र ही हुआ करते हैं। सच्चे मित्र अपने मित्रों को बड़ी कठिनाइयों से बचा लेते हैं। मित्रहीन मनुष्य को विपत्ति के समय कोई सहारा नहीं रहता है।

मित्र बनाते समय प्रत्येक मनुष्य को मित्र बना लेना भूल है। ठगने वाले और मीठे वचन बोलने वाले बहुत मिलते हैं, परन्तु ऐसे मित्रों से मनुष्य को सदा सावधान रहना चाहिये। ऐसे मित्र बड़े स्वार्थी होते हैं और सिवाय लूटने के कोई लाभ नहीं पहुँचाते। मित्र चाहे थोड़े हों, परन्तु सच्चे होने चाहियें। किसी अपरिचित व्यक्ति को कभी एका एकी मित्र नहीं बना लेना चाहिये। सद्व्यवहार तो सब ही से होना चाहिये, परन्तु मित्र उसी का बनाओ जिसकी परीक्षा कर ली हो।

काम

१ भावार्थ, २ काम सुख की जड़ है, ३ बिना काम के उन्नति नहीं होती, ४ काम से सफलता होती है।

किसी अर्थ साधन के हेतु मानसिक अथवा शारीरिक परिश्रम को काम कहते हैं। आजकल जीवन निर्वाह के हेतु जो उद्योग किया जाता है, उसे काम कहते हैं। जब कोई काम कठिन होता है और उसमें अधिक परिश्रम की आवश्यकता होती है तो उसे मनुष्य बुरा कहने लगते हैं, परन्तु उसे बुरा नहीं कहना चाहिये। काम कोई भी हो, उसे घृणित नहीं कह सकते, यदि वह ईमानदारी के साथ किया जावे। किसी भी व्यवसाय को नीच कहना भूल है।

मनुष्य को जीवन-निर्वाह के लिये काम अवश्य ही करना चाहिये। जिन मनुष्यों के पास बहुत धन रहता है, वे प्रायः कोई काम नहीं करते। परन्तु ऐसे मनुष्यों की कोई प्रशंसा नहीं करता। प्रत्येक मनुष्य को कोई न कोई काम अवश्य करना चाहिये, जिससे उसका तथा समाज का भला हो। बाल्यावस्था से ही किसी काम के करने का निश्चय कर लेना चाहिये और उसी के अनुसार शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। जो मनुष्य अपना जीवन बिना कोई काम किये आलस्य में बिताते

हैं, उनकी मानसिक और शारीरिक अवस्था बुरी रहती है और वे अपना जीवन सुख से नहीं व्यतीत कर सकते। जो मनुष्य किसी काम में लगा रहता है और उसीके द्वारा धन कमाकर अपना निर्वाह करता है वह अपना जीवन सुख से बिताता है।

प्रत्येक मनुष्य का किसी काम के करने में विशेष आनन्द आता है। मनुष्य को वही काम करना चाहिये जो उसको अच्छा लगे, क्योंकि वह मनुष्य उसी काम के करने में अच्छी सफलता पा सकता है। नित्य के काम के सिवाय मनुष्य को चाहिये कि वह ऐसा भी कोई काम चुनले जो नित्य के काम से भिन्न प्रकार का हो। जब किसी समय मनुष्य अपना मामूली काम करते करते थक जाता है तब दूसरा काम करना बहुत अच्छा मालूम होता है। कई मनुष्य गाना बजाना इत्यादि सीख लेते हैं, जो दैनिक काम के परिश्रम की व्यथा को दूर कर उनके चित्त को प्रसन्न कर देता है।

जो मनुष्य अपना निर्वाह मानसिक परिश्रम द्वारा करते हैं, उन्हें दिन में एक बार शारीरिक परिश्रम करना बहुत सुखप्रद और लाभकारी होगा। इसी तरह जो मनुष्य सदा शारीरिक परिश्रम करते हैं, उन्हें प्रतिदिन एक या दो घंटे कुछ पढने लिखने में बिताना चाहिये। यदि मनुष्य सदा एक ही काम को करता रहता है तो उसे जीना भी कठिन मालूम होता है इससे कामों में कुछ भिन्नता होनी चाहिये।

अभ्यास

१—हर एक निबंध को पढ़कर उन पर स्वतंत्र संकेत-वाक्य लिखो।

२—हर एक सूची पर एक एक निबंध लिखो।

३—क्रोध, ईर्षा, द्वेष, ज्ञान, भक्ति, सत्य, मिथ्या, आचार, दम, छल प्रेम पर एक एक निबंध लिखो।